सुखे जीववानी कळा



आगमोद्धारक दिवगत आचार्य

श्री सागरानन्दसूरीश्वरजी महाराज

अने

व्याख्यान-वाचस्पति आचार्य

श्री विजयरामचन्द्रसूरीश्वरजी महाराज

साहेबे जणावेली

नवेंबर १९५१]



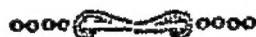
[किंमत १॥ रुपियो

प्रकाशक
शा रतनचंद शंकरलाल
१२४६ भवानी पेठ, पूना २



मुद्रक
एम् वी आगरवाल
जनता प्रि प्रेस, लि ८१७ शुक्रवार पेठ, (गाडीखाना), पूना २

— प्रास्ताविक निवेदन —



जैन समाजमां स्व. आचार्य श्री सागरानन्दसूरीश्वरजी अने आचार्य श्री विजयरामचन्द्रसूरीश्वरजी महाराज साहेबनु स्थान तेमनामां अनेक गुणो छतां प्रवचनकार तरीके अजोड कहेवामां वधु पडतु न गणाय, आ वातनी साबीती एज छे के वर्षोथी तेमना व्याख्यानो सतत प्रगट थाय छे, जन रुचिपूर्वक वंचाय छे, एटलुज नहि पण बहु लोकप्रिय बन्या छे घणा तो एमना व्याख्यानो सांभळी के वांची वांचीने व्याख्यानो आपता थया छे वक्तेनी शैली जुदी होय ते स्वाभाविक छे परंतु आ जडवादना जमानामां भव्य आत्माओ धर्मने पामो ए सद्हेतु बन्ने उपकारीओना होवाथी शैलीभेद छतां व्याख्यानो तेमनी उत्तमताना लीधे जैन, अजैनोने अत्यंत आदरपात्र बन्या छने वा ऊ आचार्य श्री विजयरामचन्द्रसूरीश्वरजीना छपाया आ जाहेर व्याख्यानो सांभळवा माटे तो कलाको पहेला हॉलमां जग्या रोकवा लेवा लोकोनी दोडधाम शरु थाय छे, सांभळवा माटे श्रोताओनी पडापडी थाय छे तेमज एमना जाहेर व्याख्यानना अंगे "संदेश" (अमदावाद) ना तंत्री श्री नंदलालभाई बोडीवाला श्रावण वद ११ ना अंकमां लखे छे के —

'अमे अमारा वाचकोने याद आपवा मागीए छीए के, मुनिश्रीना व्याख्यानो तेमज लेखो (के ज छपाई रह्या छे) क्रांतिकारी अने आधुनिक विचारश्रेणी धरावता होई मानव हृदयना तार झणझणावी मूके तेवा होय छे, पछी ते मानवी गमे ते धर्मनो होय'

'गुजरात समाचार' (अमदावाद) ना तंत्रीश्री पण जणावे छे के—
'आजे पण रावेता मुजब प्रेमाभाई हॉल खीचोखीच भराई गयो हतो, ८॥

वागे प्रवचन हतु, परतु आठ वाग्यामा तो हॉल चिकार भराइ गयो हतो, अने सवा आठ वागता पहेला हॉलना चोरेना दरवाजा बध करवा पड्या हता" ता २७-८-५१

तमने हवे आ देशना छपायेला व्याख्यानोमाय अनेक स्थळे पहेला छपायली वातो ज छपाय छे, छता व्याख्यानना पुस्तको तरत वेचाइ जाय छे ए आगमना अखड अभ्यासी आगमवाचनादाताकी अजोड विद्वत्ता, प्रखर तर्कशक्ति, अने देशनामानी उपमा के दृष्टांतोनी विपुलताने आभारी छे

बन्ने प्रतिभासम्पन्न अने श्रोताओ उपर सचोट छाप पाडी शके एवा समर्थ विद्वान् अनेक मुनिपुगवोना अधिपति, अने आचार्यपदने शोभावे एवा, एटलु ज नहीं तो शासननी प्रभावना करनारा गणाय बन्नेमा वैशिष्ट्य भिन्न भिन्न छे तेनु पृथक् दिग्दर्शन न करता सामान्यतया अने सयुक्त उल्लेख करवो योग्य मान्यो छे, जेथी परस्पर वैमनस्य धरावनारा बन्नेना शिष्यो अने सेंकडो भक्तोने पोताना पूज्य मनाता आचार्यनु आ लेखथी अपमान थयानु मानी लेवानो अवकाश न रहे बन्ने प्रत्ये मारो परमपूज्यभाव छे, कोइने ओछा मनाववानो इरादो नथी माटे कोइए दूधमाथी पोरा काढवानो व्यर्थ अने स्वपरहितघातक उद्यम न करवो एवी मारी नम्र विनति छे बन्ने दर्शाना चारोना व्याख्यानो जिनेश्वरोना वचनोने बाधक नहि ज होय, छता आ व्याख्यानोमा कइक असगत विपरीत के अशुद्ध जणाय तो ते दोष बन्ने परमोपकारीओनो नहि, पण व्याख्यानो लखी लेनाराओ के अमारो जाणवो तेमज तेमना छापता कइ भूल रही होय ते माटे अमे क्षमा मागीए छीए.

आ व्याख्यानो गुणसागरजी तरफथी मळेली नोंधमाथी तारवी लई छपाव्या छे जाहेर व्याख्यानो अमदावादना 'सदेश' अने 'गुजरात समाचार'ना तत्रीना सौजन्यथी तेमना अको उपरथी छाप्या छे माटे तेमनो आभार मानु छु

आ बधा व्याख्यानो अहिं सूचनरूपे एटले बहुज संक्षेपमां छाप्या छे तेथी घणे ठेकाणे एकज विषय एकधारो नहीं जणाय, पण महत्वना स्थूल विषयोनी टुंकमां छूटक नोंध जणाशे, माटे वाचकोए तेनो उन्टो अर्थ घटाववानो प्रयत्न न करवो, खंडन के विपरीत अर्थ धारिए तो आगमना पण दरेक वाक्यनो करी शकाय छे

आ व्याख्यानो छपाववा विगेरे ज्ञानकार्य माटे शेठ ताराचंद रामनाथनी पेढीना मालिक श्री हस्तराजजी ताराचंदजीए रु ४२५ आपी पोतानी उदारतानो परिचय आप्यो छे ते माटे तेमने धन्यवाद आपवा पूर्वक तेमनो आभार मानु छु

आ अने हवे पछी प्रसिद्ध थनारा आचारांग, सूत्रकृतांग, षोडशकना व्याख्यानो अने लेखोना पुस्तकोनी बधी ऊपज ज्ञानखातामां खचाराना छे, तेनो बधो वहीवट पूना (भवानी पेठ) वाळा शेठ मोदानी रामनाथजी अने शेठ जेताजी साकळाजी करे छे अने तेनो विगतवार हिसाब पण तेओ बहार पाडशे

—प्रकाशक

सं २००८ कारतक सुद ८ मंगळवार

—०—

वागे प्रवचन हतु, परतु आठ वाग्यामा ता हॉल चिकार भराइ गयो हतो, अने साडा आठ वागना पहेला हॉलना नीचेना दरवाजा बध करवा पड्या हता" ता २७-८-५१

तेमज ए आ देशना उपायेज व्याख्यानोमाय अनेक स्थळे पहेला छपायेली वातो ज छपाय छे, छता व्याख्यानना पुस्तको तरत वेचाइ जाय छे ए आगमना अखड अभ्यासी आगमवाचनादातानी अजोड विद्वत्ता, प्रखर वक्तृशक्ति, अने देशनामानी उपमा क दृष्टातोनी विपुलताने आभारी छे

बन्ने प्रतिभासम्पन्न अने श्रोताओ उपर सचोट छाप पाडी शके एवा समर्थ विद्वान् अने मुनिपुगवोना अधिपति, अने आचार्यपदने शोभावे एवा, एटलु ज नहीं ता शासननी प्रभावना करनारा गणाय बन्नेमा वैशिष्ट्य भिन्न भिन्न छे तेनु पृथक् दिग्दर्शन न करता सामान्यतया अत्रे सयुक्त उल्लेख करवो योग्य मान्या छे जेथी परस्पर वैमनस्य धरावनारा बन्नेना शिष्यो अने सेंकडो भक्तोने पोताना पूज्य मनाता आचार्यनु आ लेखथी अपमान थयानु मानी लेवानो अवकाश न रहे बन्ने प्रत्ये मारो परमपूज्यभाव छे, कोईने ओछा मनावानो इरादो नथी माटे कोइए दूधमाथी पोरा काढवानो व्यर्थ अने स्वपरहितघातक उद्यम न करवो एवी मारी नम्र विनति छे बन्ने देशना कारोना व्याख्यानो जिनेश्वरोना वचनोने बाधक नहि ज होय, छता आ व्याख्यानोमा कइक असगत विपरीत के अशुद्ध जणाय तो ते दोष बन्ने परमोपकारीओनो नहि, पण व्याख्यानो लखी लेनाराओ के अमारो जाणवो तेनी तेमज छापता कइ भूलो रही होय ते माटे अमे क्षमा मागीए छीए

आ व्याख्यानो गुणसागरजी तरफथी मळेली नोंधमाथी तारवी लई छपाव्या छे जाहेर व्याख्यानो अमदावादना 'सदेश' अने 'गुजरात समाचार'ना तत्रीना सौजन्यथी तेमना अको उपरथी छाप्या छे माटे तेमनो आभार मानु छु

आ बधा व्याख्यानो अहिं सूचनरूपे एटले बहुज संक्षेपमा छाप्या छे तेथी घणे ठेकाण एकज विषय एकधारो नहीं जणाय, पण महत्त्वना स्थूल विषयोनी टुकमा टूटक नोंध जणाशे, माटे वाचकोए तेनो उन्धो अर्थ करवानो प्रयत्न न करवो, च्हडन के विपरीत अर्थ धारिए तो आगमना पण दरेक वाक्यनो करी शकाय छे

आ व्याख्यानो छपाववा विगेरे ज्ञानकार्य माटे शेठ ताराचद गमना जीनी पत्नीना मालिक श्री हसराजजी ताराचदनीए रु ४२५ आपी पोतानी उदारतानो परिचय आप्यो छे ते माटे तेमने धन्यवाद आपवा पूर्वक तेमनो आभार मानु छु

आ अने हवे पछी प्रसिद्ध थनारा आचाराग, सूत्रगडाग, षोडशकना व्याख्यानो अने लेखोना पुस्तकोनी बधी ऊपज ज्ञानखातामा खर्चावानी छे, तेनो बधो वहीवट पूना (भवानी पेठ) वाळा शेठ मोठाजी रुगनाथजी अने शेठ जेताजी सांकळाजी करे छे अने तेनो विगतवार हिसाब पण तेओ बहार पाडशे

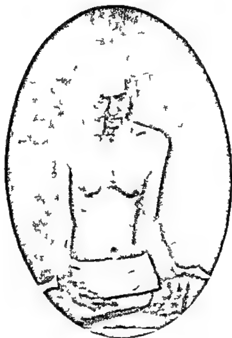
—प्रकाशक

स २००८ कारतक शुद ८ मगळवार

—०—

अनुक्रमणिका





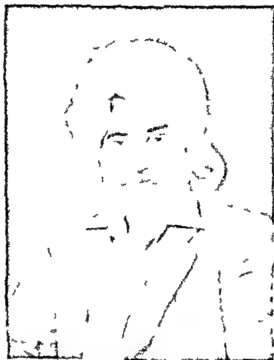
शासनसौधस्तम्भ आगमोद्धारक परमपूज्य स्वर्गत
आचार्यदेव श्री सागरानन्दसूरीश्वरजी महाराज साहेब

जन्म सं. १९३१ स्वर्गारोहण सं. २००६
आषाढ वद १० सुरत.
कपडवंज



शासनप्रभावक व्याख्यानवाचस्पति परमपूज्यपाद
आचार्यदेव श्री विजयरामचन्द्रसूरीश्वरजी महाराज साहेब

ज्ञानखातामा रु ४२९ आपनार



ॐ दानवीर श्रीमान शेठ हंसराजजी ॐ

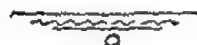
(शेठ नारायणजी गमनाजीनी पेढीना मालिक)

जामगना पथारी, रविवार पेठ, पूना २

ॐ अर्हम्

आगमोद्धारक स्वर्गस्थ आचार्यश्री सागरानन्दसूरीश्वरजी महाराज साहेबना

व्याख्यानो



शास्त्रकार महाराजा भव्य जीवोना उपकार अर्थे धर्मोपदेश देता थका फरमावे छे के जगतना जीवमात्रने सुख वहालु अने दुःख अळखामणु छे इतरोमाय आत्मवत् सर्वभूतेषु कह्यु तेनो " हु धरायो माटे कोइ भूख्योज नथी, हु रोगी के निरोगी माटे बधा तेवा, हु धनाढ्य माटे बधा धनाढ्य, हु रक माटे बधा रक " आम अनर्थ न थाय माटे श्री हेमचद्राचार्य महाराजे ए अर्थमा उमेर्यु के " सुखदु खे प्रियाप्रिये "

न बोलावे तोय तारशो डुबताने तारेज-

मारु चोरायु एम जीव फरियाद करतो नथी असील न कहे अने वकील बोले ते शु काम लागे ? कोर्ट पण प्रतिज्ञापूर्वक असील कहे ताज कामळे जीव तो पोतानु केवळज्ञानादिक धन हरायु, अमुके रखडाव्यो, कर्मराजाने फसाव्यो वगेरे कहेतो नथी छता " तमे रखडो छो, तमारु केवळज्ञानादिक धन हरायु छे अथवा जीवो अनादिकाळथी रखडे छे वगेरे शास्त्रकारो शा माटे कहे छ ? चारने पोतानी स्थितिनु के दशानु भान नथी, मारे चालेज शानो ? छता पाणीमा रहेलो माणस बोलावे के न बोलावे तोय काढे रहेला "सज्जनोनी

अनिवार्य फरज तेने बचाववानी छे एम दुनिया माने छे ने ? के डूबतो बूम मारे तोज बचाववानु मान्यु छे ? मने कोइ बचावे एवोय विचार तेने आव्यो होय के न आव्यो होय, पोते जीवतो छे के मर्यो छे अनुय तेने भान नथी, एराने गमे ते प्रयत्ने पण बचावबोज जोइए उलटु "मैं अमुकने डूबतो देख्यो, छता पण तेने काइ बूम पाडी नही, बचववानी मदद मागी नहि माटे मैं काढयो नहि" एवु कहेनारने तमे केवो गणो ? तेम तमाम जीवो ससाररूपी दरियामा डूबी रह्या छे, अने ते विचाराओने पोतानी दशानु लेशमात्र भान नथा, तेओ पोताने तारवानु कहे के न कहे तो पण तेने तारवा तारकोए कटिबद्ध थवुज जोइए, जेओ "आत्मवत्सर्वभूतेषु" नी भावनाथी ए रीते बचाववानो प्रयत्न न करे तओने शास्त्रकारो समकिती गणवानी ना कहे छे तारकोने पहेला कदी न करेली खरेखरी अपूर्व व्यूह रचना करी, माटे तेओना कायमी पराजित आत्मानो विजय थयो, कर्मनो सेवक हतो ते स्वामी थयो मोह अने जीव बने समरागणमा सामसामे लड्या तेमा ससार छे त्या सुधी कदी जीव ने कदी कर्म बलवान् छे

प्रश्न—बधाय मोक्षे जाय तो ?

समाधान—टाकणी उपरना पाणीथी दरियो खाली थवानी कल्पनाय न अने के घडाथी पाणी भरताय जे खाली न थाय, ते आम खाली थाय ? तेमज अनत निगोदमाथी एक निगोद, अन तनोय अनतमो भाग न हजी मोक्षे गयो छे टाकणीना छेडानु पाणी अने दरिया बच्चेनु आतरु बधारे पे आ ? एक दरदान व्याधि थयो छे के गरम आपो तो लोही पडे, ठडु आपो तो वायु थाय, तेम मिथ्यात्वने शास्त्रनु एकात हितकर वचन ससार खाली थवानी बीक उपजावे छे पण कल्पना खातर मानो के ससार खाली थयो तो कइ बाधो ? चारे गतिमाना तमाम जीवो मोक्ष जाय अने ससार खाली खोखु रहे तो तेनी तेन अडचण शी ? बधा मोक्षे जाय तो जेलना पडी जवानो डर छे ? बधामा पोतानो समावेश करवामा कइ वाधो छे ? उलटु आखु जगत् मोक्षे जाय तो आनदनो विषय छे तो पछी ससार खाली थइ जशे एम केम बोलाय छे ?

એવુ કાંઈક તાકતા રહેવુ એજ એમનુ કામ સમાનના ગીધો માસની પેશીઓ જોવા માટે ઉંચે આકાશમાં ઉડે ત્યારે એવા ગીધડાઓ દેરાસર ઉપાશ્રયમાં ચકરો મારવામાં ચૂકતા નથી "કાંઈ કર્મનો ફૂટેલો મળે" એજ તેમની દ્દષ્ટિ હોય છે, જેમ માસની પેશી ભાળે કે તરત ગીધડુ નીચે ઉતરે અને ચાંચ મારે

આ તો "વિષ" અને તેને વધારાય પછી કંઈ બાકી રહે?

પુદ્ગલાનંદ (વિષયો) માટેજ સંસારમાં રમી રહેલાઓ, રાચીમાચી રહેલાઓ, પાપ-કૃત્ય કરનારાઓ પરોપકારનો પડદો આગળ ધરીને કહે છે કે "અમે તો સાધુઓ માટે સંસારમાં રહ્યા છિએ, અમે હોઈએ તે તમને વસ્ત્ર પાત્રાદિ મળે" આનુ જ નામ વિષને બધારવુ "વિષ" અને તેને વધારાય પછી કંઈ બાકી રહે? એવાઓ જાણી યાદ રાખે કે ચાલ્લાવાળા વિના બીજેથી ગોચરી ન લેવાનો અમારે પ્રતિબંધ નથી પોતાની પાલ્ખી ઉપાડવા બીજાની નોકર અવસ્થા કાયમ ઈચ્છે એના જેવો કમબખ્ત દોઢ કોણ છે! એવી રીતે "શ્રાવકો હશે તો દાન દશે માટે સાધુ ન થાય અને શ્રાવક રહે તો ઠીક" એમ માનનારાઓને કેવા ગણવા?

સમકિતી ચંદન જેવા, મિથ્યાત્વી વિષ જેવા—

ચંદન નજીકવાળાને સુગંધ આપે, દૂર રહેલાને તો આપે કે ન પણ આપે તેમ સમકિતી ભલે બધાને તારવાનો પ્રયત્ન ન કરે પણ ભાવના તો એવીજ હોય, અને પોતાના કુટુંબને તાર્યા વિના તેને ચેન ન પડે વૃત્તિ જગતના જીવોને તારવાની પણ પ્રવૃત્તિ તો કુટુંબને તારવાની પોતાના કુટુંબમાં સમ્યક્ત્વ ફેલાવે તેઓ ચંદન જેવા, કસ્તુરી જેવા, અને મિથ્યાત્વ ફેલાવે તે અગ્નિ જેવા, વિષ જેવા જાણવા ડૂબતાને કાંઠે ઉભેલો તારે એમાજ એની શોભા, એજ કર્તવ્ય ત્યાં એમ ન કહેવાય કે 'ડૂબતાએ મને શ્યા મદદ કરવાનુ કે બચાવવાનુ કહ્યુ છે? પાંચ સાત વરસનો છોકરો ડુબતો હોય ત્યારે એ ન

सुंदर, पण भाईपणानो "चारो" थई जाय एवा स्वमा न होय तोज-भाईचारो कोने न गमे ? मैत्री भावना तो गुणदर्शनमा मुख्य छे समकितीनी मुख्य भावना "मा कार्षीत्कोऽपि पापानि" आ प्रथम पगथियु, अने दुष्कर्मना योगे के दुर्जनना ससर्गथी कदी कोईए पाप करी लीधु होय तो पण ते दु खी न थाओ आ बीजु पगथियु

"कायटियाना" चोपडामा मरेलानी अने गोरना चोपडामा जन्मेलानी नोंध होय—

"गुनेगार सजापात्र" आ मान्यताथी समकित छेटे छे, मित्रता दूर छे तमारा पेटमा दुखावो उपड्यो होय, वाद आवती होय, शरीरमा सणका मारता होय, अने तमे राडराव करता हो ते वखते बाजुमा बेठेलो मनुष्य जो एम कहे के 'ठीक थाय छे, हजी वधारे थवु जोइये' तो जेने तमे सज्जन गणो खरा ? "लोको तपश्चर्याथी पाप तोडो, दु खी तो न ज थाओ, अने मुक्ति पामो" आ अंतिम ध्येयरूप भावना कायटिया जेवा छिद्रान्वेषी भिलाषीओने रुचे नहि पण खूचे छे कायटियाना चोपडामा मरेलानी नोंध, तेम भवाभिनंदीओना हैयामा पतितोनी गणत्री, स्थित के स्थिरनी नहि जन्मेलानी नोंध तो जोषी के गोरने त्या जन्माक्षर त्या मळे सारा घरनो मनुष्य मरे तो वधारे सारो थवाथी कायटियाने वधु आनद कोई धर्मथी पतित न थाय तो आवा कायटियाओ लगभग हाथ दईने उदास रहेनाराओ जेवा उदासी होय, अने कोई पापपश्चात् धर्मथी पतित थाय तो आवा कायटियाने त्या बाजा वागे, कायटियाओना मनमा गाममा कोण मादु, कोने ताव, कोनी घडी ने घडी गणाय छ, वध, आव रडण ऊठे त्याथी ऊठे त्या सुधी एना अध्यवसाय एज धर्मस्थानमा कायटिया जेवा जीवो चारे तरफ कागडानी नजरे जोया करे आवोना शोभा उपरनी परवा नहि पण खूणे के क्याय छिद्र छे ? साधु के धर्मीना उपर गोतवु के छिद्र क्याय

जेवु काइक ताकता रहेवु एज एमनु काम स्थानकना गाथा माथनी पेढीओनो जोवा माटे ऊंचे आकाशमां ऊडे ज्यारे एवा गीधडाओ देरासर उपाश्रयमां चकरो मारवामां चूकता नथी "कोइ कमनो पूरेलो मळे" एज तेमनी दृष्टि होय छे, जेम माछनी पेढी भाळे के तरत गीधडु नीचे उतरे अने चाच मारे

आ ता "विष" अने तेने वधाराय पछी कइ बाकी रहे ?

पुद्गलानंद (विषयो) माटेन उधारमा रमी रहेलाओ, रावीमाजी रहे लाओ, पारन्चृप करनाराओ परा'कारनो पडदो आगळ धरीने कहे छे के "अमे तो साधुओ माटे उधारमा रह्या छिए, अने होइन ने तमने वस्त्र पात्रादि मळे" आनु ज नाम विपने वधारवु "विष" अने तेने वधाराय पछी कइ बाकी रहे ! एवाओ जाणी वाद राखे पे चालाराउा विना बीजेथी गोचरी न लेवानो अमारे प्रतिबंध नथी पोतानी खानगी उपाश्रा बीजानी नोकर अवस्था कायम इच्छ जेना जेवो कमनस्त्र दोड फोग छे । एवी रीते "धारको हश तो दान दणे माटे साधु न थाय अने श्रावक रहे तो टीक" अेम माननाराओने केवा गणवा ?

समकिती चदन जेवा, मिथ्यात्वी विष जेवा—

चदन नजीकवाळाने सुगध आपे, दूर रहेलाने तो आपे के न पण आपे तेम समकिती भळे बधाने तारवानो प्रयत्न न करे पण भावना तो पवीत्र होय, अने पोताना कुटुबने ताया विना तेने चेन नज पडे वृत्ति जगतना जीवोने तारवानी पण प्रवृत्ति तो कुटुबने तारवानी पोताना कुटुबमां सम्य क्त्व फेलावे तेओ चदन जेवा, कस्तुरी जेवा, अने मिथ्यात्व फेलावे ते अग्नि जेवा, विष जेवा जाणवा डूबताने काढे उभेलो तारे एनाज एनी शोभा, एज कर्तव्य त्या एम न कहेवाय के 'डूबताओ मने क्यां मदद करवानु के बचाववानु कह्यु छे ? पाच सात वरसनो छोकरो डुबतो होय

कहे तोय पोलीस तो एने मचावेज गुनेगारने पकडे अने पोते फरियादी बनेने ! तेम मिथ्यात्व (अज्ञान के विपरीत ज्ञान) रूपी मदिरामा चकचूर बनेलाओ पोतानी व्यवस्था हजु न करी शके तेथी शु जैन दर्शनना पोलीसो पोतानी फरज न बजावे ! खूननां केसमा जेनु खून थयु ते मरी जवाथी फरियादी न थइ शके ने ! अेनी फरियाद पोलीसज करे ने ! जेनु खून थाय छे तेने अेम कहेवाय के " ए तो आयुष्यना क्षये मर्यो, द्रव्यप्राण रहित थयो " ज्यारे मिथ्यात्वी तो भावप्राणथी रहित एटले जैन दर्शनरुपी पोलीसरूपी छमक्तिी फरियादी बनेज जेनु नुकसान थइ रह्यु छे एने तो ए दयानु भानज नथी,एटले ए तो फरियाद करे एम छेज क्यां? एना सबधमा तो बीजा ज्ञाण कारेज फरियादी बनवानु रह्यु ने! एमने पण बीजाओ कहे के "भाइओ तमे लुटाइ रह्या छो, धाळे दिवसे तमारु साचु धन तमारी उघाडी आंखे हराय अने हणाय छे, तेथी अनादिथी रखडी रह्या छो, माटे जरा समजो, अने जातनो बचाव करो !" सज्जननी फरज छे के अज्ञानीने तेनी दयानु भान करावे धीरे धीरे देवु कापनार देवादार सारो, पण थोडु थोडु लेणु वसुल करी मूडी खतम करनार लेणदार तो खराब

भलु थजो भवितव्यतानु---

अज्ञानथी ६९ कोडाकोडी सागरोपम अने ज्ञानथी १ कोडाकोडी सागरोपम स्थिति तूटे अज्ञान के अशक्तिना लीधे पाप न करवाथी एकेंद्रिय के विकलेंद्रियने नरक नहि "मोक्ष छे, मेळववो छे" ए विचार, अने कर्मनु, जीवनु के मोक्षनु स्वरूप ६९ को मा नथी जणायु माटे यथाप्रवृत्ति एटले अज्ञानप्रवृत्ति, अने यथाप्रवृत्तिकरणने अनाभोगकरण के अनुपयोग मानिने छिने ग्रथिभेद एज सम्यक्त्व, दुनियादारीनी आखी बाजीनो पलटो निःसमरणान अने आराध्य देव, गुरु, धर्म दुनिया वेठ लागे तोज सम्यक्त्व अज्ञानता एकवार नमे " छोडु छता न छोडु " ए कदाग्रह न नमे ज्ञान मेळववानी जरुर छे, पण तेनो अर्थ ए नथी के ज्ञान वगर धर्म,

क्रियादि पुण्यनु काम न करवु मावस्तन (चारित्र)थी अतर्मुहूर्तमां मोक्ष छे मोक्ष पामवो एकवार सहलो, पण अव्यवहारराशिमाथी व्यवहारराशिमा आववु मुश्केल मनुष्यपणु मळ्या पछी तो मुक्तिनी साधन सामग्री मेळववी स्वाधीन होवाथी सहेलु व्यवहारराशिमाथी एक जीव मुक्ते जाय त्यारे अव्यवहारराशिमाथी व्यवहारराशिमा एक जाव आव "सिज्झति॰" (विशेषणवता गा ७०) बाकी बधी गतिआमा जघन्य अने उत्कृष्ट पदो छे, पण अव्यवहारराशिने अगे तवा पदो नथी जेम सवायथिइनु आयु जघन्यके उत्कृष्ट नथी, पण एकज ३३ सागरोपमनु होय छे सूक्ष्म बादर कर्मवर्गणाआ नियमित हाराथी अने एकेंद्रियादि सतन तेनु ग्रहण करवानु होवाथी जाव वधु ओछा आवे तो वर्गणा ग्रहण करवानु नियमित न ज बने वर्गणाना हिसाबे पण मानवु पडशे के व्यवहारराशिथी न जीव मोक्षे गयो तेनी वर्गणाओ छूटी पडी, तेटलाज ग्रहण करनारा जीवो अव्यवहार राशिमाथी व्यवहारराशिमा आवी शके ते पाछा अव्यवहारमा जाय तोय ते निगोदनो न गणाय अहिं अव्यवहारराशिमा कर्मनी निर्जरा सिवाय अवायन नहि भवितव्यता पण ते आवना कर्मबधोदयोदीरणादिने अनुसरीनेज तेने ऊचे लावे कर्मद्वारा भवितव्यता ए काम करे छे भवितव्यताने साधन कर्म अव्यवहारराशिमा घणु तोडे अने थोडु बाधे तोज अहिं आव कोइ जीवो बाधती वखते थाडा उत्साहवाळा अने छोडवानी वखते घणा उत्साहवाळा होय ते जीवो अव्यवहारराशिमाथी बहार आवी शके नारकीना जीवोने पण एमज बने जेटले मिथ्यादृष्टि जीवो घणु बाधे अने थोडु छोडे ए प्रायिक वचन छे, सर्वथा नथी कारण ऊचे आवनारा मिथ्यात्वी अपवाद रूप छे, नहि तो आपणे अनादिना मिथ्यात्वी मटी समकिती थया ज केम ? नारकीना मिथ्यात्वी जीवो तो ते गतिमाथी नीकळतज नहि, अने आपणे पण धर्मज न पामत भवितव्यता अल्प बध अने बहु निर्जरा करावी बहार लावे, यावत् मनुष्यभव, उत्तम कुळ, आर्य देश, देव, गुरु, धर्मना सयोगो मळेवी आपे छे

आपणे गरासिया के राजा ?

धर्मरूपी घोडाने जरुर क्षायिक भाव सुधी (धरना धारणा सुधी), नहि के केवलज्ञान पछी पदन, पूजन आदि करवाना के तपस्या करवानी होय. निवाणकाळे तीर्थंकरो तप करे छे ते मत्तोच्छेद माटे एटलेज गौतमने भगवाने कह्यु के "केवळीनी अशातना न कर !" १५०० तापसोने पारणु करता अने ५०० ने अरिहंतनु समोसरण जोइ केवलज्ञान थयु हतु धर्म घोडो जेटलो तेज तडलाज जल्दी धरे (मोक्षे) पहोंचाय, एटलुज नहि तो अशुभभाव वाघ आदिथी रक्षा करे आ दान, शीयल, तप, भाव ए चारपगो घोडो जो ठट्टु मळ ता आफतमा लावे " बाप ए आळसु जानवर छे "ज्यां देव, मानस जइ जइने क्या जवानो छे !" एम आळसु बनी सुखशिर्मा पडयो रहेनारा छे एटलामा घोडो तज हाय तान बचाव, नहि तो वाघना मोंढामा ! वाघ एक हाथे पकडे छे, पछी त जोता नथी के मैं आ मनुष्य, पशु, पक्षीने के कोने पकडयो छे तेनो नियम हाय के जे आवे ते स्वाहा वाघने सारासारनो विचार नहि, तेम कमने पण "आ विचारो दु खी के रोगी छे अने वधु शा माटे रोगी के गरीब बनावु !" ए विचार नहि, वाघनी जेम कम पण कवडी नाखे छ जे जीवो १ थी ५ इंद्रियो सुधीना पोताना खप्परमा आवे छे तेने एके झपाटे चक्रे चढावी दे छे छापराना नळियाने विचारणा नथी के मारा नीचे कोण आवे छे, तेम कर्मनेय कशो विचार नथी गरासिआओ बापनी आबरु उपर दूबी मरनारा, बापे घोडो राख्यो होय तो पोते पण राखे पण ते घोडो हाय मरवानी आळसे जीवतो कोई भाईचंद, दोस्तदार पूछे के "दरबार ! राखो राखीने ते आवो घोडो शु राख्यो ! एकाद तेजी घोडो लो !" तो दरबार कहे, "बापु, तेनी शी के अतजी होय तेमा शु थयु ! आ घोडु राख्यु छे एटले गाडी घोडावाळा तो कहेवाईए ने !" तमे आ दरबार जेवा गाडी घोडा-वाला न बनो ! खाली धर्मी गणावया माटे धर्मरूपी पांगळो घोडो राखयो

तो ते घोडो तमने अरण्य (महा अटवी) माथी केवी रीते सरखी शकशे ? तेनामा एवी ताकद नथी धर्मने घोडा तरीके आपणे मानता होइए तो ए अटलो तेज होवो जोइए के जेम घोडो आपणने बीजे गाम पहोंचाडी शके, तम ते पण क्षायिक भाव सराळ जल्दी पहोंचाडी दे काछियो टट्टू लेवा जाय ते पहेला पोतानी कोथळी सामेन जोइ विचारे छे के "मारा कादा, बटाटानी किंमत ऊपजी ते किंमतना प्रमाणमा टट्टू लेवो छे," पण राजामहाराजाने घाडो लेवो होय तो तेनी जात तपासी तेनी किंमत ठरावे आपणे केवा टट्टूना खरीदनार छिए ते जुओ ! आपणे मतो सरानो विचार करिए, तेमा छोधी पहेला ए वात तो पूरेपूरी खबरदारीथी विचारिए छिजे के आम सोगन लेवामा मारा शरीरने परिजरन के वेपारधधाने हानि तो आवती नथा ने ! जेनो अथ ए के, आपणे पण वेला काछियानी माफक धर्मरूपी घोडानु मूल्य समजनारा छिए, पण राजाओनी माफक घोडाना परीक्षक नथी काछियो घोडानी जात नथी जोतो, काम जुवे छे आपणे पण शहेरी श्रावक के आगेवान गणाता या कुलाचारे धर्म करिजे छिजे जेनो अथ ए के, आपणे पण घोडाने बदले टट्टून लेनारा छिजे, परतु मोक्ष माटेज धर्म कर नाराओ वस्तु (धर्म) नु मूल्य जोइ तने लेनारा गणाय छे हिसाब गणी गणीने के साटु रातीन धम करनारा न होय तेज तेजी घोडो खरीदनारा छे साचा धर्मीनी भावना तो "धर्म मोक्षने पमाडे छे, तेथीज ऊचामा ऊचो धर्म लउ" एज होय छे पछी ते धम पचपरमेष्ठीना आराधनात्मक होय तोय क्षायिक भावना मंदिर सुधी पहोंचाडनारो बने छे, ते पछी एनी नजर नथी देवगुवादिनी आराधनावाळो क्षायोपशमिक धर्म, क्षायिक भावनी प्राप्ति सुधीज, अने ते माटेज होय छे तेम न करनारा जीवन वेडफी नाखे छे गुरुदेवो क्षायिक भावमा जनारा, अने साथे मुमुक्षुओने पण लइ जनारा छे

वांदराभाओनी लीलाओ—

तमारी तळाइ (पथारी) माडोशीना कदापि उपयोगमा न आववा छता

ते तमने अनुमोदना आपवा मही पडे छे के " वाह ! आ धनावी हो ! तळावनु फापड बापड थाय छे, टकाउ छ, देखा लागे छ करावी मूको ने बीनी पण एकाद बे ! " हवे गुः देखा नहि, देवा नहि, पोताने कइ उपयोग नहि, ने तळाव पूतानो नथी, छता " सारी छे हो ! करावो ने बेचार ! " छे, दुनियादारीना कामना तमने मदद करनारा सख्याम पापकार्यमा जोइअ अेटली मदद के उत्तेजन आपनारा हजारो मळे, पण तमने तेना चोथा भागनीय मदद मोक्ष ववामा मळवानी नराय आशा नथी एवा पापमा प्रस्तावना के कोइन दीक्षानो उपदेश के सजागो मळवी आप्या ! जोड्या ? शास्त्रना प्रभावना केटली करी, के करवा प्रेया ! तमारी पीठ थाबडे, तेमा तमने आगळ वधारे के तमारी गुः करनारा गण्या गांठ्याज ! तेमाय घणा तो बोलवा पूरती बतावनारा हशे तमारा कामनी तात्त्विक किंमत जाणी तमारा सहानुभूति दर्शावनारा घणाज थोडा ! एक तो आ आत्मा पणे ज कर्मराजाना चकरे चढलो छे, कर्मना उदयथी पापमा छे, तेमाय तेने टेको आपनारा मळे त्यारे तेनी दशा वादराने नेवीज थाय के बीजी काइ ? एक तो वादरो स्वभावेज च नवरा बेसी रहेवानु गमे नहि तेमाय तमे तने पवाडु भरी दा अेटले वादराभाईनी लीलानु पूछ्यु ज शु ! तेम आ मनरूपी घडीमा पैसा माटे, तो घडीमा मित्रना भला माटे के शत्रुने गर दोडतु होय छे तेमा लोको सत्तारनी शाळने चढावनारा, तेने रूपी दारू पाजे ऊ स्वाभाविक धमाधम अने धिंगामस्ती करवा वाळा वादराना हाथमा फेरीनो शुमगो आवी गयो तो नीइ भाईनी लीला, कूदाकूद ! तम पुण्योदये ...

कूदाकूद दारू पीने जेटले त्यान साथे थवे, अने बीजा करे वो तेने कूदाकूद चक्रवृद्धि व्याजना हिसाबेज आगळ वधे छे, तेनो कूदको आकाशने चढवानोज बाकी रहे छे आ मनरूपी माकड विषयकषायरूप रंगभूमि उपर कूदका मारवा सज्ज थयेलु तेने निरोगी शरीर बळवान् लोहा, पैसो, स्त्री, मित्रो के धारेला संजोगो मळे एटले एना नाचगाननी लीलानु शु पूछवु ! आ दशा एकज भवना नथी एक्के भव एवा नथी के ज्या आटली कूदाकूद न थाय अरे, तमे सामान्य बगलो बधावो तो पण तमारा आडोशी पाडोशी अभिमान-पूर्वक तमने कहनारा मळशे, तमारा बगलाना एकाद बाजुजेथी पवनना झपाटा आवता हवे त्यार ते बाजुनी जाळी तोडा तम त्या भीत चणावा देशो तो पण तमने सहानुभूत आपनारा मळी जशे के 'वाह शेठ ! माणसाळो तो खरा हो ! तमारा बापा बिचारा बगलो 'बांधुबांधु' करता रही गया, बगलो बांधी न शक्या पण तम तो बापदादानी मरजी पार पाडी खरी ! " केम जाणे बगलो बांधवामान जिंदगीनु साथक थई जतु होय ! बगलामा आवता हवाना झपाटा बंध करेलाय जोइ तमारा वखाण करशे के " वाह वाह शेठ ! आ ठीक कर्यु हो ! शाळा चोवीसे कलाक पवनना झपाटा आव्यान करे, वखते फोइन शरदी थाय तो ! पण हवे तमारे घरमा वांधोज नहि " ऊ महिना पछी एज दिवाल तोडावी बारी मूकावो तोय तमारी प्रशंसान थवाना ने "हवे रंग राख्यो शेठ ! आ दिवालथी पवन पेसाइ रहेतो हतो अने अजवाळु पण आवतु न होतु हवे तो तमारे चावावे कलाक परफराट करता पवन आव्यान करवानो हो ! जाणे माथराननी टेकरी ! " अन तमे पण तमारी आवा प्रकारी सामळीने राचवाज मंडी पडो छोने ! आवु आवु राचवानु संसारमा रखडता आत्माने कया भवमा नथी मळ्यु ? कया भवमा मनमा विषयोने लाधे निमता नथी थइ, अने कया -

१ तमने अनुमोदना आपवा मढी पड़े छे के " वाह ! आ ठीक थयु, सारी बनावी हो ! तळाइनु कापड वापड थाय छे, टकाउ छे, देखावमां पण सारी लागे छे करावी मूको ने बीजी पण एकाद बे ! " हवे जुओ तो खरा ! लेवा नहि, देवा नहि, पोताने कइ उपयोग नहि, ने तळाइ उपर पोते कदी सूवानो नथी, छता " सारी छे हो ! करावो ने बेचार ! " घणाय कहेनारा छे, दुनियादारीना कायमा तमने मदद करनारा सख्यानध नीकळशे पापकार्यमा जोइए अेटली मदद के उत्तेजन आपनारा वगर बोलाव्ये हजारो मळे, पण तमने तेना चोथा भागनीय मदद मोक्ष मार्गे प्रवर्तावामा मळवानी जराय आशा नथी एवा पापमा प्रवर्तावनाराओने पूछो के काइन दीक्षानो उपदेश के सजोगो मेळवी आप्या ? आराधनामा जोड्या ? शासनना प्रभावना केटली करी, के करवा प्रेर्या ? मोक्षमार्गमा तमारी पीठ थाबडे, तेमा तमने आगळ वधारे के तमारी मुश्केलिओ दूर करनारा गण्या गाठ्याज ! तेमाय घणा तो बोलवा पूरतीज सहानुभूति बतावनावाळा हशे तमारा कामनी तात्विक किंमत आणी तमारा तरफ सक्रिय सहानुभूति दर्शावनारा घणाज थोडा ! एक तो आ आत्मा स्वाभाविक पणे ज कर्मराजाना चकरे चढलो छे, कर्मना उदयथी पापप्रवृत्तिमा पडेलो छे, तेमाय तेने टेको आपनारा मळे त्यारे तनी दशा वादराने दारू पावा जेवीज थाय के बीजी काइ ? एक तो वादरो स्वभावेज चचळ, अेटले नवरा बेशी रहेवानु गमे नहि तेमाय तमे तने पानु भरी दारू पाइ दो अेटले वादराभाइनी लाल्नु पूछवु ज शु ? तेम आ मनस्वी वादरु पण घडीमा पैसा माटे, तो घडीमा मित्रना भला माटे के शत्रुने गरदन मारवा दोडतु होय छे तेमा लाको सघारनी लालच चढावनारा, तेने सहानुभूतिरूपी दारू पावे छे स्वाभाविक धनाधम अने विलासली करवाना स्वभाववाळा वादराना हाथमा केरीनो टुमलो आवी गयो तो जोइ ल्यो वादराभाइनी लीला, कूदाकूद ! तेम पुण्योदये एकाद दावट आवी जाय, पाशो सीधो पडी जाय तो जोइ ल्यो मननी पण कूदाकूद केवी थाय छे तो वादरानी

कूदाकूद दाक पाँश अेटले व्याज साथे वधे, अने वाँछा करके तो तेनें कूदाकूद चक्रवृद्धि व्याजना हिसाबेज आगळ वधे छे, तेनो कूदको आकाशने चढवानोज बाकी रहे छे आ मनरूपी माकड विषयकषायरूप रगभूमि उपर कूदका मारवा खडु थयेलु तेने निरोगी शरीर बळवान् लाहो, पैसो, स्त्री, मित्रो के धारला सजोगो मळे एटले एना नाचगाननी लालानु शु पूछ्‌ु ! आ दशा एकज भवनी नथा एक्के भव एवा नथी के ज्या आटली कूदाकूद न होय अरे, तमे सामान्य बगलो बधावो ता पण तमारा आडोशी पाडोशी अभिमान-पूर्वक तमने वदनारा मळश, तमारा बगलाना एकाद बाजुअेथी पवनना झपाटा आवता हशे त्यार ते बाजुनी जाळी तोडा तम त्या भींत चणावी देशो ता पण तमने सहानुभूति आपनारा मळा जशे के 'वाह शेठ ! भाग्यशाळा ता खरा हो ! तमारा बापा बिचारा बगलो 'बाँधुबाधु' करता रही गया, बगलो बाधी न शक्या पण तम तो बापदादानी मरजा पार पाडी खरी ! " केम जाणे बगलो बाधवामाज जिंदगीनु साफल्य थइ जतु होय ! बगलामा आवता हवाना झपाटा बध करेलाय जोइ तमारा वखाण करशे के " वाह वाह शेठ ! आ ठीक कर्यु हो ! साळा चोवीशे कलाक पवनना झपाटा आव्याज करे, वखते कोइन शरदी थाय तो ! पण हवे तमारे घरमा बाधोज नहि " ज महिना पछी एज दिवाल तोडावी बारी मूकावो होय तमारी प्रशसाज थवानी के "हवे रग राख्यो शेठ ! आ दिवालथी पवन पराइ रहेतो हतो अन अजवाळु पण आवतु न होतु हवे तो तमारे चाबाले कलाक फरफराट करता पवन आव्याज करवानो हो ! जाण माथेराननी टेकरी ! " अने तमे पण तमारी आवी प्रशसा साभळाने राचवाज महा पडो छोने ! आवु आवु राचवानु ससारमा रखडता आत्माने कया भवमा नथी मळ्यु ? कया ग विषयाने लोभे अने कया भवमा

शब्दनी मारामारी छे एक शब्द पण आगळ पाछळ न करी शकाय त्यां आज्ञा वाक्यनो कडदो करो ते केम पाळवे ? आवी स्थितिमां अेक पक्षमां आव्येज छूटको आ शासनमा रही सवार पण खरो अने सांजे खरो एम दहि दुधमा पग राखो ए न्याय न पाळवे देव, गुरु, धर्मनी आराधनाज तारणहार छे एकला देवनीय भक्ति शु कामनी ? भगवान् महावीर एकला देव, ए तो एक पत्थरनो कटको छे, अथवा तेओ विद्यमान होय तो माणना एक लोचा जेवा छे तेथी वधु द्रव्यदृष्टिअे तेमनी कइ किंमत नथी तमे भगवान्नी पुजा के पग जरी करो त्यारे, "हु मासनो लचो चापु छु" एवा भावना राखो तो तेथी पूजासेवानु फळ कइ मेळवी शकता नथी, परतु देव वीतराग सर्वज्ञपणाना गुणोवाळा (मासना लोचा रहला) आत्माने हु पूजु छु ए भावनाथी पूजो, अर्थात् तमे पोतान अत करणमा देवत्वने स्थिर करी पूजा सेवा करो तो देवपणाने के वीतराग पणाने पामी शकाय अजैनो अनादिकाळथी रखडता छता ढोंग तरीके पण अरिहतनी जेम प्रशात मुद्रा बनावी शकता नथी भगवाने आत्मान दमी पोतानु जीवन ए आकारमा पूर्ण कर्यु, माटे ते आकारना धारक आत्माने धन्य हो एम मानवु पडे छे, अने एवु जीवन जीववानो मार्ग बताव्यो ए पण स्पष्ट छे, माटे तेमने वदन करिए, पूजिअे तारक मानिअ एम न होय तो 'दू' अने 'गु' मा फरक रहे नहि देवपणु एटले शु ए न जाणता करातो प्रभुपूजा पत्थरपूजा छे त्यागने तत्त्व मानो तेना प्रवर्तकने देव मानो, तोज देवपणानी मान्यता सार्थक आधळो लाकडी ठोकतो ठोकतो जतो होय त्या तेना पग तळे आवला हीराने पण काकरा मानी आगळ चाले तेम धर्माधर्मने आपणे तेना सत्य स्वरूपमां न समजिअे अने तीर्थंकरनी आज्ञा पाळिए तो ते आधळाने हीरो मळ्या बेबु छे गुरुम (हीरो) मळवा छता आपणे आधळा जेवाज आर खुली होय तो हीरो मळ आ जिंदगीने फरती द गुरुना निश्चय ध्यानां दवनी

सेवा पण सर्वथा अर्थहीन ज छे इंद्रियोनी गुलामीमा पडेलाओ ए तत्त्व-त्रयीनी आराधना न करी शके.

बत्रीश वडखोर सोडणिया अने लुली घेन—

आपणु घर (शरीर) अशुचि छे अशुचि उपर बधायु अने अशुचि वस्तुओथी वधार्यु छे कोळियो हायमाज सारो देखाय, मोनामा चग-ळता माडो छो, के तने स्हेजतथी चाववा अने चाटवा माडो छो ते वखते तमारा मोढा आगळ आरसो मूक्यो होय तो ते गळा नीचे न उतरे, तरत उलटी थाय ए गदा देहथी आपणे हालिए म्हालिए छिए घणा यत्रो अशुचिने स्वच्छ, साफ बनावे छे पण आ शरीर शयतान तो पवु के शुचिने पण अशुचि बनावे छे, दूधपाकना तावडामा तमारा मोढामाथी एक टपकु जेटलु पण थूक पडतु जोनाराओ ते बधा दूधपाकनो त्यागज करे थूकना जेक टीपाने सुधारवाना शक्ति दूधपाकमा नथी, पण दूधपाकने बगाडवानी शक्ति छे एटलु ज नहि, पण एक टापु आपणा थुकनु नाखी आपणेय ते दूधपाकने नथी पीता के कोइने आपता हालमा तो युरोपमा पती नाजोने आगळाओ स्पर्श पण थवा देता नथी, अने तेनु माल उपर लक्ष पण छे तात्पर्य के, आ देह दिव्य छे, पवित्र छे, देहथी सर्व साध्य थाय छे सर्वथा अधिक उपयोगी छे एम देहने गमे तेम वखाणनाराओ अने तमना गुरुदेवो जेवा युरोपवासिओ पण आ देहने अशुचिभूत मान छे सुन्दर झाडने पाणी पाओ, ते गटु खातर नाख्यो होय ते पाणीनु परिणाम सुदर फळो थाय छे, पण आ शरीर पाणीने पेशाबना रूपमा, कस्तूरी केश रादि मिश्रित दूधपाकने विष्टाना रूपमा फेरवी दे छे फूलनी माळ घडी मात्र पहेरतां स्पमा फेरवी नाखे छे आवी अपवित्रमा अपवित्र वस्तु उपर आखा जगतनु मडाण छे, अने ए शरीरना एक ज इन्द्रियनो उपभोग हजारो जीवोनो कचरघाण काढी नाखे छे सर्गजन्य सुखना माटज गादला, उगडा, रजाई, तळाई, बिछाना, पखा वगेरे वापरता हजारोज

नहि असख्यातनी आपणे कत्लेआम करिए छिए. जीभ जेवी जीववी डाकण तो आ संसारमा मळवी मुश्केल छे .आखी दुनियाने बेजार करी रही छे अने राजी राखवा तो गाय आदि गरीबोना गळा कापता सचा शोधी काढ्या छे आ बधु दलालणने आभारी छे एने लीधे तो सचित्त अचित्तनो विचार नथी आवतो बटाकानी कातरी अने कांदाना भजिया पण चडावी जवाय छे आम धर्म अने मन हारी शरीरने रागपूर्वक पोषण आपिए छिए

अनतकायमां जीवो केटला ? एक सोयना अग्रभाग उपर अनत एटले मोक्षे गयेला, थता, अने थवाना सर्व, देव, नारक, तिर्यंच, एकेंद्रिय, बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चउरिंद्रिय, पचेंद्रिय सुधीना बधा जीवो करता सोयनी अणी उपरना जीवो वधी जाय जीभने चटाको पडवाथी अनतकायमा जीव मानवानु घणाओना जीव ऊपर आवे छे माटे शका करे छे के आटला बधा ते केम रहेता हशे ? आ मीलना भुगळामा रहेली यत्रीय बडखोर राडणियानी लाकडी वेन उनी वेन आ वातना सामे बहु शका उठावराने छे के " अरे ! अनतकायमा जीवो ए ते वइ वने ?" आ शकानु कारण अनतकाय चीजोने चाखी राखनो चटाको पडेलो छे नेयारी एवो छे के तेने घराकनी बहु परवा नथी घराक पण एवो छे के तेने जे मळे ते लइ लेवा तैयार छे, पण आ बन्ने समजी जाय तो दलालणनी मजाह मरी जाय, माटे तज कूदाकूद करे छे नेयारी हाथमा लूखो सूको रोटलो लइ बेसे तोय घराकने तेने त्या जवानी ना नथी आ घराक एवो छे के दाळ, भात, रोटली, शाक आदि बधु पचावी दे छे हाथ पण एम नथी कहेता के भागामा बटाकानी कातरी होय तोज हु ऊचो नीचो थाउ, अने भाणामानो खोराक मोढामा मूकु पेट कदी एम नथी कहेतु के कठोळना वालीना होय तोज हु पचावु, नहि तो पचाववानी बाधा ! दात कदी एम नथी कहता के छीला शाक मळे तोज अमे राडणिया, नहि तो नहि आ बधाओ पोतपोतानु काम करे छ, कोइने रड वाधो नथी, परतु आ जीभने चस्को पडेलो हाथी नवनवी चीजो चाख्या जोइए छे तेने मजूरी करी

करी पाछी आओ, हाथ रळी रळीने दोरा थाय, पण मजूरी करी करीने रूपइो पडे तोय तेनु जीभने कइ नथी एने तो गमे ते थाय पण गम्मत जोइये गम्मत हशे तोज ते पोते ठरशे अने तमने ठरवा देशे, नहि तो ए कारण एनी छे के न पोते ठरे के ठरवा दे. बीजा दलालो तो धारेली रकम पोता पासे थइ गइ के नीरात वाळे छे पण आने तमे जेम जेम आपो तेम तेम तेनी भूख उघडतीज जाय, संतोष कदी नथी. सैकडो वरस घीमा लसलसतो शीरो खाधो हशे पण तमारी जीभ सदाने माटे कदी घीवाळी बनी! गोळना गाडवा पण वारवार खाधा हशे पण तेथी सदाने माटे आ मीठी बनी! त्यारे विचार करो के आ केटली घीए चीकणी अने केटली गाळे मीठी थाय! केटलु खाधे धराय! पेटने रोटलो आपो तो ते तरत विचारी पचा-ववा मंडी जाय छे, परतु ते रोटलो हाथ पासेथी लइ पेटमा पहोंचाडवा माटे आ जीभने मीठु, मरचु, शाक, चटणी, भजिया, अथाणा, पापड विगेरे दलाली तरीके जोइये छे आटला थी गोळ खावा छता एना स्वभा-वमा जरा धरसाय फरक नथी, आ केवी प्रामाणिकता! छता एनी ठगारी दलाली उपर तमने अप्रीति आवती नथी, अने तमे तेना माटे आकळिया करी करी दोडी मरो छो आ थाइ एनी शेतान के तमारी खाम तो थतु ज नथी, पण कोइ स्थळ पथरो मारवाना होय तो त्या आ सौथी आगळ! तेथी ज अनतकायामां जीव छे के नहि एवो सवालनी पथरा फेंकती रहे छे, अने तमे पण दलालणना एवा गुलाम बनेला छो के एनी सामे चळवो करी शकता नथी, तेथीज तेना बधा पगलामो मानवामा आनद मानो छो तमारी जीभने पतरवेलिया खावानी इच्छा थाय, चपाना फूल सुंघवानी इच्छा थाय, सुदर गायन सामळवानी इच्छा थाय, के सुदरी तळाइने सुवानी इच्छा थता आ शरीरना उपर पगारना गुलाम आत्माराम दोडशे धमाचकडीमा मोंघने पण भार न लागे एवा पगले चालनारो हरे धराटा बध दोडशे कोथळी लइ पातरा लावी पतरवेलिया बनावी खावी पछी लावो मोन मागशे, पछी बोलता सिनेमा आइ कान अने

आपशे, अने छेवटे चामडीने रागी रासया रासमां गभेडानी जेम मुवाळी
दळाइमा आळोटशे केवी छे गुलामी! इद्रियो करतां महान् छतां
आत्मा तेना आधीन छे छतां दयाळण याइ यन्वे यसको
करे छे के "आत्मा कइ कोइनो गुलाम नथी, ए स्वातन्त्र्य
प्रिय छे" आत्माने आधीन इद्रियो होय तो जीमदारा भजियां
आदि खावानी इच्छा थाय के तरतज निश्चय करी लो के "एक
वर्ष सुधी इद्रियोंनी आवी आशाओ न पूरवी," अने ते निश्चय इद्रियने
तेनो विषय न आपवाद्वारा नभावी शको आत्मानु मान तो काढी
जुओ! तमने आ नसतरो करता ऊप न आव अने ते विषयो भोग
ववानी तालावेली थाय तो गुलामी स्पष्ट छे तमारी स्वतन्त्र दावानी वाग
पोकळ छे, वठेल बायडी जेवी छे वठेल बायडी एवी जोरावर के दश मर-
दोने ठेकाणे पाडे त्यारे धणी बिचारो रावडो अने तद्दन अशक्त आ व-
टेलने जरा ओछु पडे एटले गरीब गाय जेवा बिचारा धणीने मार मारी
अधमूओ करी नाखे धणीए बिचारुं के आम तो मारी आवद जाय छे,
एटले तणे एक तरकीब गोठवी धणियाणी धमाधम माडे अेटले धणी
पाडोशी साभळे तेम थूम मारे के "ले राड लेती जा," आवोशी
पाडोशीओ साभळी प्रशसा करे के "सालो मादो मादो पण जबरो तो
खरो हो! राडने केवी टकाव करे छ! वळी पोते बहार निकळे अेटले पाछो
डहापण करे, "वावनी जातनी अशराफ खरी हो! गमें तेटली मारु छु!
पण चां के चू न करे, कहेता वगेज हुकम पाळवा तैयार! आ बधी बहा-
दुरी वचननी थइ, पण खरी स्थिति तु ते तो भाइश्रीज मनमां जाणे
छे जे प्रमाणे तमारोय आत्मा गुलाम रासवो होय अने "आ वदा कइ
कोईना गुलाम रहे तेमाना नथा पण स्वतन्त्र छे," अेवी ब्हारनी डफास
मारवी होय तो भले मारो, 'मे तो इद्रियो जीती लीधी छे" आवो
फांको राखनो होय तो भले राखो, पण खरा राते तो इद्रियोज तमने
दोरवे छे अने तमे दोरा ओ छो ते तमारी दासी तो त्यारज के तमने जे

पछी वधु गमे के जे उपर प्रेम होय ते वस्तुने तमारे आघा करवानी यत्न करो परतु पळाणु आम होय तो ठीक थाय, परतु जरा वांकु होय तो टेव आवे, आ गायन बीजी वार गवाय तो मजा आवे, आवी दशा होय अने कहो के "इन्द्रियोना आधीन हु नथी" तो ते हरिणाम जुठाणु छे केम के तो इन्द्रियोना गुलाम छोज, अने मालिक हु अवो फाको हय करो छो, तथी कह छे तमारी दाधी भनी जवानी नथी तमारी जिवस्पृहा पोषु वानी लालचुडी अने तमना केटळी के तो जुओ, जे बिचारो (इन्साफो) ना गुलाम बनो छो, जे पाधनानी पाछळ दोडादोड करी मूको छो ढोलनी जनी उपर जोरडमाना भेक दीवानोय प्रकाश पडे, अने धाज, लीग छाशा दीवानो प्रकाश पण रहे, तो अम्पी अेवा जात जोयी कम न रही शके! छता आ दुःखी दशामा पोताना स्वाद पोषवा तमने उचकी मराठना अने तमारी पाचे मोटी वकिलात करावी के "अक्क थोडनी अगी उपर अनवा जीवो केम रही शके!" आ दगल्वाज हाइन्द्रिने वटाकानी काजरी, चकरियां, काद्या, गाजर आदि पावता छे आ बधानो चटाको अेन जवो लागी गयो छे के, जे अनन्तकाय जीवोने वाली साधा विना तो पात्ता त्या तेयी ते तमारी पासयी मोटी, पाव लोटी वकिलात करावी थी जि.दरनी वायौदप अमृत प्रवाहना पदा पेकावे छे वादी भीपी रावने पण आ कमबख्त मानवा देती नथी, आवी रात ए के गुलाम छिये, आनी गुलामीयीज शरीर पोषु छे

संसारसर्गीनामा शरीर मुख्यमूलारूपी छे—

आ शरीर अेटले पापमही मोल, अने आवी महाभयानक मीलना आपणे कनमर्ह व चट! शरीर अेटले ग्रॉट ऊपर नकशा मुजब अगाऊ भाड़ मरी नाधळु घर रहतो भयकर, कोण थातो जावो ग्रोट स्य! पण जीवे आ शरीर ग्रोट लीधो, पुण्य भाडु पहेला आप्यु "देव भवमा पाच पच आठ भागवोध, पन अही पाच पच वधु रहेवा दे " कहो ता न रहेवा द,

लाखो रुपिया, मणोबध सोनु के लावल्हकर होय तोय छोडीने जवु पडे जे शरीर माटे तमे मूडी खोई देवु कर्युं सावद्य, निरवद्य, अनतकायन विचार जेना माटे करता नथी ते शरीर क्षणभंगुर छता तमारो तेना उपर विश्वास–भरोसो छे, पण याद राखजो के आ सोदामा तमे पुरेपूरा ठगाओ छो, मोटी भूल करी रह्या छो, माटे देहनु स्वरूप समजो! उपवनोमा मन रजनार्थे होय तेम आ ससारबगीचामा आ देह भुलभुलामणी छे तेमा न मुझाओ! परोपकार के तप करतां शरीरने दु ख थाय छे, ज्यारे शरीरद्वारा करता व्यभिचारथी भयकर रोगो थाय छे वरघोडामां हजारो खर्चो, पण देहमोहथी मुक्तमा नथी खर्चता, भुलभुलामणीमा पडा रात्रिभोजननु पाप कर-ताय अचकाता नथी, अने वळी आगळ करो छो दलीलो! आ युगमा दलाल अने दलील जे बेए मळी आत्माना सत्यानाशनो धोरी रस्तोज तैयार कर्यो छे अधकारना लीधेज रात्रिभोजनना निषेध होत तो ते केवळि-योने न होत तेओ अधकारमाय लोकालोकने जुओ छे "शरीरमाद्य खलु धर्मसाधनम्" अथवा तो "वेपारे वसती लक्ष्मी" लक्ष्मी न मळे तो वेपारनी किमत फूटी बदामनी, तेम धर्म न सधातो होय तो शरीरनीय शरीररूपी दुकान द्वारा धर्मरूपी धन (नफो) बध थाय तो आ दुकान बध करवी सारी छे, जरुरनी छे, अर्थात् अनशन करवु अनिवार्य छे

दीक्षामाटे सतति पेदा न कराय—

अमे दीक्षा दइए, दीक्षा देवानी अमारी फरज छे, अने ते आकाशमांथी पडेलाने नहि, पण स्त्रीए जन्म आपेलानेज आपिए छिये, छता दीक्षा माटे सतति पेदा करो एवु आ शासन नहि कहे, पण ब्रह्मचर्यनाज गुणगान करे छे केवळीने पण आहार अनिवार्य होवा छता ते लेवो, भोजन करवु ए धर्म छे, अगर तमना माटे बनावी आपरामा कर्मोनी निर्जरा छे एम तो जैन शासन नथी कहतु तो पछी आजकालना चीबावलाओ साधुओ पासेथी "ससारनी जरुरियातो पोषवी वस्तुनो आदरमामा पुण्य छे" एवु केहन-

शववा मागे तो ते आ शासनमां केम नभे ! आतु तेज साधुओ कहे के जे खाविया, नहीव पूरवा, आळसु होय के रळी खावानी–मागीने पग खावानी दानतज आ पवित्र धर्मज साधुवस्थामां गुपचुप घुस्या होय शानियो तो पोताने अनिवार्य आवश्यक होय तेने पण पुण्य कहेता नथी, तो पछी तमारे जरुरी होय तेने पापरूप होय तो पाप केम न कहे ! ऋषमदेव भगवाननी आरा जगत्‌ना जीवनरूप अग्निनी व्यवस्थाने पण धर्म नथी कहेतो, पण पापरूप कही छे ऋषमदेव भगवान अेटले आ महान् शासनाना सौथी प्रथम तीर्थ-कर, अने श्री हेमचंद्राचार्य अेटले ते पछीना अेक आचार्य, तेओअे अग्निने पापरूप स्पष्ट बतावबानी हिंमत करी, अे थई शके आ शासनमांज !

भगवाननी कथनी अने करणी जूदी छतां उद्देश एकज—

जे वृक्षना मूळ उत्तम अने योग्य तेनाज फळो सारा, तेम धर्म अने गुरुना आधारभूत जे देवतत्त्व अेनो निर्णय पहेला जरुरी छे अे शुद्ध हशे तो सुगुरु अने सुधर्म पामी शकाय प्रभुनी प्रतिमा जोइ थाय के " आह ! भगवानना मुख ऊपर केवी शांतता अने सौम्यता पथरायेली छे ! खरेखर, मारो आत्मा आवी दशा क्यारे पामशे ! " हवे धारो के आ प्रतिमाओनी जोडे तेमनी राणीने ऊभी राखी तेमना हाथमां हथियारो के वाहन ऊपर बेठेला चीतरिए तो तेवी प्रतिमा जोई आपणने केवा विचारो आवे ! आदर्श सदा चालु स्थितिथी वधु श्रेष्ठ, ऊंचा प्रकारनो होय छे स्त्री, छोकरा, शस्त्र, वाहन तो तमारी पासे छेज, तेनी पाछळ भटकनारा, गाडातुर बनी फर नारा, शत्रुना खणखणाटथी शत्रुओने जीती लेनारा जीवो कई बातमा तमाराथी श्रेष्ठ होय अने गणाय ? तेम सरागी देवोनी ऋद्धि, स्त्री, धन आदि आपणा करतां अनेक गणी छे, माटे ते आदर्श मानवो पण मूर्खता छे कारण, आदर्श अविचळ होवो जोइए, ज्यारे ऋद्धि तो नाशवत छे माटे स्पष्ट अेज छे के मेळवेलानो त्याग अेज छेल्ली स्थिति होवाथी अे त्यागथी परिपूर्ण अेवा भगवानज आदर्श होई शके आपे यशोदा के सुम-

[illegible]श होय तो त्यागनो आदर्श भूलाई तेनी सुन्दर स्त्रिओ अने भोगोपभोगी [illegible]लववानी इच्छा जागे त्यां तमे तमारी न्यूनता पण जोई नहि शको, माटे [illegible]वा कुदेवो छे

प्रश्न—तीर्थंकरोने पण स्त्रियो तो हतीने ?

समाधान—वात खरी, पण तेने तेओए तरवानु साधन नहोतु मान्यु, खोटी मानी हती, अने त्याग कर्यो हतो, एटले भगवानना लग्नादि, [illegible]स्त्रीपुत्रादि अवस्थाने आपणे सारी नथी मानता, त्याग पछीनी दशानेज सारी मानीये छिए तेमनी बधी प्रवृत्तिओ अनुकरणीय नथी तेओने पण त्याग पछीनी प्रवृत्तिओज सारा मनावी छे तारकोनु चरित्र अनुकरणीय खरु, पण कर्मनी क्षयोपशमदशाना भाव होय त्यां

प्रश्न—कर्मोदयनी दशामा तेमना हाथ थयेला कार्योने के दशाने आ शासने कदी अनुकरणीय वरणा नथी, तो पछी तीर्थंकर करे छेक अने माखे केम नीतुं ?

उत्तर—अन्य देवोनी कथनी अने करणीनी भिन्नताने ढाकवा "लीला" ना पडदा राख्या छे, आ शासनमा तेम नथी, कथनी अने करणी अभिन्न छे (जे आगळ कहेवाशे)

प्रश्न—अभिन्न छे तो करणीज करी तेओ वधी रेहयु हत, तेने जोई जगत् अनुसरत, कथनीने जूदा रूपे शा माटे कही ? तेमनु वर्तनज धर्म

उत्तर— भगवाने क्षायिक अने क्षायोपशमिक भावे जे कर्यु ते सर्वे धर्म छेज, तेथी कई कथनीनी जरूर के अवकाश नथी एम नहि इश काले तेम कागडा नज चाली शके, माटे इशनो धर्म छे के कागडा माटे चालवाना मार्ग बतावशे इश भगवाननो मार्ग, तेने आपणे ग्रहण कदापि नज करी शकिये, माटे उपदेशनी तेओने जरूर जणाइ, अने तेज मार्गे जारणने धीमे धीमे अनुसरवानो छे भगवान

के जेटला उत्कृष्ट भवमां आवेला जीवो छे के तेओ जेम करे छे तेम आपणे आरंभक भवमां रही शकता नथी, शकता नथी अने शकवाना पण नथी. माटे बालजीवोना उपकार माटे भगवाने धर्म कथन करवो पड्यो. भगवा-नना सर्व कामोनुं पूरेपूरुं अनुकरण करवा जतां, जिन पण उभा-उभाव करवी के पछी विगेरे रात्रे जीवोथी पर जन्मां [illegible] बाळीने [illegible] नाथ तेमना अनुयायी न [illegible] छाद्मस्थिक भाव पूरेपूरा तेमना कार्यनुं अनुकरण जे भव थाशे, पण तो ए सर्व आपणी शक्ति? माटेज बाळजीवोना हितार्थे भगवाने कह्या तेवुं, तने छातो चारित्र्यने शाबो थोने धार्मिकनी भां ज्यारे तेनुं अनुकरण करजो! त्या सुधी आपनाम [illegible] आवाज, करशो नहीं शास्त्रकाराने जाणे २॥ [illegible] गुरुनी आज्ञा आपी छे, पण कोइ पुण्यशाळी दक्षिणमार्ग तेटलीज निद्रा न करे तो शाके-शानां भाव करो नज गणाय. थती रहेली निद्रा पण [illegible] सर्वथा त्याग रूपी करी शकता तेवा अपूर्णोने शक्ति मळवानां भगवाने माफ करमाव्यो छे, माटे भगवानुं के कथनी अने करणीमां गुरुनो भेद होतो नथी. जैनशास्त्र आदेशादि पुराणोथी उरती पाळा करवानी तेमनी कथनीमां कदी नज होय

अजैनोनो नवो मुद्दो—

श्री जिनेश्वर देवोने आत्म वीतराग स्वरूप देखीने तेने जेओ अनंत वंदना करवी छे, गोवाळियानी चीजो मारी आप तो परलोकाबिज, के जे आत्मानी नथी रहेती तेनुं कारण शुं ? जे देहलक्षण हितार्थे [illegible] भगवाननी मूर्तिमां कल्याणनुं चिह्न, शांति अने आनंद दरसावामां आव्या छे, अने ते शांति के आनंद पण शारीरिकनाज, छद्मस्थावस्थाना नहि. जो भगवानना आकार अने देहना रुपाळाज मूर्ति बनाववानो उद्देश होय तो भगवानने भावानुं स्तवन करुं ते धरतनी पण तेमनी मुद्रा [illegible] छे, तो पछी शा माटे भावानु स्तवन करता भगवाननी प्रतिमाओ [illegible]

आवी नथी ? कारण अेटलुज के वीतरागतानुं ध्येय होवाथी वीतराग अवस्थानी घात मुद्राज स्वीकारवामा आवी छे,जेना दर्शनथी आपणे वीतरागतना ध्येयमा दृढ थई शकीओ अने तेमना जेवा उपसर्गो हसते मोढे सहन करीओ मूर्तिमा वीतरागताना भाव न राख्या होत, तो अजैनो जेवीज आपणी पण दशा थात अजैनो ईश्वरमाथी अवतार, ज्यारे आपणे अवतारमाथी इश्वर मानीओ छिये आपणे भगवानने जन्मथीज मन पर्यव के केवळज्ञान नथी मानता, पण त्याग आदरी ध्यान, तप वडे कैवल्यप्राप्ति मानी छे तात्पर्य ओ छे के–मलिनता के अज्ञानता पहेला (जन्मथी), पछी निर्मळता अने ज्ञान ज्योतिनो प्रकाश अजैनोनो आदर्श मलिनतानोज सिद्ध थाय छे तओ पोताना इश्वरने निरंजन निराकार शुद्ध बुद्ध अने ज्योतिरूप माने छे, तो प्रश्न ओ थाय छे के तेमनी मूर्ति कई अने शी रीते हाई शके ? अर्थात् मूर्ति नज होइ शके ईश्वरमाथी अवतार जेटले इश्वरत्व (शुद्धता) पहेला अने पछी मनुष्यत्व (मीलनता) अेवी अेमेन मान्यता छे

प्रश्न— जैनोय सिद्धने निरंजन निराकार मानी तेमनी मूर्ति केम बनावी शके ?

उत्तर—जैनो सिद्धनी प्रतिमाओ बनावे ते सिद्धावस्थानी नहि, पण जे देहे सिद्ध थाय ते मनुष्य देहनीज, अने तेथीज अमारे मूर्ति बनावी शकाय तीर्थंकरोनी पण मूर्ति मनुष्य देहनीज, अने अवस्था पण निर्वाण वखतनी तीर्थंकरो केवळीपणामा ऊभा रह बेसे, चाले, देव छद्मामा शरीर पण लाबु करे, ऊचे पण नहि, समोसरणमां पर्यंकासने नथी बेसता, पण खुरसी ऊपर बेसी पग नीचे मूकीओ तेवा आसने बेसे छे, अने पग पादपीठ ऊपर थापीने बिराजमान थाय छे आम जुदी जुदी दशा जुदा जुदा समये धारण करे छे भगवाननी जे प्रतिमा बनाववामां आवे छे, ते नथी देशनानी अवस्था के विहार वखतनी, पण भगवान् सिद्ध थवाना होय ते अवस्थानाज मूर्ति होय छे आपणी मूर्ति-

ओना भेद पडतो छे १ कायोत्सर्गनो अने २ पद्मासननो आ भेद आपने तीर्थंकरो मोक्षे जाय, त्यारे बीजा जीवो कई पण आकारे मोक्ष जाय भावकाळना कदाच काळमां प्राणीओ होळ करी तीर्थंकरना आकारे काउसग्ग करतो देखे छे तेना सपना देखीने काउसग्ग करता कहुं छे ? आ तो धणा प्रमादक छे काळ धणां, तीर्थंकरना हाथको केवा जेनो पुन्य हा नथीज, मलाव माथ छे मनुष्यो आधको माट पण जब आहा छ आजे ता तीर्थंकरोना आकारे काउसग्ग करवो छ, अने तेनी छबीओ पडावी छे आजना भगवाननी मूर्तिओ साकार जणवानी छे जेओ (अद्वैतो) परब्रह्मने निराकार माने छे ओने मूर्ति बनाववानो प्रयोजन नथी, साकार अवस्थामां भक्तिभाव होय तेनो रामकृष्णनी मूर्तिओ करे छे, परंतु तेओ शब्दथी भला होता, बीजी बाजु अंग्रेजोना धर्माधारयमां रामकृष्णादिने मानवाना पण निषेध छे "तेनो ईश्वरस्वरूप होवाथी मूर्ति बनावी छे" एम कही बचाव करो जो पक्ष भाग के सीता अ सहित देवोनी मूर्तिओ करावी पडी छे, तेना आदरथ शुं ? आ प्रश्न पूछनार तेओ गुरुवाळाना पडी जाय छे आप तानां पाळेली मूर्तिपूजा अने तेनुं मान्य जोई अंग्रेजोए नवो फुटो उठाव्यो के, "आत्मानुं स्वरूप देखवुं, विचारवुं ए तो कल्पनानी वात छे, ते घेर बेठे पण बनी शके" आवी दलील करी जैनोने मंदिरमां जतां रोकवानो (अटकाववानो) अने प्रतिमा उपरथी तेमनी श्रद्धा ओछी करवानो ढाळो रच्यो, पण तेमनुं दहाडुं आगळ चाल्युं नहि जिन मंदिरे जता आव्या, त्यारे तेमने पण मंदिरो शरू कर्या, मूर्तिओ बेसाडी, ने तेओए बावरी छावरा अने हाथिआरो पण गाडवी दीधा अने धर्मने नामे धर्मनी दुकान शुं री मूकी दीधी, छतां आको न ओळखाया, छतोये पूछशुं कई के " आज आमदिओ जोवा अमारे त मंदिरे आववानी अमारे शुं थवाय ~

" आगमोमां पाठांतरो जोइए " केहवु ए महामूर्खाई छे—

चोवीरो मगराने ज कछु तेज आगमोमां लखायु छे ते पण शिष्यनी धारणा घटवा लागी, स्मरणशक्ति ओछी थइ, त्यारे देवर्द्धिगणिजे वलभीपुरमा लखवानु शरु कर्यु, ते वखते दुमतो अने शुमतवादिओ पण वलभीपुरमा जीवता अने जागता हता जे शत्रुओनी वचमाज जैनागमोरूपी दस्तावेज तैयार थयो हतो, आवा दस्तावेजोनी सत्यतामा त शी खामी होई शके छे ? बधा आगमो लखाया वलभीपुरमा, छतां कोइ आगममा थोडी छाया के देवर्द्धिगणीनी पोतानी के गुरुनी वात स्याय नथी जे याद हतु ते लखता गया तमां फेरफार कर्या होत तो तेमना अहपमानी छाया तेमां जरूर आवीज होत बीजु कइ नहि तो स्वगुरुनु गौरव वधारनार तो तेमां जरूर कइक लखायु होत परंतु तेवो उल्लेख क्याय नथी आजकाल गुरुपरत्वेनी साची भक्ति ओछी थई छे, तो पण ग्रंथ प्रकाशको प्रथमा स्वगुरुनी दगलाबंध छबीओ, अणघटती स्तुतिओ, वधारे पडती गिरुदावलीनी हार माळाओ भक्तिना बहाने जाडे जाय छे जे भक्ति केहवाता होय तो देवर्द्धिगणीजे जेवु एक पण कार्य कर्यानु आज सुधी कोई संशोधकोजे शोधी काढयु नथी दर्वार्द्धगणीने स्मरण हतु तेज लखवानु हतु, तेमा वाढवा घुसाडवानी वस्तु तेमने करवानीज न्होती, अने तेम करवा अवकाश पण न्होतो तेओजे गुपचुप खूणामा बेसी आगमो घसड्या न्होता वलभीपुरखाते जैन श्रमणोनी महासभा मळी हती, जेमा ५८० श्रमण महाराजाओ विद्यमान हता जेमने मान्य राखेला विचारोज आगमोमा लखाया हता. लखवामाय अमुकज लखवु अने अमुक प्रकारेज लखवु जेवो ज्या कट्टर नियम होय त्या केटलाको जेम माने छे के " अमुक स्थळे पाठांतर जोइजे इत्यादि शब्दो केहवा जे महामूर्खाईज छे सर्वज्ञोजे जे सिद्धांतोनी झाखी करी हती तेज आजे चालतु आवे छे भरतीनपनो सभव सरखो पण नथी, त्यां कोई जेम धारे के " अरे ! आ बॅंक टूटी पडशे तो " ?

आवी शंका करनाराओने तो बेसवानुं पण स्थान नज होई शके. आत्माना प्रदेशो पेहलानी जेम आजे पण मानीने छिये, तो पछी, " शास्त्रमां आम होवुं जोइये, अने तेम होवुं जाइये " विगेरे शंका करनाराओने पुछिये के तमने एवो कयो जबरदस्त पुरावो क्यां मळ्यो छे के जे उपरथी तमे आम कही शको ? श्रद्धामां जेने फेरफार न होय तेवाओने क्रियामां फेरफार होई शकतो नथी ध्येय न खसे तो तन कोई पण जातनी पचावम नहि ध्येय अने श्रद्धा सलामत होय तो अंगमात्र पण विचारमां के क्रियामां परफार संभवेज नहि केटलाको वडी दी शाना दिवसे उपवास आवेल करवानु माने छे, तेनाथ परस्पर फेर नथी तत्वना फेर न होय तो मतभेदने स्थानज रहेतु नथी आपणा गच्छोमा तत्वथी फेरफार होवाथी तेमा सत्य क्यां छे,ते विचारवु जरूरनु छे ढुंढियाओ मूर्ति अने देहराने आश्रव माने छे तेथा तेओ भगवानना सिद्धांतो अने मान्यताथी जुदा पड्या माटे प्रभुना शासनथी विरात छे केहवु पडयु तेओ मदिरने आस्रवनु कारण माने छे,ज्यारे आपणे तेने निजरानु कारण मानिये छिये अहिं तात्विक मान्यतामाज तफावत पडवाथी तेमने सम्यक्त्व नथी एम श्रमणोने केहवु पडयु छे जे रूपे तत्व होय ते रूपेज तत्वने मान त्यारे तेने सम्यग्दर्शन मनाय आवु बधु श्रद्धालुने समजावी शकाय, पछी ते शकाशील होय तोय चाले पण जेओ श्रद्धाहीन होई शास्त्रोने विचारवाना वृत्तिवाळा नथी तेवाओने समजाववानु स्थानज नथी धर्मनो प्रचार करवो, धर्ममा श्रद्धा दृढ करवी एमां जराय मतभेद नथी जे कई मतभेद छे ते धर्ममा छूटछाट मूकवाना बाबतमा छे, द्रव्य, क्षेत्र, अने काळने अनुसार धर्ममा मतभेदा पड्या छे

तीर्थंकरोए धर्म बनाव्यो नथी पण बताव्यो छे—

धर्म तीर्थंकरोने नवो बनाव्यो नथी, पण द्रव्य के अदृश्य वस्तुओनो स्वभावज तेमने बताव्यो छे तीर्थंकरोना पहेलाय पुण्य या पाप तो लागत तीर्थंकरोए तो [illegible] बताव्या के जणाव्या एटलुज

आरा उघाडे छे त्यारे प्रकाशने देखे छे, परन्तु तेनो अर्थ अेवो नथी के ते आरा नथी उघाडतो ते पहेला प्रकाश न्होतो, के प्रकाश वस्तु देखाडवानु कामज करतो होतो तीर्थंकरो प्रकाशने स्थाने छे, पण धर्मना उत्पादक नथी

धर्ममा फेरफार केवो होय ?—

धर्म अे जगत्नो स्वभाव छे, ते कइ छोडी काव्हेली नवलकथा नथी के तेमा तीर्थंकरो पण फेरफार करी शके दर्पणमा पदार्थ जेवो होय तेवोज देखाय, तेम जगत्नो जे स्वभाव छ तेवोज स्पष्ट रीते जैनशासनमा कहेलो छे अेटलुन आपणा आधीन छे के आपण द्रव्यादिकने आश्री अेमा फेरफार करी शकिये आ बधु धर्म देखाडवाना माटे छे पण पल्टाववाना माट नथीज

जेवु न मानीअे तो युगलिया ने जानवरोनो आचार पण धर्म मानवो पडे तमे जाणो छो के पहेला साधु धर्म माटे चार व्रतो हता, पाछळथी पांच चारना वखते अब्रह्मनी के स्त्रीविहारनी छूट हती अेम तो नहिज पण आवश्यकता न हती, ब नु जेवु के केटलाअेक दमिओ मत नियमोमाथी शब्दच्छळ करीने वारीओ गोधी काढवा लाग्या हता,ते वखते धर्मनी पवित्रताने निष्कलंकिनी राखवा माटे चारनो खुलासो स्पष्ट करवामा आव्यो हतो, तेथी महावीर महाराजाअे धर्ममा फेरफार कर्यो अेम मानवानु नथी, लोकोनी मनोवृत्ति बगडवाथी शब्दछळ करी पापने पोषवा लाग्या ते माटज चारना पांच महाव्रतोमा पलटो कर्यो ने धर्ममा सुधारो कर्यो कहेवाय, पण फेरफार न ज कहेवाय

नातरानी छूट—

शंका—ते वखते स्त्रिओ अने पुरुषो ब्रह्मचर्य न पाळी शकवाथी चारना पांच कर्यां, तेम आजे पण स्त्रिओ ब्रह्मचर्य पाळी शकती नथी तेमने पण नातरानी जातराअे चढवानी छूट आपो !

समाधान— भगवाने करेला सुधारामां आश्रव रोकवानो मुद्दो ! अने तेना पोषकज सुधारो कर्यो हतो, अने थवु पण

ओइये अेवुन मूळ उद्देशमांन्त न थाय अेवो सुधारो कोअी काळे थई शकवानो नथीज ब्रह्मचर्य पाळननो उद्देश होवाथी बाळ-ल्ग्ननो निषेध करवो अे सुधारो छे, ज्यारे पुनर्लग्न अे ब्रह्मचर्यथी विरीत होवाथी ते सुधारो नथी लोकाने कुबुद्धि थई जेथी गुन्हो पोसाय नहि ते माटे भगवाने गुन्हो न थवा देवो अे आशयथी सुधारो कर्यो हतो अे रीतनु परिवर्तन अे धर्मनो के कायदानो सुधारो थयो गणाय, परतु तेथी अेम नथी ठरतु के मूळधर्म अथवा कायदो बदलाअी गयो, प्रथम तीर्थंकर धर्मना मतोने ल्गता नियम ढ्हवामा आव्यो पछी तेमाथी सुधारो काढी नाखवामा आव्यो, वळी पछी सुधारो दाखल थया आनो अर्थ अे छे के द्रव्य–क्षेत्र काळ-भाव प्रमाणे फेरफार ता करवामा आवेन, पण ते फेरफार परिवर्तन नथी, सुधारोज छे, अने ते मूळ ध्येयने कायम राखीनेज अमलमा आव छे आदर्श-नी ओळखाण जरूर छे ने जे आपण आपणा आत्मामा उतारवा मागिअे छिअे, तेज आदर्श आपणा देवोमाय होवो जोअिअे आपणे ब्रह्मचर्यनो आदर्श राखी तेना दृढीकरण माट मदिरे जअिअे छिए मदिरमा घुसी गयेल्ा देवो पोतेज देवीने साथे राखी हाथमा हथियार लइने ऊभा हाय तो अे देव पासे तमे तमारा आदर्शनो केवी रीते मेळ बेसाडा शका त विचारो ! जेवा शिक्षक तेवा शिष्य, अने जेवा देव तेवा धर्मगुरुओ होय, अने तेमना उप देश पण तेवोज !

तीर्थंकर जे आचरे तज उपदेश अने धर्म पण तेज, गुरु अने धर्मनो आधार देव उपर देव त्यागी, तेआना धर्मप्रचारको त्यागी, अने तेओना पगल चलना भिक्षुकारा तप त्यागनाज आदर्शवाळा, जेटल ढुंका वर्तन सुन्दर उपदेश पण त्यागनोज राणा प्रताप के छत्रपति शिवाजीनो पाठ भजव नारा तेवा पुरूषाळी राजा होता नथी, छता तेव तो पूजाया। पावडा विगेरे तमनोज राखे, पण युरापियन अवा स्टज उपर नथी आवता, ज्यारे अजैना तो पोताना देवोनो वहारनो आकार पण वीतराग जेवो कर्री न शक्या,

तेमी जे स्पष्ट छे के तेओ देवता ए शु चीज छे ते समजी पण नथी शक्या, तीर्थंकरोनो आकार मनुष्यनो छेयतु चिन्ह होतु जोइए, देवोमां गुणो अनुकरण करवा जेवा होवा जोइए, तोज तेमना शिष्यो ए मार्गे जाय अने मागने धर्म गणी शके अर्थात् धर्म अने धर्मनी सव प्रवृत्तिओनो आधार देवोज छे, माटे अष्टकोमा पहेलु अष्टक महादेवनु कह्यु गुणो बे प्रकारना होय छे, साधक दशाना अने सिद्ध दशाना नेपोलियननो वेश भजवनार तेनी गदी क्रियाओनु अनुकरण करतो नथी नेपोलियन राजद्वारी जीवनमा बहार पड्यो त्यारे तेने साधक दशानी प्राप्ति थइ, तेम तीर्थंकर पण साधु थया त्यारे साधक दशामा प्रवर्त्या हता, ज्यारे देवत्व सिद्ध थयु त्यारे तेवा गुणो बतावया जोइये ए सिद्धपणु सघळाने उपकारक छेज माटे जैन शास्त्रोए तेमनाज देवत्वनां वखाण कर्या छे हजारो लाखोनु पाणी करी लेबोरेटरी अने ओजारो वडे हवे सिद्ध थयु के वनस्पतिमा जीव छे, पण भगवान् पासे तेवु कइ न होवा छता तेमां तेवोए जीव कह्या छे पाणीमा निमित्त अने उपादान बने कारण वायुज छे ए वात पचीससो वर्ष पहेला भगवाने जाहेर करी हती छ जीवनिकायने मानवी एनोज अर्थ जिनेश्वर देवने मानवा जिनेश्वरने माननारनी पहेली फरज ए छे के "तेमणे आखी जिंदगी सुधी अनुभवेलु जोवा मंदिरे आववानी जरूर नथी, अमारे तो आत्मकल्याणनी दिशाए जवु छे ते दिशा अमने जैन मंदिरोमाज मळी शके छे" आम स्पष्ट कहीने जैन मंदिरोमा जवानु चालू राख्यु, त्यारे अजैन शासनना संगिनान रोष थयो अने बोलवानु चालु करी दीधु के "हस्तिना ताड्यमानोऽपि न गच्छेज्जैनमन्दिरम्" हवे विचारो के तेमने मंदिर मूर्ति ता राखवा छे पण जिन मंदिरे जता अटका थवा छे, पण एम तो कोई नहि कहे के वायडिओ राखवी अने गमे तेम करीने रायडिओ लइ आववी ए धर्म छ माटेज जिन मंदिरे भक्तोनी भीड वधवा लागी हरिफाइ करनारे पेला करता सारो माल राखवा जोइए, एम कहेवानु न होय के "सामी दुकाने माल लेवा न जाओ"

अजैनोने हरीफाई करवी हती तो आत्मकल्याणना धामनो मधु मेळ करवा हता, पण अहिं दानवनी हरामखोरी छे आत्मकल्याणनी सामग्रीत्व मात्र नथी अने मराकने छोडतो नथी, वेश्याओने सामेनी दुकाने सिके-टिंग करवु पडे छे "जैन मंदिरे न जवु" ते वेदवादीय लोको न अटकया त्यारे भय बताव्यो के "हस्तिना ताड्यमानोऽपि" जेमना देव खोटा, मूर्तिओ खोटी तेमने तो खरा ठरावबा मस्तक प्रधान करीने पडे तेमने पूछिये के वेश्या मंदिरनो के पूजमंदिरनो निषेध योग्य गणाय, पण जैनमंदिरमां शुं दीठु के जेथी निषेध करो छो ? त्यारे तेओ चूप थाय छे । करता गया जिनमूर्तिनी नकल पण थयी उलटी नजर ! असलमां सूक्ष्मध्यान हतो तेवी नकल करतां नडनो नहि, पण जघाड बताव्यु नीतिशास्त्र तो कहे छे के, ब्रह्मचर्य पाळवु छे तेने अबळा सन्नाय पाळनाराओने स्त्रीनी प्रतिमा निहाळवी हराम छे आरीते तो सन्यासी के ब्रह्मचारी माटे स्त्री प्रतिमाना दर्शन हराम ठरे छे ।

प्रश्न—जैनशास्त्र शान्तु पवित्र अने युक्तियुक्त छे तो तेना अनुयायिओ मुट्ठीभर केम ?

उत्तर—तेने सहायीओमां अछा नथी, पण तेना माट कहेनाराओने अल्पान ज, एथी स्पष्ट थाय छे के महान् कामने धलवनारा बहु थोडा अने गन्धाने अहतमां मूकनारा तो तेथीय अति थोडा जैनोनु ध्येय त्यागमय वर्तनु छे, त्यजब त्यागनु अन वर्तन मथा उदाहरण होय तो ठ । स्त्रन हती, पण अहिं तो धणा उमटा, जेटले एवां उग्र वर्तनवाला पाळनारा य हाथ दोसरो ! माजी मुख्य कार्यनी छूट होय तो दुराचारे धर्म चलावी शका अज्ञान तरफ छलनारा लाखो । ज्ञानदशा स्वाभाविक नथी, पण अज्ञान दशा छे. माटे अज्ञान जगत् अज्ञान तरफ दोरी शके छुके छे धर्मनामा छूटछाट पोतानु होतु धपावत्रा मूकवानी होय छे, पण जे धर्म आत्म-कल्याणना रस्ता माने मनावे छे ते सिद्धांतमां छुटछाट मूकी शकेज नहि अने त, संपूर्ण त्यागन न अनुसरातु होय तो यथाशक्य त्याग करवा जवु अने पूर्ण त्यागनु ध्येय राखवु जोइए

जमानानुसार धर्ममा पल्टो शक्य नथी—

जमानाने अनुसार धर्माचरण बदलाया करे छे एम मानिए तो १७ कोडा० सागरोपम सुधी धर्मनो विच्छेद मानीज न शकाय, समयानुसार वर्तवुं एज जो धर्म होय तो धर्मनो विच्छेद थयो ते वखतनुं पण धर्मरूपज मनाय ! कारण के ते वखते पण मनुष्यो बदलायेला समय प्रमाणे तो वर्तताज हता ! जो धर्म वस्तुस्वरूप होय तो तेमां मूकाती छूटछाटो कृत्रिम होय धर्मनेज जो स्वरूप मानता हो तो तेमां छूट-छाट के हेरफेरने स्थान नथी, छूटछाटनुं स्थान लेवा-देवानी चीजमाज संभवी शके, वस्तुने होय तेमां नहि आ जगतमां व्हेन बेटीनी छूट-छाट चाले, पण मातानी छूट-छाट चालती नथी व्हेन-बेटी मागवा लागो तमारे बारणे आवे पण मावडीनी मागणी करे तो ! लाठीज उछळे के बीजुं कंई ! जगतना व्यवहारमां पण मुद्दामां-सिद्धांतमां छूटछाट नथी तो धर्ममां तो होयज क्याथी ? जे लोको छूटछाटना बहाने आज्ञाथी जूदी रीते वर्ते छे तओ धर्मबाह्य छे ! तेमज सत्य सुसत्य नथी, माटे तीर्थंकरनी आज्ञा न प्रमाण तीर्थंकर पण खोटो जाणीने कोइ खोटो विचार शास्त्रमां प्रवर्ताववाना नथी कारण आ शासन ए तीर्थंकरोना पण बापनुं नथी, हिंसाने धर्म तरीके चलाववानी कोई तीर्थंकरनी पण ताकाद नथी ए खास याद राखजो ! तीर्थंकर धर्म बतावे, पण सर्जावता नथी जेथी बंध अने जेथी निर्जरा तेज कारणोने तीर्थंकरे बताव्या छे धर्मनी आवी स्थिति सनातन छे, मात्र तीर्थंकरो स्थिति दर्शाववानुं काम करे छे त्यां धर्मना पल्टो होय ए शक्य नथी तेमां छूटछाट होय ए असंभाव्य छे छ जीवनिकायने मानवान जोइए पोतानुं सोनुं सवासो रुपिया तोलो अने हेरानुं चार आने तोलो ए रा बधारी तेवी आपणी स्थिति थयी छे पृथ्विकाय जीवो वायु चराटो मीट्टु लविअ के पाणी वायु लविने एमां केटला जीवोनो संहार थाय छे ! जघन्यातनो पण संहारनी किंमत केटली मानी छे !

जीवने धवलत्ता पूरवीअ, पशु नहि अत्यार आगळ जीवन मजा करावता नीरु–वरणु–स्वाद–स्वादु–वीन्नु व्युय जोबिभे, ओना काइ पूरा करवा केटलाये सहार थाय छे ए जाणतु नथी एषा जीव प्रधान मानवा हो तो मरवाना जीवालाओना निरुप बनीने पात करो छता !

शंका—आ बधु एम छे तो जीववा माटे आत्मघात करवो पडे

समाधान—तमारे अनशन करवु जोइओ, तमे धर्ममा फेरफार करी नहि शको, धर्म जीवाना माटे एक रूपवाळो छे अने गेरवानो, जीवोनी जेम अविचळ छे आथी उपर भाविकी तमारी पेतानी छत्री भांगी तमारा समकन्नी खातर आगळपाछळ आवी शकती नथी तमारी अगवड सगवडने संभाळती नथी तेम धन पण आत्मवत् दर जीवोने तपनार दाव–भाव शाक सानी शके ! पोताना एक पैसा खातर बीजाना हजारनु नुकशान कर-नारने केवा गणो ? तो पछी तमे पोताना क्षणिक संतोष खातर बीजा असंख्य जीवोना संहार करनारने तम केवा गणवाना माना ? मनुष्य मरतो तमे एक लाख नाणाना पेली स्व एक घनी जिंदगी ओ वेचाथी गमे त एक लेवानु कहो, तो श लु ले ? पछी भव त छद दोय के नरकनो मालकडो कीडो पने ओवा जिंदगीने पसद करे छे महात्वोनी जेवी स्थिति छ के तमे समो के न समो त तो पाळवाउ पडशे हजी उपसर्ग के परीसहोय सया शक्ति सहन करो तो चाले अथवा आहारनीय छूट, पण ज्ञान दर्शन चारित्र मयारवानी शरते जायाजन्मा जीवोनी दया भागी शके पण तेनी सामे खास राती न करी शके तमनेय आरम्भ–समारम्भना दोषा समजावनार उपर तमेय आवो फाडो त्यारे तमारी बुद्धिने शु कहेवु ! तमारा आ जतन विचारो के कर्मराजानु न्यायालयमा तमारी शी दशा थशे ते ! ग ये कदी छता अतय न्यायालयना दिग्गीरी दयावनारनी सजा ओछी थाय, पण गुन्हो करी अपराधी-जनने माळो दा वा गु हा मे ओ गणा पण तेनी सजानी माटे कहेवु छ के " समाहर्गी जीवा नभिनि हु " पाप करी छुटी

थनारने कर्म–बंधरूपी सजा थधु पश्चात्ताप करो तो सजा ओछी, पण जैन छो माटे नहि धर्मना उदये गुन्हो करे अने सम्यक्त्वना अंगे मापी माफ

त्यागमा तन्मय थवा जिनपूजा छे—

पुष्पथी जिन पूजा करतां दोष नहिं लागे, पाणीथी भगवाननें पखाळ करतां दोष नहि, कारण परिणाम भक्तिनो छे भगवाननां कहेवाथी आपणे पूजा नथी करता एटले ए प्रश्नज नथी रहेतो के "अपकाय अने वनस्पति कायनी विराधनाना अंगे भगवाने लक्ष केम न आप्यु ! शु आता वखते दया पाळवी पण मारा अंगे दयानु नाम न लेवु जेवो तीर्थकरोनो अभिप्राय हतो ! " भगवाननी पूजा तेमना त्यागना अंगे छे, अने तेमनो त्याग आपणां नसनसमा वसे छे, माटे ते त्याग पण अपनावी देवानो होवाथी ते न लई शकिये त्यासुधी एमा तन्मय थवा माटे करवानी छे । चौद राजलोकमा अभय पडह वगडावना भक्ति–पूजा कर वानो छे, जे वस्तुनी किंमत वधारे तेनी दलाली पण वधु अहिं त्यागना संस्कारा आपणा आत्मामा जमाववा त्यागनी भक्ति करवा भगवाननी भक्ति करवानी छे साधुओ नगर दलाली (पूजा) ए वेपार करनारा छे, साधु एटली शक्ति श्रावकोने मेळवी नथी, जेथी तेओ पूजारूपी दलाली आपी त्यागनो वेपार करता थाय छे

धर्मीने त्यां धाड होयज—

हमे ज्यारे सम्यक् मार्ग पामनारा हो त्यारे कर्मनु धाडु जोर करशेज श्र भग० ३३ सागरोपम सर्वार्थसिद्धमा अने ८२ लाख पूर्व गृहस्थपणामां रह्या त्या सुधी अंतराय नड्यो नहि, पण दीक्षा लीधी तेज दिवसथी १२ साल सुधी अंतरायें असह जोर कर्यु माटे धर्मीने त्यां धाड होय एक माणस पासे लेणु छे, ते घर उपाडी परदेश पाछो न आवे एवो चाल्यो जवानो छे, तो ते वखते वायदा नभे ! त्यां तो कहो छो शु ! १०० न अपाय तो

६० आप, पण आपी दे ! तेम धर्मने जयु छे देवलोक अने मोक्ष. त्या पापनु चाल्वानु नथी, माटे पाप पोतानु लेणु वसुल करे. ते माने छे के मारु लेणु वेलु पतावी लेवा दे. पापी तो सदा अहिंज, अेटले तेने तो हु पहोंची वळीश, उतावळ तो फक्त धर्मनिज अंगे महावीर भगवान् पण ३० वर्ष घेर रह्या त्या सुधी गोवाळियाने वक्र न मळी के बे दीक्षा लीधी तेज दिवसे मळी. धम करवा जता विघ्नो हेरान करवा आवशे अने पाप करवा जशो तो कोई नहि आवे "पापी मारुज पोषण करे छे, हमणां हु वच्चे आवीश तो मारु पोषण अटको जशे" अेम धारी पापप्रवृत्तिमा विघ्नो वाडे नथी आवता तमेय उगटी जनार पापेथी तडाकाबध उघराणी करो छो, तेम रोग, शोक के व्याधि, उपाधि आदि विघ्नो पण देखे छे के जीव धर्म करशे तो ते देवलोके जशे, अने त्या आपणाथी जवाशे नहि न्हानो सिंह पाडा थीय डर. त पगिवाथी तेनो प्राण काढी नाखे सिंह जवरो थाय तो तेने पाच पाडाय नपहोंचे, तेम पहेला धम करेलो होय तो पापकर्मोने तोडी साफ करे पण नवो धम न ताले, शरुआतमा धम करवा माडे के तरतज विघ्न आवे, माटे धर्मनु कार्य करवु हाय तेन अु गाठ वाळवी के लेणदार मने बधाय पकडशे, रोग-शाक, माया—मोह बधाय आडा आवशे, बधा लेणदाराने पहोंची वळवानी त्रेवड करी उठाउरी करवानो विचार करवो, कारण महा पुरुषोने पण कल्याणकारी कार्यो घणा विघ्नोवाळा होय छे, तो पछी सामान्य मनुष्यनु तो केहवुज शु ? पण जेने सत्यासत्य जोवु नथी, मनस्वी वतवु छे ते महारभ परिग्रहमा आडाया वगर न रहे काळजी बजारमा तोफान करे तो पर्यवसान बधनमा पडवानु आवे, तेम भ्रष्टाल्लु, अनाचारी पण स्वच्छदे वर्ते तो नारकनिगोदमां जाय

देव, गुरु अने धर्म—

देवनी स्तुति देवना—स्वरूपने सिद्ध करे छे, माटेज भग० "तुद्धाण बोहियाण, ... थी स्तवाय छे अने "

राग–द्वेषो दूर करो " एम बोलाय छे त्यारे अजैनो प्रभातियां गातां " उठोने मुरारि तमारा विना गोपिओना चीर कोण चोरशे, गोरसनी मटकी कोण फोडशे ? " एम अज्ञान बाळजीवो बोले ते एम नथी, धुरंधर विद्वान् नैयायिको पण—

नूतनजलधररुचये गोपवधूटीदुकूलचौराय ।
तस्मै कृष्णाय नमः संसारमहीरुहस्य बीजाय ॥ १ ॥

चंद्रमान माथे राखनार, वासुकीने मोढे बनावनार तथा लीलाथी नृत्य करवामां निपुण महादेवने नमस्कार हो तेओए देवोनु स्वरूप आवु होवाथी एवी स्तुति करी दुनियामां देवता मानवामां जैनोनु अनुकरण कर्युं छे, पण परन्तु नहि तेओए जन्म आप्यो आदिरूपे मान्यो तत्त्वनु ज्ञान न होवाथी कर्ता–हर्ता मानी बेठा एमने तो परमेश्वरना नामे गुरुनी पेढीओ चलाववी छे तेवाओ देवनु स्वरूप क्याथी पिछाने अने परमेश्वरपणाने पामे ? जेमना दर्शनोथी विषयकषाय के आरंभ परिग्रह त्यागवानी बुद्धि नज थाय पछी तेओ जिनेश्वरदेवने माने ज शी रीते ? देवने तेओए तेमना नामे हुंडी लखवा राख्या छे, "अमने आटलु आपो एम तमने परभवमां मेळवी आपिए " एनो अर्थ ए के परमेश्वर तमने आपशे एम तेमना नामे क्रिश्चन, वोरा, मुस्लिम, खोजा आदिना धर्मगुरुओ हाके राखे छे बीजा मतोनु स्वरूप तो आवि जे लाच रूपे गणाय तेवु छे ज्यां आवु होय त्यां देवने रागीज मानवा पडे तेओने व्यवहार लूट के लाच–रुशवतथी चलाववा होय, तेओ त्यागी देवने मनाववा के तेओनु त्यागमय स्वरूप रजु करवा तैयार नथी देवने त्यागी मनाय तोज, गुरु त्यागी अने धर्मनो त्याग मुख्य मानवो पडे अे तने पाळवे के अने मोक्ष–आत्मशांति जोइए श्रीकृष्णे केटली वार संग छोड्यो ? राधाथी क्यारे छूटा रह्या ? महादेव पार्वतीथी क्यारे अलग रह्या ? कहो के आ बहाने वनिताने वळग्याना वळग्याज रह्या छे अने तेओना भक्तो कहे छे ईश्वर—लील गोकुळना बाळकना नामे लीलाना पडदा पाछळ आखा जगतने क्रूरता-

यामा आत्रु धर्म तो 'अहिंसामयज, अने 'वीतरागे [illegible] कारण बीजा देवो "हु"ना खुलासानी पद्मातमा नथी उतरता, तो [illegible] क्याथी उतरे ! तेवाओ बीजु पोतेज छु । त्या " हु, तु " ना वातज नथी तो तेना छेद (परमात्मस्वरूप) नी वातज क्याथी ! केवळ शहाली दैहिक रमतज "हु" सच्चिदानन्द अेवो "तु"(परमात्मा) बताथी भेद [illegible] उपदेशे ! हुना खुलासा माटेन प्रथम सूत्रमा प्रथम वाक्य " [illegible] उववाइए" परमात्मु बीजाओ माने छे के मनना आधीन [illegible], [illegible] जैनो भक्तिना आधीन भगवानपणु माने अेटले भक्तिनो [illegible] ' [illegible] अरिहंताण'; मा नम शब्द भक्तिसूचक प्रथम मूक्यो, ज्यो [illegible] " शिवाय नम विष्णवे नम " मूक्यु अजैन शैव, वैष्णव धर्मो [illegible] नामे, अने आपणे व्यक्तीनी महत्ता नथी, महावीर धर्म नथी [illegible] गुणपूजा होवाथी जैन धर्म वीतरागशासन कहिअे छीअे. [illegible] पायो " तमेव सच्चं॰" छे जिनवचनने " तहत्ति " केहवु [illegible] नीने आत्मरक्षक मानवी अेज भक्तिनु प्रथम पगोथीयु [illegible] वीतराग कहेवामा वाधो नथी आवतो वीतरागनु [illegible] साह छे माटे अजैनो पण पोताना देवने वीतराग [illegible] आववा लाग्यो अेटले तेना बचाव माटे " [illegible] " [illegible] राख्या पेली कोरनो पचरो नजर न पडे [illegible] असम्य छे अेम तो तेमना मस्तोय कबूले छे पन [illegible] लीलामा नाच, चोरी बतावी, राग के क्षमा केम न [illegible] ! [illegible] बतावाने निथसरे न जणाता देवा माटे पहेला " [illegible] " [illegible] बाळक अेटले गमे तेवा कायाने छावरवा अेमज [illegible] वाधो नहि । उपरथी कहे " तमारा देवने मरी [illegible] न [illegible] के शिखरे चढाव्य न थाय प्रसन्न" [illegible] कडक आपे आरा देवने [illegible] मालु [illegible] अेवु केहनारा न [illegible] [illegible]

खबेडी प्रगट करता करता मोक्ष मेळववानो छे प्रतिमा छे पण ते कइ पत्थर नथी ते आपणने मोक्ष माटे आदर्शरूप जरूर छे प्रतिमा छे वास्तविक ते आपणी प्रतिमा छे, अेटले आपणे जेवा बनवु छे ते स्वरूपनो नकशो छे स्वतंत्र थयेलानी सहाय लेवी पूजाती जिनमूर्ति जन्मथी मरण सुधीना अवस्थावाळी छे तेओ पहेला आपणा जेवा होवा छता पराक्रम फोरवी वीतराग बन्या माटेज इन्द्रादिक भाग्यवानो तो तेमने च्यवनथीज स्तवे छे, गर्भावस्थामाज तेमने पूजवा आवता

त्यागी वीतरागने मुकुटादि शा माटे ?—

आ तो मूर्ति छे, पण साक्षात् भगवान केवलीपणे विचरता त्यारे देवताओ छत्र धरता, चामर वींझता अने पोते सिंहासन उपर पण विराजताने !

प्रतिमा अने पत्थर सरखा ?

प्रतिमा अने पत्थर सरखा केहनार माता अने स्त्री नारी जाति छता सरखा माने छे मुकुट अने कळश बे सोनाना छता राजाना माथे कळश के मुकुट ? पुरुषने धोतिया ना बदले सुदडी के कडाना बदले बलोयु भेट अपाय तो परिणाम शु ? द्रव्य पत्थर अने मूर्ति जड छता आकार भेदे पदार्थो जुदा अने तेनी असर पण आत्मा उपर जुदीज

मूर्तिपरत्वे त्रणेनुय झेर—

आर्य समाजनी सस्कृती अडधी मुस्लिमना अने अडधी हिंदुनी, कारण मूर्ति न माने तोय देवता मानेज हिंदुओ मूर्तिपूजा अने वर्णाश्रम धर्म माने मूर्तिने मुसल्मानो हथियारथी (कुमारपाळना पुत्र अजयपाळ तोडवा लाग्यो तेम) अने आर्य समाज के स्था० वासी तथा तेरा (तेर साधुओअे चालू करेलो) पथी वाग्बाणथी मूर्ति विषयक पूज्य भावनाने तोडे, अने भारतीय सस्कृति (विचार धारा अने आचार परपरा) ने बगाडे मूर्ति प्रत्ये झेर अे

प्रगेनुय घरछु अेक आर्यसमाजीअे जाहेर भाषण करतां हनुमान, रामचंद्रजी विगेरेनी मूर्ति उपर टीका करी के "जे मूर्ति उपर चडावलो हार उदर ताणी जाय ते मूर्ति तमारु शु भलु करे"! सनातनीओअे अे भाषण सांभळी बीजे दिवसे गणेशना पूळे दयानन्दनी छबी बांधी, अने दोड, बाबर वगेरनाथी ते कूटयु अने ज्यारे जाता मारु अेवु घरनु पेलो आप समाजी उतर्यो हतो त्यां थइ नीकळ्यु तेनी अपमान अने लागणी दुखावानी फरियाद थइ

कोर्ट॰—आम कराय !

सनातनी—तेने पूछो के फोटो मान छे केम ! न मानता होय लागणी दुखाय तो पछी अमे तो कृष्ण के रामनी मूर्तिने साक्षात् प्रभु मानिअे ते मूर्तिनी टीका टिप्पणी जाहेरमां करता अमारी लागणी न दुखाय !

आ तो चोर कोटवाळने दंडे ! फरियादी तजाव कर पण न आवी ढकवाथी केस निकळी गयो, मूर्तिपूजकोनी लागणी दुखावानु अनुकरण करता अवो फावट आवी नहि

अजैन धर्मगुरुआ हांके राखे छे—

बावाओअे देवतत्त्व मानवामां जैनोनु अनुकरण तो कर्यु, पण "अन्नदाता" आदि ज्ये देव मानी तेना बदलामां तेने देव मान्यो तत्त्वनुं ज्ञान नहि पण पतादर्तां मानी बेठा, तयाओ परमेश्वरपणाने नव पामी शके कारण 'अमने आटलु आपो अमे त्यां मेळवी आपीजे' अेटले "अमने परमवे देव आपदो" अनु देवना नामे गुरुनी पेढीओ चाले छे. आवी मान्यतामां देवस्वरूपनी साची पिछान क्याथी थाय ! अे दर्शनोथी विषय-कषाय के आरंभ परिग्रह त्यागनानी बुद्धि न ज थाय पछी तेओ जिनेश्वरने मानो अे शी रीते ! उल्टु कहे के "हस्तिना ताड्य-

मानोऽपि " तेओए देवने मानी राख्या छे ते शेटला माटे के देवना नामे हुं ही (अमने आवो धर्म दय पामवे आपशे) इत्यादि प्राय दुन क्रिश्चन, होरा, मुस्लीम, सोना विगेरे अजैन धर्मगुरुओ हांके राखे छे बीजा जैन मतोनुं स्वरुप तो अहुं छे के मंदिर जे छोय त्यां जवाय त्यां आवुं त्यां देवने रागीज मानवा पडे कारण के त्यांज दरनवरी मैओने धर्मव्यवहारनी गाली हांके राख्यी होय तेओ रागी देवने मानवा मना था के देवनुं त्यागमय स्वरूप रजू करवा तैयार होयज क्यां अने देवने त्यागी माननारज गुरु अने धर्मने त्यागमय मानी शके ? ज्यारे आत्माने शान्ति के मोक्ष जोइजे तनेज श्रीकृष्ण गेदाने यार कृष्ण छोडवो छे ! राधा जीथी क्यारे छूटा रह्या ! महादेव पार्वतीथी क्यारे अलग रह्या ! आ बधा वनिता ने वळग्याना वळग्याज रह्या छे अेगाओने तेना भक्तो कहे छे के " ओ तो इश्वरनी क्रीडा " गोकुळना बाळकना नामे भाळाना पडदा पाछळ ज्यारे जगतने डुबाववामां आव्युं छे

धर्म तो अहिंसामय, नहि के कपटी मोजशोख अने करणी ढीलाना जैन दर्शनमां जेवो जिनेश्वरोओ मोक्ष मार्ग बताव्यो छे तेवोज ते तारकोनो अमल पण !

संसार कांटानुं फंदरवानुं छे—–

आ संसार केवो भयंकर, अेमां डुबकी मारवामां आनंद माननार कई स्थितिमां पड्यो रहे छे अने केवा केवा सुखोथी वंचित रहे छे, कया जीव आ संसारसागरनी भूलावळमां फसेलोज रहे छे, अे सघी ज्ञानी शास्त्रकारोअे अेटलाज माटे ठेकठेकाणे विस्तारथी वर्णवी छे के, आपणे संसार रुपी भूख-तृष्णाने दूर करने बराबर नाशीने तोज धर्मरुपी अनाज के पाणीनी किंमत बराबर आंकी शकीये कोई मापसनी बहादुरी जाणवी होय तो तेने करेलुं कार्य कयुं अने ते केटलुं कठण छे ते जाणवुं पडे कार्य जेटलुं कठण तेटली ते करनारनी बहादुरी युद्धना विजयनी किंमत काढवी होय त

सुखनना सत्कारनु बराबर माप काढवु जोइअे बाळकोनी भावना पर आपना हैयामां धर्मनी स्थापना करवानी छे, धर्मनी उत्तमता अने फळ बताववानी छे अने अेटलाज माटे जे धर्म क्या राक्षसथी जीवोने मुक्त कर छे अे बताववा ठेरठेर शकानी विचित्रतानु वर्णन कर्यु छे मुख्याने लागे त साकर जेवु मीठु लागे तेम भवभीरुन धर्म छे पण ते सांसारिक सफळता माटे नथा तेम मानवो आ धर्म अने संसार अेकनोज उद्देश नहीं मेळवो चक्रवर्तीना चक्रनी किंमत लोढानी दृष्टिए न थाय, हम करता रत्नत्व आवाना, कारण ते दृष्टिअे तेनी किंमत नहि जेटीज तेनी किंमत थाना करवाय वधु छे ते कार्य सावधानी दृष्टिए लावानु कर्ता प्रमाव अजब छे शत्रुने सतावनानी राज्य रक्षानी अने मालिकने बचावानी शक्तिओ जेमा छे अे प्रभाव दस वीस मन लोढाना कटकामाय नथी, चक्रनी जे रीतनी परीक्षाज खरी छे जगतनी तमाम वस्तुओ माटे तेमज छे धर्मनी पण परीक्षा तेनी रीते थवी जोइअे धर्मो संसारना सुख मळवाथी धर्मनी सफळता मानतो नथी, के तेथी तने पोताना धर्मीपणामां संतोष थता नथी अेवी संसारसुखनी प्राप्ति तो अेने पण चक्रमाना लोढा जेटली किंमतनी छे, धर्मनी साची किंमत तो ते त्यारेज माने के ज्यारे ओ धर्म चक्रना साचा कार्यना माफक आ वत् सुखना पर्ये प्रयाण करावना माटे छे, संसारसुखनी प्राप्तिमां धर्मनी सफळता माननार केवळ धर्मने छोडी संसारने वळगे छे, अने धर्म त्यागथाथी भवाटवीमां भटके छे माटे जे मिथ्यात्वी केहवाया छे कारण चक्रनी लोढानी दृष्टिअे किंमत करनार कोइक दिन वधु वजनदार लोढाना कडकाना लोभमां चक्रने छोडी देवानी भयकर मूर्खता करे, तेम संसार सुखनी प्राप्तिमां धर्मनी सफळता माननार ज्या वधु संसारसुख मळतु देखाय तेने धर्म मानी लेवे, अने साचा धर्मने यदाने माटे छोडी दे जे वृक्षथी छाय मळती होय के जे डाळी उपर बेठवा मळ्यु होय तेने । उलटी पेढी देनार मुद्दाए नथी तेमने जे धर्मथी वर्तमान सादवी मळी ते (धन) ने छोडी देनार मिथ्यात्वी गणाय सामायिक, पूजादिना नियमवाळो पूजा करवा जवता प्रराग आव्यु अने

तेना सोदामा हजार बे हजार मळ्या पण खरा, ते वखते छाती उपर हाथ दईने कहो के पूजानो समय ते सोदामां वीती गयानुं दु ख थाय के मळ्यानो हर्ष थाय ! केटलाको तो ओवा सासारिक कार्यो माट सयोगोने आडे धरी कहे छे के " भाई, अमारा सयोगो ओवा हता के अमारे तेम करवु पड्यु ! " खेर, सयोगवशात् कदाच बाह्यप्रवृत्ति फरे, पण तमे पाका अने साचा हो तो तमारा भावो तो नज फरवा जोईओ कारणवश पूजानो टाइम जवो करी हजारनी कमाणी करी पण त्यार पछीय पूजा न थयानु दु ख थवु जोईओने ! न थाय तो तमारो धर्मप्रेम काचो आनद माटे थळ-बारमाज लालने जता करो छे, अेनी राख वारो छे सयोगोनु न्हानु पण बिन पायादार छे माणस सयोगोने बनावे छे, नहि के ते तेनो गुलाम छे सयोगो उपरज बधो आधार राखवामा आवे तो माणस फद करीज शके नहि दुनियादारीना पदार्थोना आधारेज धर्मनी किंमत गणाती होत तो ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती सारा गणात पूर्वभवमा बे भाई हता, बन्नेने एकदम वैराग्य थवाथी दीक्षा लीधी आहार, विहार, तप, अनशनादि साथेज कर्या ब्रह्मदत्ते नियाणु कर्यु बीजाए न करवाथी शेठने त्यां पुत्र थयो जा बेमां भाग्यशाळी कोण ! पुण्य कोने वधु फळ्यु ! शेठनी सत्ता घरना चार खूणे, चक्रीनी छ खडमा समृद्धिवैभव अने सत्तामा आटला महान् अत रनु कारण एक मात्र नियाणु ए बेमां ऊचु कोण ? "धर्मनी सफळतानी दृष्टिए शेठनो पुत्र हजार दरजे वधु भाग्यशाळी " ए स्यारेज गळे उतरे के पुण्य-पापनो आपणने विचार होय अने चक्रीपणाने घास जेटलु तुच्छ गणता होइए नियाणु आज्ञाविरुद्ध होई तेथी तपनु फळ मर्यादित थइ जाय छे, ते पण सासारिक सुख वैभनो अने उपभोगो पुरतुज, के जना लेतनथी पुण्यनी पूजी चवाई जाय छे पाप पुण्य एकत्र थाय छे नियाणा वाळो तप के सयम धर्म नथी, माटे चक्रीनी किंमत ओछी सासारिक वैभ वनी दृष्टिए चक्री चढे, ज्यारे आत्मिक ऋद्धिनी अने पुण्यनी दृष्टिए शेठनो पुत्र भाग्यशाळी चक्री जो धर्मदेव बने तो एनी वातज शी थई शके ? श्रद्धा-

हवे मूर्खता करी ! अरे, न्हानु राज्य मळतुय,महा मुश्केल तो चक्रीपणु तो क्यां? आमा मूखता न करी केहवामां "द्राक्ष खाटी छे" एम ईर्ष्याथी चक्रीपणानी खोटी वगोवणी तो नथी करताने ? राजा आदि आगळ जे तमे प्रेते पण झुकी झुकीने सलाम करो छो, तो ए मझदत्तनी मूर्खता केम ? आजे ते मूर्खता नथी बणाती भूतोनो नाच मन्त्रप्रयोग करवामा न आवे त्यां सुधीज प्रयोग यत्रन पलायन थाय, तेम सघळाना वैमवथी अजाई वातो करिए त्यां सुधी मझदत्तनी मागणी के चक्रवर्तीपणु आपणने ग्रहण करवा लायक मोहक अने प्रशंसनीय लागवानु पण जे क्षमे बधी वस्तुओने साक्षीने धर्मना धराणे चढावी धमतुन फळ मानिए के तेनी तरतज परीक्षा थइ जवानी के आ बधु शाथी अने त्यां सुधी तथा केवु छे ! पटले पेला भूतोना मापक धर्मसूत्रोरूप महामन्त्रथी तमारी मोहनिद्रा ऊडी जवानी, अने एज आकर्षक लागतो सुखविलास तमने आपत्तिरूप लागवानो, जेम चक्रवर्तीपणु तमने धोंसारूप जणावानु आ तो बधो थइ पारकी पचात हवे तमारीज वात करु समजो के कोइ स्वर्गनो देव तमारा उपर प्रसन्न थई वरदान मागवा रहे अने बोले के- "भाई ! भवातर मळवी आपवानी तो मारी शक्ति नथी पण आ भव-मात्र तमने एवा सयोगो मेळवी आपु के तमे चक्रवर्ती थाओ या धर्मा-राधनना उत्तममा उत्तम साधनवाळा बनो !" ना तमे क्या रस्तो लेवा ख्वाओ ? कहो ने के कमनो ! आमा न तो कोइ देवता आवी आपतो के तमन कइ मळी जतु, आ तो मात्र प्रश्न छे, नकली लडाइ छ आमाय तमे पोतानी (कमने नहि पण धमने मागवानी) तीरता दाखववा तैयार न थाओ तो साची लडाईमा (दव आवेज अने आपवा तैयार थाय तो) तमे शु दाळदर फेडवाना हता ! धर्माराधनना साधनोने शाना माग-वाना हता ! पण याद राखजो के ए नकली लडाइना बहाने तमारा आखा हृदयनी परीक्षा-किमत थवानी छे जे मानस कोटिध्वजपणानी कल्पनानेय दूर करवा तैयार न होय ते कोडनी मिल्कतनी लालसाने।शी

करी शकवानो ? आ ससारमा जीव नट छे धर्मनो जेने स्वाद लाग्यो होय ते कदी पण ससारनी गघाती गटरमा मोढु नाखेज नहि धर्मामृतनो स्वाद लागेलो बीजाने इच्छेज शानो ! कुडवीओ मुक्ति मार्गमा रुकावट अने ससार राटानु केदखानु छे अने राजवीपणु के चक्रीपणु कदी न नीकळाय एवु किल्लाथी घेरायेलु केदखानु छे शरुआतमाना नाना केदखानामाथी नीकळवानी चेष्टा नहि करो तो धीमे धीमे वधु पाकी केदमा सपडावाना, अन छेवटे तो तेमाथी नीकळवानो उपायज तमारा मगजमां नहि आवे रोग वध्ये जानलेण बने छे

पछी गु करवु जे नहि बने तमने भान आवशे त्यारे उपाय हाथ हार गयलो हशे अथवा तने अमलमा मूकता आकाश पाताळ एक करवा पडशे तमाम शक्तिने नूटी बनावनार वारावार अजोड दुस्मन छे वे त्याग माटे अनुकूळ समयनी राह जोतो होय ते वधु पस्ताय, अनुकूळना बदले प्रतिकूळवाज जोर करती होय छे राजकुमारने त्याग रहेलो, तेथी राजकानमा पडेला पाटवी राजकुमारने मुश्केल, राजाने तो प्रजा-मत्री आदि अनेक बलाओनो वळगाड थाय तेओ एमज चाहे के आयुष्य जगत् अमारी जेम पापमा राच्युमाच्यु रहे, समकादव पोता उपर लादे आ ससारनी मनोदशा छे, पण ते साची तो नथीज आ स्थितिमा जा, पण छेल्ली पळो गणाती होय ते वखतेय बधु वोसिराववानी भावना जागती नथी, चउशरण अगीकारवानु नथी सूझतु, मन कुटुबिओमाज रमे छे ओ भगवान् ! केवी कठोर मनोदशा, जेवाओनु गु थवानु ! मरणथी डया वगर आनन्दपूर्वक एने भेटवु एज पडितमरण ! मरणनो भय जीतवानो अमोघ मार्ग दीक्षानो, के जे पेहला करता टुक मुदतवाळो अने सरळ छे आजे घरना आंगणा जेवी सुवाळी सडको छे, पेहलाना जेवो अटवीनो के उजड काटा, काकरा, श्वापद, चोरवाळो मार्ग नथी मृगावतीजे अने जयतीजे भगवानने उतरवा माटे वसती आपी एमा तो एनु नाम प्रथम शय्यातरी

वधीके भयरूदने पाम्यु, अने जेमना थे पुन्यकाळनी मध्यमाभागो डेर–डेर गवाक्षो थे देशमां डेर मोटे अनाज [illegible] [illegible] बोलता होय त्यां भयंकर दुष्काळ हावा [illegible], तेम आ [illegible] शासननी कीर्ति जगतमां [illegible] थाय छे के [illegible] करे पुरुष [illegible] होता मळता, तेथी सर्वत्र भाववान् [illegible] [illegible] [illegible] प्रवृत्ति [illegible] घणा मुक्तोवाना हता [illegible] [illegible] [illegible] जेनो कयु महान् हाथ रहेल छे! ज्यां अ काळनी [illegible] [illegible] गणाओ छे! परंतु पट मेटल किनत वधेल जाजे तो [illegible] [illegible] छे, जन लोको पण सत्कार्य तैयार उभाय [illegible] आप [illegible] जुओ त्यां उचा महेलोवाळी भव्य नगरीमां पहोंच्या [illegible] करवा मांडले छ घणी हवी तपस्वा [illegible] [illegible] (भाषा–भाषाना तबेलो) उजवा [illegible] छे [illegible] छे [illegible] ढोल–ढेर छ! आहार, पाणी, वस्त्र, पात्र, औषधादिकनी [illegible] आजिने रथो [illegible] [illegible] पड जेवी कदी [illegible] नथी नीकळवा, ता पछी देहना जेवी स्थितिमां तु [illegible] [illegible] चित्त नजर आगळ राखी आजनी अनुकूळता [illegible] विचारवा विचार करो! त्यारे थे [illegible] [illegible] सुलभ छे त्यां वगाना थे मार्गनी वचोवच [illegible] महाराजाना अ शब्दो उपर विचारो—

" हे गौतम! आ पांचमा आरामां अने [illegible] ([illegible]) [illegible] मान घणा बेकाळजी ([illegible] [illegible]) [illegible] छे, " [illegible] साधुपणाना [illegible] पड्यु छे " कहनारा [illegible] [illegible] या मांहा डेवटे आ मार्गेज प्रयाण [illegible] [illegible] [illegible] पामजे, मोडो थशे त पस्तावे! [illegible] [illegible] तु पन छे, [illegible] टकाशु नथी, [illegible] [illegible]

स्वाध्याय थई शकतो नथी परीसहोने सहन करवानी हाम नथी, उपसर्गोने हसते मोढे वधावी लेवानी हिंमत नथी, प्रमाद अने विराधनाथी भरेलुं अत्यारनुं साधुपणुं छे, आवा कफोडा संयोग बदले साधुपणुं लेवा करतां परम तारक ज्यारे साक्षात् विचरता हशे त्यारेज चारित्र ग्रहण करी आत्म-कल्याण करीशुं" आवा विचारवाळाओ माटे आ धर्मदास गणीनी एक गाथा बस छे—

लद्धिल्लियं च बोहिं अकरेंतो अणागयं पत्थिंतो ।
अन्नं दाइं बोहिं लब्भिसि कयरेण मुल्लेण ? ॥ १ ॥

हाथमानुं नारी दईने हाथ लांबा करी मेळववा माटे आकाशमां बाचकां भरवा ए केवुं विचित्र वर्तन ! खरी वात ए छे के प्रमाद रहित चारित्र मेळववानी साची इच्छा होय तो अत्यारथीज संयम लई प्रयत्न करवा लागी जवुं जोइए नहि तो मोक्ष ए कंई एवी रस्ते पडी चीज नथी के सहजमां हाथे आवी जाय ! लखपती थवुं होय तो थोडीथोडी रकम भेगी करवी पडे, एकदम न थवाय तेम अहिं पण अत्यारथीज चारित्र पालननो अभ्यास करवो जोइए कोई पण क्रियात्मक आचरण कर्या वगर सीधेसीधुं तेवुं चारित्र मेळववानी वातो करवी ए केवळ वाणी-विलास छे एनुं परिणाम हवामां बाचका भरवा जेवुं छे पासे एक पाई नहि अने वातो करे आखो बजार खरीदवानी, "हाथमां नहि कोडी अने ऊभी बजारे दोडी" दुनियामां माल गमे तेटलो होय तथी तमारे शुं ! तमारी पासे पैसा हशे तो कंइक मळशे नहि तो "कोई बईने दरखो मारा लाल" एवुंज थवानुं छे तीर्थंकरना समयमां आध्यात्मिकवादनो आखो बजार अनेक उत्तमोत्तम पदार्थोथी भरपूर होवानो, गणधर, केवळी वगेरे मोजूद, तेथी तमारे शुं वळवानुं ! पाडोशी क्रोडपती छतां आपणे शुं कामनो ! ते वखते भंडारो अनेक मालथी भरपूर हता, छतां तमारी पासे पुण्यनी पूंजी होती ते तमने "भोया मूळा" जेवुं चीले मोढे बजारमांथी पाछुं फरवुं पडयुं, भविष्यमां पाछुं फरवुं न पडे

ते माटे अत्यारथीज तैयारी करवा लागो अने तेवा प्रकारनुं चारित्र पाळीने तमारा पुन्यना पुंजने समृद्ध बनावो, जेम करवामांज तमारुं भविष्य उज्वळ अने कल्याण थशे. अलबत, एक वात जरूर मानवा जेवी छे के चारित्र पाळवुं पडशे निरतिचार अने प्रमादादि दोषरहितपणे आदर्श तरीके राखी आपणा वर्तमान चारित्रमांना दोषो थई शके तेटला ओछे थयारे प्रमाणमां दूर करवा हमेश प्रयत्नशील रहेवुं, परंतु शिथिलता आवी जाय छे, अति-चार सेवन थई जाय छे, प्रमादवश थवा बनाव रहे नथी, माटे अत्यारे चारित्र मळवुं ज कठण छे ए मान्यता अवळे मार्गे लइ जनारी छे. ते तमारामां होय तो काढी नांखजो! बाळकोने ए वात समजाती नथी, खरे भला मानव! आ तो जेवा दयानंद सरस्वतीना सिद्धांत जेवुं थयुं. भगवाननी प्रतिमा उपर जेवार बळत बीजी मकोडी के उंदरडो जोईने मनने विचार आव्यो के "आ ठीक न कहेवाय" उपाय माटे विचारवा लाग्या, जेक उपाय मळ्यो "पला बोयखीकाथी बंध देवी" फक्त तेम मार्ईचंदेव उपदेश आपवा लाग्या के "मूर्तिज मानवी नहि," पछी बोडानकोडी चडे क्यां? बाइ मारे बाइ! कपडामां जूं पडवाथी नाना थवुं, शरीरमां दर्द थवुं एटले शरीरज कापी न नाखी नाखवुं जे ने दरद नहि थाय महानुभावो! आ रस्तो साचो नथी, शिथिलता छे. जे रस्त न मळता "नहावां जेटलुं पुन्य" मानी पन तेटलो तमारे चारित्र आराधना न थी रही जाय तमारो माटे पश्चात्ता जेवी कदि नथी, राव रंकनी स्थिति के चक्रवर्तीनी साहबी नथी, ज्यां नानी नानी वस्तु-ओनो त्याग करी आ अपार संसारमोथी बार सेवी छेवा—अने छोडवा तैयार नहि थाओ तो पछी क्यारे थशो? जे वेंचा न आपी शके ते कालोडुं दान शी रीते करवानो? आगणा जेवा साधारण मानवोनी वात जुदी छे, आनवे कोईने कई रहा आपिये अने मागिये पन लेता, एटले भीख मागवामां आपणने जेटली शरम नथी लागती, एटली जेना मगअमां चक्रवर्तीना करोडनी राह भरावेली हाय बने लागे तमने जेम दीक्षा भिक्षा

माटे जगतनु कदी थवाय तम चक्रवर्तीनि नहि तने कहे पण कोण ! छतां अेवा नीडर साधुओ हता अने छे के जेनी फक्किमां अनाथा वगर बेधडक दीक्षा लई भिक्षा उपर निर्वाह करवानो उपदेश आपता विचारो के केवा नीडर हशे ! घणारनी तृष्णावाळाने जेनो ख्याल नहि आवे बाकी कवि-महर्षिओजे आत्मानी दृष्टिअे तो चक्रनी कक्किने पण कोडी भेटनीय नथी गणी, अन आवी भावनाथी ज नीडरता जन्मे छे पछी तो अेने छखरमां कोईना डर होतो नथी जे नीडरता अेटले आत्मदर्शननु प्रथम सोपान ! चक्रवर्ती करताय जे साधारण शेठनो पुत्र वधारे भाग्यशाळी हतो पहारथी, सारा देशना चर्नापणा पाछळ अनेक यातना जे गुमावेली छे, ते सहन करता तो साधतु ओकया जेन्लु दद थाय उत्तराध्ययनमां-" नरिंद जाई अहमा नयणा " कह्यु छे राजानो दरज्जो सौथी ऊंचो, अेनो मान-मरतबो, अमन-चमन, अने सत्ता सर्वोत्तम होवा छतां जे आकर्षक देखावी वधी सुंदरतानी पाछळ पापनो पुंज अेकठो करवानी मलीन शक्ति होवाथी केम वखणाय ! तमे गरीब के निधन छो जे जाणवानी अने राजा के महा राजापणा न महत्त्व आपवानी शास्त्रने कई पडी नथी, अेनी साथे निस्बत नथी, शास्त्रने अेनी फिकर नथी, तमे धनी हशो तो तरशो अने गरीब हशो तो डूबी जशो अेवो पक्षपात शास्त्रमां क्याय नथी तमे गमे तेवा हो, गमे त्या हो के गमे ते परिस्थितिमा हो, तमारे सदा काळ धर्माराधन करता रहेवु आ संसारने जिन्द्रजाळ समजी अेनाथी बचता रहेवु, अेमा पड्या रहेशो तो फसशो, धर्माराधनथी तरशो, आ बधाय शास्त्रोनो सार छे, अने सूर पण अेज छे अे सूत्रने सांभळशे ते भाग्यशाळी अने आचरशे ते महाभाग्यशाळी थशे !

जो जागत है सो पावत है, जो सोवत है वह खोवत है

आ जीव अनादिकाळथी संसारमां जन्मे पछी मरे, पाछो जन्मे, एम गोथा खावा छतां केम कंटाळतो नथी ? एकज काम रोज पांच सात दिवस सुधी करो तो कंटाळो आव्या विना रहेतो नथी अरे, भाणामां रोज एकज शाक आवे तो पालवतु नथी ! संसार करतां बीजी चीजने किंमती मानी नथी, तथा ते मेळववानी भावनाय नथी थती अने एकज चीज नजर आगळ होय त्यां कई पसंद करवी, के साची कई खोटी कई ए विवेक करवो एने अवकाशज न होय, कदाच बीजी चीजने सारी जाणी होय तोय छागना कीडानी माफक आ आनंद छोडवा आपण तैयार नथी, माटे कंटाळो नथी आवतो रसकसहीनो कंटाळो आव्यो होत तो सु कारण विचारवा लाग्या होत अनंत शक्तिशाळी आत्मा कर्मने स्वामी तरीके स्वीकारी एना केहवा प्रमाणे नाचे छे संसार छे त्यां सुधी आ आत्मारूपी सिंह कर्मरूपी शियाळनी गुलामी स्वीकारे, एनी शुश्रूषा करे, एना आगळ रांक जेवो बनी जाय, अरे छेवटे ते जमालानो मार पण खातो होय छे, अने खाटो रेहवानो एक तरफ पोतानीज मालिकिनी अखूट संपत्ति, ज्यारे बीजी तरफ परम लोभना कारणे भीखारी जेवी हालत, अने ए बने एकज माणसमां ! आ दयाजनक स्थितिथीज शास्त्रकारोए आपणी कंगाल स्थितिनु भान करावी संसारसागर तरवानो मार्ग बताव्यो ए स्थिति एटले मध्य दरियानु वहाण भूख्यानु भातु अने मरतानु अमृत ! ए मार्ग कयो एटले पंचमहाव्रतोनु पालन एथी कर्मराजाना मूळ हथियारोनो नाश थाय, एनो वेपार बंध पडे छतां संसारनी वासनाओ अने लालचो क्षणभरमां पण एवी छे के आत्मानी मोटी साधनाने काई कोई वखत माटीमां मेळवी दे छे, तेथीज आ प्रमाद (वासना अने लालचो) ने शास्त्रकारोए महापापनु कारण मान्यो छे, प्रमाद थयो त्यां आत्मविचारणा पलायन … मा पण उन्नमशील अने जाग्रत रह्या वगर न चालतु होय, … आ कामां तो … हायज

प्रश्न—केटलाक कहे छे के " मन चंगा तो कथरोटमें गंगा " साधु वेष पेहरवा उचा पालन न थाय तो शु मतु थवानु छे ! त्यारे वासनाओ उपर साचोज अणगमो थयेलो माणस घरे बेठा महाव्रतो पाळे के आत्म कल्याण करे तो वेषनीज शी जरूर ?

समाधान—आसपासना संयोगो अने सामग्री आत्मा उपर बहु असर करे छे, अने घणी वखत ए असरे आत्मा उपर विजय मेळव्यो छे जे वस्तुने खराब अने आत्मघातक मानी ते वस्तुथी एटला वेगळा थइ जवु के तेनो पडछायो पण आपणा उपर न पडवा पामे तीर्थंकरो माटे पण गृहत्यागनु विधान छे अने तेओए पण दीक्षा वेष लीधो तो आपणा जेवा पामरोना वातज क्या ? वेषनी महत्ता अनंत छे विषय वासनाथी उत्तेजित थइ रावणे सीताने हरण करवानु जघन्य कर्यु, तने पोतानी जाळमा फसाववा अनेक कारवाइओ अने प्रयत्नो कर्या, पण बधा निष्फळ गया छेवटे रामचन्द्रजीनो रुप धरी सीतानी पासे गयो, त्या तो तने अत्यंत आश्चर्यपूर्वक अनुभव थयो के रामना रुप अने वेषना कारण एनी विषयवासना समूळगी गइ, सीताजीने फसावानो विचार पण न आव्यो

एक वखत कुमारपाळे सुवर राजा साथे लडवा माटे उदयन मंत्रीने मोकल्या, त्या घणा प्रहारो वागवाथी सेनाओए मंत्रीने छावणीमा लाव्या त्या पोतानी उंडा दशा विचारी पोतानी शत्रुंजयनो उद्धार अने शकुनिका विहारना पुनरुद्धार न थवाथी घणु दु ख थयु, घणु रुदन कर्यु, त्यारे पासे बेठेला ओए जणाव्यु के "तमारा आम्रभट्ट अने वाग्भट्ट पुत्रो ए काम पूरु करशे" एम सांभळी घणा हर्ष थयो अंतिम वेळाए आराधना करवा साधुना दर्शननी उत्कट इच्छा थवाथी तपास घणी य करावा छता, कोइ साधु न मळवाथा कोइ पुरुषने साधुनो वेष पेहरावी लाव्यो, तेनेज महामुनि माना तेना ने पग एट पोताना माथा उपर उदयन मंत्रीए दबाव्या, अने आराधना करी मंत्री तो मरण पाम्या चदनवृक्षथी बावळ वृक्षो सुगधी थाय तेम उदय

न्ती भावभक्ति जोइ पेला वेषधारी साधुए प्रतिबोध पामी जीवता सुधी साधु वेश राख्यो, अने वैताढ्यचले अनशन करी देहत्याग कर्यो

महानुभावो ! आ वेषनो प्रभाव छे ! साधुना वेषमां एवोज कोई महान् चमत्कार समायेलो होय एमां शी नवाईनी वात छे ! पण तानु वर्णन एनाथी थाय, दरेक पाछळ अमुक प्रकारनी भावना रहेली होय छे जेम सिपाईनो वेष राज्यनी एक निशानी छे, अने तेनु अपमान ए राज्यनु अपमान छे, तेम साधु वेषनुय रहस्य ए छे के कर्मने आधीन होवा छतां कर्मनी गुलामी ए मानवने स्वीकार्य नथी छीनवीने पोतानी बनावेली वस्तु कोइ पण मानव एमने एम मागवाथी के स्नेहथी नथी आपी देतो, तेना माटे लडाइज करवी पडे दरेक लडाइमां पोताने केटलीक वखत हार खावी पडे, पण एम हारनार छेवटे जीती के पाचमी वखत जरूर विजयी बनशे छतारीओनी लडाइ-ओमां तो केटली वखत केवळ हारवुज पडे छे, पण कर्म सामेनी लडाईमां तो अंतेर आत्मानोज विजय छे, एवी लडाइ कोण मूर्ख न लडे ! कर्मना सामे मोर्चो मांडो अने पछी जुओ के एक वखत छळक लागता कर्मो केवा राक बनी जाय छे माटे शियाळियानी मार खाता तमारा सिंहने जगाडो ! देडकानी जेम कर्मनो अंकुर पण बाकी रह्यो तो फरी आखोय संसार ममत्वानो प्रसंग आवी जाय, करेली बधी मेहनत धूळमां जाय अत्या सिद्धियोग करवाय चढियातो शुभ योग वारंवार मळतो नथी, आ गुमावी देनारना नसीबमां माथे हाथ दई रोवा शिवाय कशु बाकी नथी रहेतु हजीय जागो, चेतो ! आत्मकल्याणना माटे तैयार थाओ ! हाल वाना नीर जेवा संसारनी मोहकताना पडछाया ना शियाळ करतांय वधु कंगाल बनवाना, अने आत्मारूपी सिंह गर्जना करे तो तेमाज शियाळनो नाश छे आत्मा जागशे त्यारे संसारना पाया थरथरवा मांडशे ! आ निर्बळ देखाता आत्मामां केटली महान् शक्ति समायेली छे एनो केवळी-समुद्घात उत्तम दाखलो छे

व्याख्यान वाचस्पति आ.श्री विजयरामचन्द्रसूरीश्वरजी महाराजना व्याख्यानमांथी.

पैसावाळा एटले अविरतिना गुलाम

"अविरति एटले विरतिमां विक्षेप करी नरके लई जनार भोमियो" ते कुमायानी शरम सारे छे कुमायीनो पति सुख पामे तो अविरत सुख पामे सुभायानो हुकम पाळता सुख तो नमाला धणीने ज थाय, के जेने नमालापणानी शरम न होय तमे विरति रासी छे, पण खूणामा तमारो मालिक ता अविरति विरतिना स्म तमारी साथे करावनारा अमे गोर पैसावाळा एटले अविरतिना गुलाम तमारा घर बगलाओ मोटा एमां बाथरूम, जाजरू, रसोईघर आदि खरा, पण एकाद न्हानु घरमंदिर के सामायिक करवा माटे जग्या नथी, अने कर रकाबी के वासणो घरना माण कोथीय वधु, पण चरवळा कटासणा माड एकाद वे मळशे मित्र सबधि ओनी जेम साधर्मिकनोय जमना बोलावता हशो ! केम ! समकितीन धर्मा सदा अविरतिना अपमान थता होय, वातवातमां ते तेने ऊआई पाडतो होय भोट भाणु अने घणी वानगीओ एटलेज अविरतिनो आदर घणी वानीओ साधर्मी आदिने जमाडवा होय, पोता माटे तो बे चार चीजोज बीने तो एमाथी एक रस वाजुए मूक्या के अविरतिना अपमान ! पैद्लना थावसो शु जमवानु करवु ए घरमा कइ नहि पीरसनार एकाद वस्तु भूली जाय तो भाले नहि रसोई बगडी होय बोल नहि तमे बहुज धनधन करो तो " तु करिए हाय छे बगडीय जाय, बकबाट न करशो " एम साभळवु पडे तमे मुनी गणाओने ! तमारा घरमां मंदिर उपाश्रय, सामायिक पूजाना साधनो, धर्मना पुस्तको जोइएने ! धर्मिओने त्यां धर्मी आवे अने त्याग वैराग्यनी वातो चाले के अविरति डाकण रोवा बेसे अविरतिमां रेहवु बहु खराब, माटे विरतिना महोत्सवो घणाघणा थाय एटलु सारू जेम मादो माणस अपथ्य कदाच करे, पण थोडु एने विचार आवे के नहि पचे हा ! तेम महाआस्तिकने पण पारनु पळ नजर सामे देखावाथी ते करता हशे

ॐ अर्हम्

शासनप्रभावक व्याख्यानवाचस्पति आ. श्री विजयरामचन्द्र-
सूरीश्वरजी महाराज साहेबना जाहेर व्याख्यानमांथी

देशनी समग्र प्रजा धर्मप्रधान बने तो दुश्मननु पण हृदय पलटाइ जाय

(प्रेमाभाई हॉल, अमदावाद रविवार ता. २०।८।५१)

सद्व्यय अने 'स्थाने चैतन्‌क्रिया'नो सदाचार—

अनंत काळना महापुरुषोए अनादि काळथी आ संसारमां परिभ्रमण करता जीवो, जे आ मनुष्यभवने पाम्या छे तेओ मनुष्यजीवनना परमो-दयनु परमपद पामे, तेना अर्थी बने अने आत्माने परमपद साथे जोडी आपनार योगना उपासक बने, तो ते आ संसारसागरने पार पामे अने परमपदने पहोंची अनंत सुखना भोक्ता थाय, आ इच्छाथी ज परमपदने ओळखवा, समजवा, ने योगना सेवन समजवा माटे केवा जीवो लायक होइ शके छे ने ए लायकात माटे केवा केवा गुणो मेळववा आवश्यक छे तेनु वर्णन कर्यु छे

"परित्याग" नामनो सदाचार आपने याद कर्यो छे पण ए आधार पर आपता पहेला एक वात कहेवी जरुरी छे के, एकवार आ सदाचार आप देशमां स्व हतो, परन्तु आजे ते नाश पाम्या छे आपणा नीतिशास्त्रीओए एक वात वारंवार कही छे के जे मनुष्य उत्तम छे ते बीजाना उपर आधार राखवा इच्छे के पोताना पुण्यथी जीववा इच्छे ते जोतु नथी छे ते पोतानो खर्च आवकना प्रमाणमां राखवा मागे छे के बधु राखवा मागे छे? ते पोताना पुण्य प्रमाणे ... ते ... खर्चो नक्की करी आवक मापवा नीकळे? आज आवक ... वार वग वध्यो छे, त्यारथी ...

अनीति, अप्रामाणिकता, बेईमानी विगेरे दुर्गुणो वध्या छे आ स्थिति सर्जी कोने? आ स्थितिना मानवी पासेथी कोई नीतिनी आशा राखे ते बराबर छे?

"शाह" डाकु करता भयकर छे—

आ देशमा आ आदर्श एक वार जीवत हतो के, दरिद्रीमा दरिद्री माणस पण मागीने के अनीतिथी मेळववामा नानम मानता आजे आ प्रकारनी नीति जीवत थाय तेम छे? "अमे तो अमारी मर्जी प्रमाणे जीवीशु तमारे शु" आवु कहेनारा वध्या छे, अने कहेनारो तो वायरो वायो छे आवी रीते "शाह" बनीने जीवतो माणस डाकु करता पण भयकर छे कोइ ए समजतु नथी के जीवनमा सारी रीते न जीवायु तो कांइ नहि पण खराब रीते तो नहिज जीववु जोइए आ नियम मात्र पामवाने कारणे सदाचारनु आचरण दुष्कर बन्यु छे ए जेटलु शक्य बने तेटलु जीवनमा उतारवा कोशिश करवी घटे आपणे आपणा कर्मे जन्म्या छीए, माटे कोइना ऊपर आशा राख्या विना पोतानी जात ऊपर विश्वास राखीने जीवयु जोइए महापुरुषोए परोपकारनो उपदेश आप्यो छे, पण आपण कोईना आपणा ऊपर परोपकार इच्छवो न जोईए, एवी मनोदशा आपणी थाय तो आपणा हाथे अनीति, अप्रामाणिकता क्दीये न थाय ते माटे आयानुसारी व्यय नक्की करीने जीववु जोईए जे मळे तेमांज सतोष मानवो जोइए जेना विना जीवन जीवी शकाय नहि तेवी वस्तुओ माटे जे कई व्यय करे ते असद्व्यय नथी, पण जेनी जीवनमा जरूर नथी तेना माटे दुरुपयोग करवो ए मोटामा मोटो अनाचार छे पहेलो आटलु बने तो बीजो सदाचार आचरवो सहलो बने अनेक जातना पापथी पैसो मेळववानी प्रवृत्ति ए पाप छे महापुरुषोए पैसो मेळववानु मूकीने छोडी देवानु कह्यु छे ते गाडपण नथी, पापथी मेळवेलो पैसा एना विना जीवनमा हरकत आवे तेम नथी तेवी वस्तुओमां माणस केवी रीते खर्ची शके?

माणसाईनु लीलाऊ छे—

आय देशमा पैसो पापथी मेळववो पडे छे ते वात समजाववी नहि पडे नोकरी करीने पैसो मेळवनार पण पाप करे छे, कारण के शेठनी आज्ञाथी अेने घणु न करवानु काम पण करवु पडे छे डाह्या माणसोअे हमेशा हाथमा पैसा आवे त्यारे विचार करवो जोईअे के पैसो आव्यो क्याथी? भले पैसो प्रामाणिकपणे आव्यो होय, छता अे वात चोक्कस समजजा के ते पैसो कोई अनिष्टद्वाराज आव्यो हशे अनीतिथी मेळवेलो पैसो रेतां हाथ कपवो जोईअे, रेवु समजवु जोईअे आ पैसानो उपयोग जीवन जीववामां जे वस्तुनी जरूर नथी ते माटे करवो अे माणसाईनु लीलाऊज छे

आवा माणसोअे देशनी हवा बगाडी छे——

आजना मध्यम वर्गमां भयकर बेकारी चाले छे ते शामाथी जन्मी छे? एकली रोटलानी इच्छामाथी ते जन्मी छे शु? आ देश जाणे छे के जेमा माणसने रोटलानी भूख वेटवी पडे तेवो काळ हजु नथी आव्यो आ देशमा हजु पण अे मानवता जीवत छे के भूख्यो माणस खरेखर भूख्यो छे तेवी खबर पडे तो आ देशमाना भयकरमां भयकर माणसने पण भूख्या माणसने कांइक पण आपवानी भावना जागेज छे मोनमां पहेला माणसने तो जेटलु मळशे तेटलु पण थोडु लागशे आजना धनाढ्यो पण पूरु थतु नथी एवी फरियाद करे छे घरनी स्त्रीओ पण दरज्जा प्रमाणे मागे जाय छे, अने जेमणे बुद्धि वेची नाखी छे ते दोधज जाय छे केटला पापथी आवेलो पैसो आम वपराय? ज्ञानीओअे बांधेला रस्ता प्रमाणे तेनो व्यय थवो जाइअे जो आम थाय तो आर्य देशमा कोई उपाधि नथी, पण आ दरज्जाना भूखे तो तमने नीति आदिथी परवारी दीधा छे तमे जे रीते पैसानो उपयोग करवा माड्यो छे तेथी रोगो वध्या छे, देशनी हवा बगडी छे

असद् विचार अने वर्तनथी देशनी दशा बगडे छे आज केटकेटला रोग पेदा थाय छे ! ए असद्‌वर्तनुं परिणाम छे

भाणे नहि पण भटकी खानारा—

आपणे त्यां आजे भाणे बेठी खानारा नहि, पण भटकीने खानारो वर्ग छे हॉटेलो अने रेस्टोरन्टो जोइने मने एम थाय छे के आटला बधा भटकता भूख्याओ नीकळ्या छे क्याथी ? पूर्वकाळमां पेट भरीने खाता हता, कारण के ए लोको जीववा माटे खाता हता, जीभने स्वाद आपवा माटे नहीं त्यारे आजे लोको स्वादने कारण खाता थयाय छे तेमने परवडुं पण भावतुं नथी, ने ए रीते अनद्दभ्यय एटले वधो नथी थयो छे के थाडुं थोडुं ने सर्वो पणो आ रीते विचार कराने तमे सर्वो करा तो अडधो खर्च आपोआप घटी जाय अमदावादमां पणो मोटा भाग घरबारवाळो छ ओम कहे छे, तो पछी तेओ घर बहार खाय शा माटे ? तेमनी धर्मपत्निओने रसोइ नथी आवडती ? ये नाना बापीने चहाना कोठिया पीनारा मूछा पास्या क्याथी ? व रोटला खाइने जीवनारी जात के कप चहाना प्याला पीने रस्ताका पीती गइ छ आ सर्वो जेदने पोषाय छ क्याथी ! लोकोना अग उपर पण जोइओ तेटलुं कापड छे आ बधु आवे छे क्याथी ? जे आ काळमाथी आवे छ ! लाखो अनीतियी मेळववा दोरा गया छे आ असद्‌व्यय नीकळी जाय तो आवक वधे अने सर्वेय घटी जाय बीडी, सिगारेट वगेरे चीजो पण स्वागत करवानी नथी पण ए तो फजेती छे

स्थाने सत्‌क्रिया—

सामान्य माणसोए एटलो सर्वो राख्यो छे के तेमनुं आवकनुं पाणु मळे तेम नथी, अने तेना माटे घणुं नाइ जरतु करवुं पडे छे उपमां अने स्वमाना एम ए जने जेन आवे छे जे धनाढ्य छे तेमनो खर्च मोटो होवा छतां तेमनी पाछे संग्रह थयो रहे छे आ संग्रहखोरी जे पाप छे जे लोको

आरक्षाथी बचावता होय तमना माटे "स्थाने वैराग्यिका" ओ उत्तम सदाचार छे पन ब्धना स्थान तमने बतव्या छे। आ देशना आर्यधकार पामेलाने नवा स्थान दीन, दांडी के अनाथनी सेवा माटे जडी आवशे. आजे कमनसीबे लोको माने छे के अनीति ओ पाप छ्ज नहीं अनीति अने सता प्राप्त जेवी थइ गई छ वहुवा आर देशमां लोकोने जीवनो स्वाद ओछो हतो, माटे "स्थान वैराग्यिका" शुरु हती आज देशमां तेमना माथे दर हतो, जेमना जीवनना दर, धन, सधर्मीभाव, दीन, दुःखी वगेरे वधा तेमना माटे व्यवस्था स्थानका हता आजे स्थाने व्यय करता जगाने वधी गया छे

आज मानवीओने धर्म छोड्या छे, कर्मो छोड्या छे, पाप छोड्या छे, देव छोड्या छे ने जगता बधा मायाने वेठा छे

पापनी कमाणी शेना माटे—

तमे कमाणी शाथी करो छो? पहेलानी सरकार तो न्होती जाणती, पण आजनी सरकार तो तमारी छे, अने तमे तेना तमारा एजाभान घणुं थाय, रीते थाये छे, बल्के के काश तमो रक्षाया विना रहेवाना नथी, पछी आ काळमां धणुं शा माटे कमावु? हेतु शुं? कमावु पछी ने कर भरवो नहि ते केम चाले? ते माटे तो बीजे रस्तो लेवु जोइओ जही थवानो नथी, नहीं तो हुं तो तमने पण कहुं छुं के तुरत तमारी शक्ति रोकाई नथी आजनी काले बधा धारीनु तो तमने बगाडी मूक्यो छे भूखी थाये छे, तेना नगराळा, धन राखनारा, बहु बाळनारा, ग्रामगवाळाओ अने दुःखीओ सुधार आवशे, सेवाभावी माटे आ स्थान नवा हुन्नर स्थापनी पर रीत पडी छे के कोई देश नीकर ना कर भरवा छतां तमारी सरकार छे अम हुं मानतो नथी जूना काळना प्रजाने रोजे हुं न आवतु के ज्यारे राजा हारी जाय त्यारे तो पकडाइ जाय

दुस्मननोय हृदयपलटो थाय—

हिंदनी ४० करोडनी वस्ती खेती-प्रधान बने तो जरूर दुस्मन हृदयपलटो थई जाय साची भावनाओथी दुस्मनोनी दुस्मनावट पण च्चा जशे आटलो सदाचार जे दिवसे आवशे ते दिवसे हुं आ जुग आ देखीश ! मारो हेतु तमारु मानस फेरववाना छे माटे युगपरिवर्तन करवु होय तो कल्पनाना घोडा दोडावता बध करी महापुरुषोए कहेला मार्गे आगळ वधवु जोईए

—०ο—

-[व्याख्यान २]-

आ काळनी ए बलिहारी छे के लोको अति निंद्य वस्तुना व्यसनी बन्या छे

—००००००✿००००००—

(प्रेमाभाई हॉल, अमदावाद रविवार ता २०।८।५१)

मोजशोख क्यारे मरे ? —

अनंतकाळमां महापुरुषोए अति दुर्लभ एवा मनुष्य जन्मनो परमादर्श परमपदने सिद्ध करवानो प्ररूप्यो छे, अने ए हेतुथी आत्माने परमपदनी साथे योजी आपे तेनु नाम योग, ते योगनी जे कक्षा आपणे वर्णवी गया छीए ते कक्षाए पहोंची शके तेवा जीवो केवी स्वभावसिद्ध योग्यताने धरनारा होय अथवा एवी योग्यता केळववा कदा कया गुणोने अेणे मेळववा जोईए, तेनु वर्णन करतां आपणे जोयु के, ते गुरु देवादिनो पूजक होय, अने बीजा गुण तरीके ते सदाचारी होवो जोईए सदाचारनु वर्णन करता चौद सदाचारो उपर आपणे विचार कर्यो, अने

तेमाथी छेल्लानु मर्दन गई वखत आपणे करी गया, अेना पाया माटे, न्यायानुसारी नीति मानवी स्वीकारी छे तो, योग तो मळवानो होय त्यारे ज मळे, पण ए अेना जीवनमा अेवी सारी रीते जीवी शके के मरती वखते एने परलोकनी चिंता करवी न पडे, अने आ लोकमां अे अेवा आनदथी जीवे के कोई सुखीने जोई तेने ईर्ष्या पेदा न थाय, ने गमे तेवी स्थितिमां ते मूकाई जाय तो पण तेनामां दीनता न आवे, जे अेटलु समजतो होय के जे पुण्यना बळने लीधे जन्म पाम्या छे ते पुण्यना प्रमाणमांज अेने मळशे, टूकमां अे महासतोषी बनी जाय छे, अने अेना मोजशोख मरी जाय छे

आवो मनुष्य असद्‌व्ययी होतो नथी, ने पछी पुण्यनो योग होय तो ते "स्थाने चैतत्" नो सदाचार आचरे आवक प्रमाणे जीववावाळो, ने मळेला धननो योग्य उपयोग करवावाळो ते होय आवो मानवसमाज बने त्या तेमा दु खनो अश पण रहे खरो ? आवी स्वभावसिद्ध योग्यता आप णामा न होय तो ते पुरुषार्थ करीने मेळववी जोइअे प्रामाणिकपणे महेनत करता ज मळे तेमां जीववु अेज साचो पुरुषार्थ छे अति लोभीने बधी अनु कूळता होय तो ते अति मोजशोखवाळो होय छे स्थाने धननो व्यय करवामां तो तेओ धननो व्यय समने छे

"लोकापवादभीरुत्व" अे पहेलो सदाचार छे—

आ सदाचार बहु उपयोगी छे घणी वार एवा घणा सारा कामो करवा जेवा होय छे के जे अज्ञानी लोकोने गमता नथी होता, छता ज्ञानीओने जे काय आ लोक अने परलोकना हित माटे होय तवा कार्यो लोक विरो-धमा होय छता पण करवा अेम जणाव्यु छे लोकनी शरममा पडीने तमे तमारा रोजदा जीवनमा पण न करवा जेवा केटला कार्यो करो छो ? उदा-हरण तरीके वम महेमानने स्वागतमां कन्टेड दूध आपो ते योग्य छे, पण सिगारेट धरो ए स्वागतनी चीज छे! लोकरुचिने वश थवानी जे आ टेव छे ते सदाचार नथी बहु अज्ञानी लोकोनी बहु परवा कर्ये चाले नहि,

दुस्मननोय हृदयपलटो थाय—

हिंदनी ४० करोडनी वस्ती खेती-प्रधान बने तो जरूर दुस्मननो हृदयपलटो थई जाय त्यारे भावनाओथी दुस्मनोनी दुस्मनावट पण चाले जशे. आटलो सदाचार जे दिवसे आवशे ते दिवसे ज आ जग आवे रहेशे ! मारो हेतु तमारु मानस फेरववानो छे माटे युगपरिवर्तन करवु होय तो कल्पनाना घोडा दोडावता बंध करी महापुरुषोए कहेला मार्गे आगळ वधवु जोईए

—oo—

-[व्याख्यान २]-

आ काळनी ए बलिहारी छे के लोको अति निंद्य वस्तुना व्यसनी बन्या छे

(प्रेमाभाई हॉल, अमदावाद रविवार ता २०।८।५१)

मोजशोख क्यारे मरे ? —

अनंतकाळमां महापुरुषोए अति दुर्लभ एवा मनुष्य जन्मनो परमार्थ परमपदने सिद्ध करवानो फरमाव्यो छे, अने ए हेतुथी आत्माने परमपदनी साथे योजी आपे तेनु नाम योग, ते योगनी जे कक्षा आपणे वर्णवी गया छीए ते कक्षाए पहोंची शके तेवा जीवो केवी स्वभावसिद्ध योग्यतावाले धरनारा होय अथवा एवी योग्यता केळववा कदा कया गुणोने अंगे मेळववा जोईए, तेनु वर्णन करतां आपणे जोयु के, ते गुरु देवादिनो पूजक होय, अने बीजा गुण तरीके ते सदाचारी होवो जोईए सदाचारनु वर्णन करता चौद सदाचारो उपर आपणे विचार कर्यो, अने

रेमांथी छेल्लानु वर्णन गई वखत आपणे करी गया, अेना पाया माटे, आयानुसारी नीति मानवो स्वीकारी छे तो, योग तो मळवानो होय त्यारे ज मळे, पण ए अेना जीवनमा अेवी सारी रीते जीवी शके के मरतां वखते पने परलोकनी चिंता करवी न पडे, अने आ लोकमा अे अेवा आनंदथी जीवे के कोई सुखीने जोई तेने इर्ष्या पेदा न थाय, ने गमे तेवी स्थितिमा ते मूकाई जाय तो पण तेनामा दीनता न आवे अे अेटलु समजवो होय के जे पुण्यना बळने लीधे जन्म पाम्या छे ते पुण्यना प्रमाणमाज अेने मळशे, टूकमां अे महासंतोषी बनी जाय छे, अने अेना मोजशोख मरी जाय छे

आवो मनुष्य असद्व्ययी होतो नथी, ने पछी पुण्यनो योग होय तो ते "स्थाने चैतत्" नो सदाचार आचरे आवक प्रमाणे जीववावाळो, ने मळेला धननो योग्य उपयोग करनावाळो ते होय आवो मानवसमाज बने तो तेमां दुःखनो अंश पण रहे खरो ? आवी स्वभावसिद्ध योग्यता आपणामा ज होय तो ते पुरुषार्थ करीने मेळववी जोईअे प्रमाणिकपणे महेनत करतां ज मळे तेमां जीवनु अेज साचो पुरुषार्थ छे अति लोभीने कदी अनुकूळता होय तो ते अति मोजशोखवाळो होय छे स्थाने धननो व्यय करवामा तो तेओ धननो व्यय समजे छे

'लोकापवादभीरुत्व' अे पहेलो सदाचार छे—

आ सदाचार बहु उपयोगी छे घणी वार एवा घणा सारा कामो करवा जेवा होय छे के जे अज्ञानी लोकोने गमता नथी होता, छतां ज्ञानीओअे जे कार्य आ लोक अने परलोकना हित माटे होय तेवा कार्यो लोक विरोधमा होय छतां पण करवा अेम जणाव्यु छे लोकनी शरममा पडीने तमे तमारा रोजदा जीवनमा पण न करवा जेवा केटला कार्यो करो छो ? उदाहरण तरीके तमे महमानने स्वागतमां कढेलु दूध आपो ते योग्य छे, पण सिगारेट धरो ए स्वागतनी चीज छे? लोकरुचिने ताबे थवानी जे आ टेव छे ते सदाचार नथी बहु अज्ञानी लोकोनी बहु परवा करवे चाले नहि,

सिनेमानी लते सर्जायेली पायमाली—

न जोवानु जोवामा पण प्रमाद छे नाटक, सिनेमानी तो आ जमा नामा वातज शी करवी ? आज काल नाना नाना टेंळीया बहार नीकळे है त्यारे जे जे गीतो बोले छे ते बोलता मने पण शरम आवे छे, न आवा स्थाने सगो बाप दीकराने लइने जोवा बेसे छे आ महा प्रमाद छे ओ सिनेमाओ लाखोना खर्च बने छे तेमा भणेलाओ द्रव्यनो व्यय नथी जोता, पण तेने बदले जो त्या मदिरनी वात करी होय तो ? फिल्ममा आप ळाओ–हैयाना नाचळाओ जे स्परश जुवे छे तेने घरमां लावरानु इ छे है, पण जेमना कोडीया जेवा थपाठमा नाचनारी, गानारी अने स्याळी चायडी क्यायी होय ? अेटले अेमना दिवस अने रात केवा पसार थता हसे तेनो विचार करो आम क्षय रोगनो वधारो थतो जाय छे वळी फिल्मोनी जे जाहरातो ने चित्रो चौटा चच्चे टिंगाळे छे तेनी तो वात ब शु करवी ? अने कायदो आने रखे छे आटला आटला उपदेशोथी अेमने ऊची वधा प्राप्त नथी करी तेओ शु सिनेमामाथी ऊची भावना लईने पाछा आववाना छे ? वळी आ चित्रो स्त्री–पुरुषो साथे जोवा जाय छे, ने पडदा पर चालतु नाटक जोइने हसे छे आ अनर्थता ने अनाचार आव्या क्यायी। आतो नयों अनाचारनो अखाडो छे

आंखनो सयम—

पहेला अेवी शरम हती के रस्ते गमे तेवी देवी जेवी स्त्री चाली जती होय तो पण ऊची आखे तेनी सामे कोई जुवे नही लक्ष्मण सीतानो दाखलो तमे जाणो छो ? लक्ष्मणजी सीताना कुडळने के कंकणने नहोता जाणता, पण जाणता हता मात्र अेमना पगना नूपुरने, कारण के अेने कदी सीता सामे ऊची नजरे जोयु न हतु आमा आखनो सयम छे त्यारे तमे तो आख फाडी फाडीने जुओ छो आर्य देशना सस्कार तो कहे छे के स्त्री पुरुष सामे न जुवे ने पुरुष स्त्री सामे न जुवे

दिलनमां आ उचरावे ! वारवार स्व रस जोइने तमारु हेतु विचार पूर्वी अनुसरवु ! तमे तमारा बाळकने जे पीठे केळवनी पाओ छो ते जोता तो ते तमने जुर्तीए ने जुतीए मारे तो पण मने नवाई न लागे जेमतेम लाडावामां अनाचार शीखवो छो, अने तेनी पाछळी तमे सदाचारनी आशा राखो छे ! आ तो नर्युं बुद्धिनु प्रदर्शन छे आठ आठ आठ वरसना नाना बाळको दिपयनी नसाबमा खराब चेष्टा करता थई गया छे पछी मसहित ब्रह्मचर्य अध्याय क्याथी ! ने उमरे पहोंचना पहेला तो तमना शरीरनु बधु धन वेराई जाय छे आ बधु प्रमादना त्यागमा समाई जाय छे अने आ देशमां हितप्रवृत्ति मानी छे, तेने ज्ञानीओए प्रमादना समावी दीधी छे जे माणसने विषयमा ने कषायमा रमतो बनावी दे छे तेयो आ महा प्रमाद छे

सोटा लोकाचारने वश न थाओ !——

लोकाचार ज्या लगी दमपोषक न हुमाईने आचारवनारो न होय त्या सुधी अनुसरवो जोईए, लोकोमा जे काई सारु होय तेनाथी दूर नहि बनु जोईए न आपणने हानि करे हेतु न होय तेने अनुसरवु, अने ज्ञानीओ सदाचार करे छे लोकोने राजी करवा ज्याजरी नथी जो शक्ति होय तो प्रसंग पामीने पण कोईने सरदावीने ते गुण छे, पण लोकदष्टिमा पडीने मन संग करीने सबदावतु के लोकना आचारने वश थइने करवु तेमां सदाचार नथी

सर्वत्र औचित्य वर्तन--

आ सदाचार छे पूपग पण आपणे त्या दातार बनी शके छे. जे कोई मागनार आवे ने मागनार योग्य माने तो "आपवानी ताकात होय ने न आपीए ए अनुचित छे" एम मानीने आपनार कारण पण छतरे तो दातारज छे बडीज के दुश्मन सामा मळे तो पण एक सरखो व्यवहार होवो जोईए दुश्मन घेर आवे त्यारे हैयामां गमे तेवा मार होय, परतु तेमनु स्वागत करवु जोईए एज धर्म छे, आजे आ औचित्य वधु छे.

સિનેમાની લતે સર્જાયેલી પાયમાલી—

ન જોવાનુ જોવામા પણ પ્રમાદ છે નાટક, સિનેમાની તો આ દશા નામા વાતજ શી કરવી ! આજ કાલ નાના નાના ટેંણીયા વદાર નીકળે છે ત્યારે જે ગીતો બોલે છે તે બોલતા મને પણ શરમ આવે છે, ને આમ ત્યાને સગો બાપ દીકરાને લઇને જોવા બેસે છે આ મહા પ્રમાદ છે જે સિનેમા લાખોના રત્નો બને છે તેમા ભણેલાઓ દ્રવ્યનો વ્યય નથી જોતા, પણ તેને બદલે જો ત્યા મંદિરની વાત કરી હોય તો ! ફિલ્મમા આર્ય બાઓ–દૈયાના આધળાઓ જે સ્મરણ જુએ છે તેને ઘરમાં લાવવાનુ ઇચ્છે છે, પણ જેમના કોડીયા જેવા કપાળમા નાચનારી, ગાનારી અને ત્યાગી ચાયડી ક્યાથી હોય ! એટલે જેમના દિવસ અને રાત વેવા પસાર થતા હશે તેનો વિચાર કરો આમ ક્ષય રોગનો વધારો થતો જાય છે અને ફિલ્મોની જે જાહેરાતો ને ચિત્રો ચોટા વચ્ચે ટિંગાળે છે તેની તો વાત શુ કરવી ! અને કાયદો થાને રહે છે આટલા આટલા ઉપદેશોથી જેમને ઊંચી કક્ષા પ્રાપ્ત નથી કરી તેઓ શુ સિનેમામાથી ઊંચી ભાવના લઇને પાછા આવવાના છે ! વળી આ ચિત્રો સ્ત્રી–પુરુષો સાથે જોવા જાય છે, ને પરદા પર ચાલતુ નાટક જોઇને હસે છે આ અનર્થતા ને અનાચાર ગાવ્યા ક્યાથી આતો નર્યો અનાચારનો અખાડો છે

આંખનો સયમ—

પહેલા જેવી શરમ હતી કે રસ્તે ગમે તેવી દેવી જેવી સ્ત્રી ચાલી જતી હોય તો પણ ઊંચી આંખે તેની સામે કોઈ જુએ નહી લક્ષ્મણ સીતાને દાસલો તમે જાણો છો ! લક્ષ્મણજી સીતાના કુંડલને કે કકણને નહોતા જાણતા, પણ જાણતા હતા માત્ર જેમના પગના નૂપુરને, કારણ કે એને કદી સીતા સામે ઊંચી નજરે જોયુ ન હતુ આમા આંખનો સયમ છે ત્યારે તમે તો આંખ ફાડી ફાડીને જુઓ છો આર્ય દેશના સસ્કાર તો કહે છે કે સ્ત્રી પુરુષ સામે ન જુએ ને પુરુષ સ્ત્રી સામે ન જુએ

फिल्ममां आ रुचराचो ! वारवार रूप रग जोईने तमारु हैयु विकार नथी अनुभवतु ! तमे तमारा बाळकने जे रीते केळवणी आपो छो ते जोतां तो ते तमने जूतीए ने जूतीए मारे तो पण मने नवाई न लागे जेमतेम व्रह्मचर्य अनाचार पोषतो छो, अने तेनी पासेथी तमे सदाचारनी आशा राखो छो ! आ तो नर्यु बुद्धिनु प्रदर्शन छे आजे आठ आठ वर्षना नाना बाळको विषयनी लागणीमा खराब चेष्टा करता थई गया छे पछी अखंडित ब्रह्मचर्य जळवाय क्याथी ! ने उमरे पहोंचता पहेला तो तेमना शरीरनु बधु धन वेराई जाय छे आ बधु प्रमादना त्यागमां समाई जाय छे जेने आर्य देशमा हितप्रवृत्ति मानी छे, तेने ज्ञानीओए व्यसनमा समावी दीधी छे जे माणसने विषयमा ने कषायमा रमतो बनावी दे छे तेवो आ बधो प्रमाद छे

लोक लोकाचाराने वश न थाओ !—

लोकाचार ज्या लगी दभपोषक ने लुच्चाईने आचरावनारो न होय त्या सुधी अनुसरवो जोईए, लोकोमा जे काइ सारु होय तेनाथी दूर नहि जवु जोईए न आपणने हानि करे तेवु न होय तेने अनुसरवु, अने ज्ञानीओ सदाचार कहे छे लोकोने राजी करवा ज्यानरी नथी जो शक्ति होय तो [illegible] पामीने पण कोईने समजावीए ते गुण छे, पण लोकरूढिमा पडीने [illegible], कराने उनडावयु के लोकना आचारने वश थईने करवु तेमा [illegible]

उचित औचित्य वर्तन--

आ सदाचार छे कृपण पण आपणे त्यां [illegible] थई शके छे [illegible] कोई मागनार आवे ने मागनार योग्य मागे [illegible] ज्ञानी [illegible] होय ने न आपीए ए अनुचित छे " एम [illegible] कृपण [illegible] वटे तो दातारना छे वडील के दुश्मन [illegible] व्यवहार होवो जोईए दुश्मन घेर आवे त्यारे [illegible] रवु तेमनु स्वागत करवु जोईए [illegible]

योगनी पूर्व भूमिकामा जे चार गुण कह्या छे तेमांनो पहेलो " देवाधि देव पूजन "ने बीजो " सदाचार " आपणे लगभग पूरा कर्या छे, पण तेमा छेल्ले घणी उतावळ करी छे आपणे जे ११ सदाचारो गणी गया ते तमने सौने याद छे ? जे गुणे तमारे जीवनमां जीववु छे तेनी आने आ दशा होय तो तेने मूकीने गया पछी शी वले थशे ? तमारे याद राखवा जेवी वात याद राखवानी तैयारी क्याथी आवशे ? आपणे अेवी जातिमा, कुळमां अने अेवा देशमां ज क्या छीए के आपणा शास्त्रोअे दर्शा- वेला मार्गे आपणे चाल्वु जोईअे नास्तिकमां नास्तिक माणस परलोकने ना मानतो होय छता पण जो ते सदाचारनु आचरण करे तो काई वांधो खरो ? अने तेमां कयु गुमाववानु छे खरु ? जे आचारो ज्ञानीओअे योगनी पूर्व भूमिकामा समजाव्या छे ते एवा छे के जे जीवे ते घणी उपाधिमांथी छूटी जाय

धधामा चोरी अने जुगार—

" सदाचार " मा आपणे छेल्ले कठे प्राण आवे तो पण गर्हित प्रवृत्ति न करवी तेमां सात व्यसनना त्याग विषे आपणे विचार्यु तेमाना छेल्ला बे " वेश्यागमन अने परस्त्रीगमन " जीववानी साची लायकातवाळामा तो होवाज न जोईअे, अने आवा पुरुषोने जुगारनी जरूर नथी होती, चोरीनी आवश्यकता नथी, तेनो खर्च आवक प्रमाणे होय छे, अने माथ अने शिकार तो तेमना मने वर्ज्य छे, शाहुकारना वेषमां बेठी जो चोरी करे तो दुनीया विश्वास कोना उपर करशे ? पण तमो धधो अेवो करवा माड्यो छे के चोरी कर्या विना छूटको न थाय, अने आवा लोकोने वळी आराम माटे मदिरा जोईअे, वळी धधामा जुगार घुस्यो छे जुगार ने अेवी जातनो धधो छे के माणसने चोरी पण करता शीखवे वळी तमामा धधो एटलो बधो अस्तोरी बनी गयो छे के धधामां चोरी स्वाभाविक बनी गई छे, ने पछी आराम माटे मदिरा आवी ज छे सदाच

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] छे के [illegible] आवी [illegible]
बताई न [illegible], ते [illegible] [illegible] छे

वेश्यागमन अने परस्त्रीगमन—

[illegible] [illegible] ' [illegible] ' [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] छे के [illegible] छे [illegible] नथी, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] छे ! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] छे अने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] छे [illegible] अने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

सहशिक्षण अनर्थकारी—

आ देशमां [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

कराव्यो ? तेमने शु मनावें सदाचारी कल्पी लीधेला ! जेमना छोकरा मोटे छे, तेमना मा-बाप जीवे छे तो खराने ? तेमने तेमना अनुभवो, तेमना अंतःकरण के स्थितिनी खबर छे खरी ? हु आथी विशेष शु बोलु ! छोकरो हो हजु विन अनुभवी छे तेमने खबर नथी अेम मानीने आपणे चालीअे, पण तेमना मा-बापो तो पोतानी जातने सारी रीते जाणे छे ने ? समजवा छता जे मा-बापोए आ स्थितिने अवकारी छे तेमां तेमनो इरादो शो हशे ? खुल्लु शु कहु, इशारो बस छे ! आवा सबधमां मानवजात केटली नीचे उतरी गई छे आ विषे कांई कहेवु नकामु छे, तमे मजारमां फरनारा छो, रातना बार वाग्या लगी बहार रहेनारा छो आ देशना महापुरुषोअे मानवजातनो उद्धार करवा साधुओ जेवाज कायदा तेमना माटे कर्या छे जुना जुममा वडीलोने क्यां जाउ छु अे कह्या विना कोई पण बहार न जइ, आवी मर्यादाअे गृहस्थमां पण सदाचार जीवतो ने जागतो राख्यो हतो, अने आजे ? बहारथी मोडा आवता पुत्रने पिता कारण पूछे तो पुत्र पेलु नीतिनु सूत्र समजावे छे के " सोळ वर्षे पुत्र मित्र समान छे "

प्रेम आत्मानो के शरीरनो ?

वळी आजे सिनेमानो युग छे तमारा अंतरमा उतरीने तेमां चालता चित्रनेज जुओने ? सिनेमामा काम करता माणसो नीतिमान् छे खरा ? तो पछी अेने जोवाथी शु कल्याण थवानु छे ? आथी तो अंतर् मलिन बने छे आ सदाचार आवी जाय अने आ मर्यादा अकाइ जाय तो जगतनु महाकल्याण थई जाय परिणीत स्त्री-पुरुषे (पतिपत्नीअे) अेवी मर्यादित रीते जीववु जोईअे के तेमना उपर विषय सवार न थई जाय तमे आत्माना प्रेमी छो के शरीरना ? जेओ आदर्श प्रेमनी वात करे छ तेओ शरीरना रूपरगना के शरीरना प्रेमी होय तो त आदर्श प्रेमी खरा ? ने वळी पाछा कहेछे के " प्रभुतामा पगला माड्या छे " आ बधा बेवकूफना सरदारोज भेगा थया छे ने ? दांपत्यजीवनमा पण विषयनी वासना न जागे ते रीते

ऊठे, बेबे ने परस्परना स्पर्श परस्पर न थुंभे, पण आजे तो पाठा बटनमा चोटा रासीने फरे छे आ ते काइ युग छे आ केम चाले ! नाना बच्चा तो मा-बापने ताबे छे, तेमना माथे कई जवाबदारी छे खरी ? दरेक कहे छे के मारी बुद्धिने सूझे तेम कर तो कान पकडीने कहेवु पडे के आम न थाय ! आजे जे आ बधु टल्ल ऊभु थाय छे ते सहशिक्षण आदियी थयु छे, ने तेमाथी तमारा बाळकोने बचाववा जरूरी छे

सदाचार उपर दावानळ—

खातमा व्यसनथी बचेला केटला भाग्यशाळी हशे ? छेवटे चेनचाळामाथी बचेलाय केटला हशे ! टरुशादार सारा कपडा पहेरी चाले तो तमने छोको सदाचारी कहेशे ? के मानी लेशो ? तमे अेम मानो छो के रामायणनो रावण तमारा करताय खराब हशे ! रावण सीताजीने उठावी लाव्यो हतो ते केवा प्रसगे उपाडी लाव्यो हतो, कई रीते ते जीव्यो, केटलु दुःख ते पाम्यो तेनो शास्त्रोमां मोटो चितार आप्यो छे आजनी सामग्रीओ जगतमा केटलो भ्रष्टाचार ऊभो कर्यो छे के, तमने स्त्री पुरुषोना सबधमा वाधो लागतो नथी परस्पर मळवामा दोष न जोवाय ते सदाचार उपर दावानळ सळगाववा जेवी वात छे माटे खातमा व्यसनथी बचवा बहेन, दीकरी के सबधी तरफ जेवो सद्भाव राखो छो तेवो सद्भाव जगतनी तमाम स्त्री प्रत्ये राखता थई जाओ !

भणवा राखजो पण सहशिक्षण न अपावशो !

हमणां हमणा ढाझा मायलो छोकरीओने स्टेज उपर नचाववा माडी छे ने ते नाच मा-बापो जोवा जाय छे मने लागे छे के छट्ठो आरो तमारे नजीक लाववो छे आगळ नृत्यकला हती परतु शिक्षको पडदामा राखीने कन्याने शिक्षण आपता अने तेनो उपयोग स्त्रीओ मात्र पोतना पति अने भगवान् सामेज करती गमे त्या अने गमे ते

रीते नाचीने ऊभी न रहेती आजे तो सदाचारीओ–तमे आ जुओ छो त्यारे तमारा हैयामा तमने काई नथी थतु ? पोतानी दीकरी हजारो वच्चे नाचे ने मा-बाप ते जुवे ते केवु लागे ? मारे पूछवु छे के कया शुभ हेतुथी तमे आ करो छो ? मारु तो जे कहेवु छे के अनार्य देशना सस्कारो अहीं चालवा लाग्या छे पण आ बे देश वच्चेना सस्कारोमा घणो ऊंडो तफावत छे माटे मारी तो तमने सलाह छे के थई गई ते वात गई छोकरा जभण रहे तेनी चिंता न करशो पण सहशिक्षण मेळववा न मोकलशो आजना युगमा छोकरी मोटी थइ मातानो काम लागती नथी, मोटो छोकरो तेना बापने काम लागतो नथी, धणी मादो पडे त्यारे धणियाणी तेनी चाकरी करती नथी आ बधी अनार्य देशनी छाया छे, ने सहशिक्षणना आ अनिष्टो छे आर्य देशमा जन्म्यानु गौरव होय अने तेना सस्कारनी उच्चता तमे समजता हो तो तमारा मनने समजावो अने सुधारजो ! शास्त्रोमे तो कह्यु छे के दीकरी साथे पण एकात न सेववो, कारण के अदर बेठेलो शेतान जागे त्यारे सामे कोण ऊभु छे ते भूलाई जाय छे परस्पर आगळी पकडीने न चालो ! कामनी मर्यादाने तो जरा जुओ ! राम वनवास गया त्यारे राम आगळ, सीता पाछळ ने लक्ष्मण सौथी पाछळ चालता, आ तेमनो आचार हतो ! पण तमे तो एवा सदाचारी छो के तमने शेताननो भय नथी

सदाचार माटे चोकी जोईओ—

त्रीजा अने चोथा गुण उपर आर्य देशनो घणो मदार छे आ गुण आर्यदेशमा घणी सहेलाइथी पाळी शकातो हतो जेनामा खोटी मोटाई छे ते सदाचारने नहि पाळी शके शास्त्रोए तो अमने–साधु पुरुषोने पण कह्यु छे के बहार जाओ तो बे जणा बहार जाओ ! अने ज्या अमे आ नियमनु उल्लघन कर्यु छे त्या अमे मार खाधो छे तो पछी तम तो अमारा करता वधु उच्च मना ने ? पण तमने माथे धणी गमतो नथी ऐ[illegible] नियम

माटे रखडती बने छे, तो तमे बधा पाप माटे रखडता बन्या छो शाक लेवा माटे मोकलेलो नोकर पण बे पैसा खाधा विना पाछो न फरे अेवी तो आ युगनी बलिहारी छे सरकारी खाताओअे हिसाब माटे वाउचर राख्या छे पण वाउचरमाय केटला चोर पड्या छे ! सारा माणसोअे पण कहेवु जोईअे के मारे सारा रहेवा माटे मारा माथे धणी होवो जोईअे, मारा माथे चोकीदारी होवी जोईअे, सदाचार माटे चोकी जोईअे, धणी जोइये, नहि तो ते सिवाय नहीं जीवाय

महान् गुण पापभीरुता—

त्रीजो गुण छे तप आ देशमा मानव अेटलो पापभीरु हतो अने आर्यो अेटला पापभीरु होवा जोइअे के तेमनाथी पाप थइ जाय तेवा सौथी ते आघा रहे, ने जो भूलथी पण पाप थई गयु होय तो तेनु प्रायश्चित्त लेवानो तेनो स्वभाव होय पापभीरुता ए आर्य देशनो महान् गुण छे आपणने आजे पापनो भय नथी, पण मात्र कोई जोई जाय ने वात करे तेनो भय छे आ देशमा एक काळे पापशुद्धि माटे तप चालतो, भूतकाळमा थयेला पाप माटे, वर्तमान काळमा थता दोषो माटे अने छेवटे मरणनो भय ने लागे तेना निवारण माटे लोको तप करता जेटला जन्मे तेटला मरे तो खराज, अेटले मरणनो भय टाळवो होय तो जन्मनी संभावना ज टाळवी जोइअे तपे दु ख नथी छता दु ख आवी पडे छे, त्यारे ते भूतकाळना पापाने कारणे छे तेनु तमने लागे छे खरु !

काळनु अपलक्षण—

मानवीने शहेर, शेरी, घर, बधु छोडवानु छे ने ते छोडया पछी क्या जवानु छे तेनी तमने खबर छे ! सारु कर्यु हशे तो सारी जग्याअे जशो ने खाडु कर्यु हशे तो खोटी जग्याअे जशो तो पछी माणसने अेम तो थवु जोईअे के मारा भूतकाळना पाप घणा छे, ने तेना निवारण माटे

गुण तरीके शास्त्रोने वर्णवेलु छे तेनु आचरण करवु जोईओ, आजे जे जे स्थाने जे जे माणसो बेठेला छे ते बधा आजे इरादापूर्वक पाप करनारा छे पाप आजे नथी करता मात्र अशक्तो आने लईने एक नुकशान ए मोटु थयु छे के सारा माणसोमा खोटा माणसो घणा घुसी गया छे अेकल्ले पैसो जेनी पासे होय ते सारो मनाय छे ते काळनु अपलक्षण छे नहीं तो माणस जेवी जातने हक्क विनानो एक पैसोय लेवानु मन केम थाय! कोई व्यवस्था माटे सोंपायेला द्रव्यनो दुरुपयोग करवानु मन केम थाय! कोईओ विश्वास मूक्यो होय तेनो द्रोह करवानु मन केम थाय! आ बधा पापनु प्रायश्चित्त तप करीने करवानु तमने मन थाय छे? हवे तो आ देशनी तपभावना नाश पामी छे अेक काळ अेवो हतो के आर्य देशना लोकोनु तप जोईने अनार्यो म्होमा आगळी नाखी जता, जीवनमा पेट नीकळी जाय तो कयानी गरज रहे खरी? माटे ज्ञानीओओ खावापीवाने पण पाप कह्यु छे आ देशमा एवा तपस्वीओ जीवी गया छे के जेओ जीव्या थयु ने खाधु ओछु

बाह्य अने अभ्यंतर तप—

जेनामा तपनो गुण आवी जाय तेमनामां खावानो घणो संयम आवी जाय छे ज्ञानीओओ तो कह्यु छे के मोटा भागे रोगो पेटथी थाय छे, कारण के माणस पेटमां रोग भरे छे जे दिवसोमां तपनो गुण हतो त्यारे देशनी आ दुर्दशा न हती घणा एवा माणसो छे जेमनामां तप गुण तरीके नथी आव्यु तेमने तप हेरान करे छे वधती इच्छानो निरोध तेनुज नाम तप आपने त्यां बे प्रकारना तप छे, एक बाह्य तप अने बीजु अभ्यंतर तप आ बन्नेना छ छ प्रकार छे

बाह्य तपमा—(१) अनशन तप (२) ऊणोदर तप (३) रसत्याग तप (४) वृत्तिसंक्षेप तप (५) कायाक्लेश तप (६) संलीनता तप

अभ्यंतर तपमा—(१) प्रायश्चित्त (२) विनय (३) वैयावच्च (४) स्वाध्याय (५) ध्यान (६) कायोत्सर्ग

आम बार प्रकारना तप छे. तेथी मन, वचन, काया पर काबू आवे छे. आ रीते भूतकाळमा सघळा आर्य दर्शनोमा तपना विधान हता. तपना परिणामे इन्द्रियो पण काबूमा आवती, अने इन्द्रियोनी विकार पामवानी शक्ति नाश पामती

मोक्षनो अद्वेष—

साधु पुरुषो एम कहु छे के मोक्षनो अद्वेष होवो जाइअे मोक्षनी वात कोईने करीअे तो ते पूछ ज "त्या स्त्री छे?" "सिनेमा छे?" "मोज शोखना साधनो छे?" आवा माणसोने मोक्षनो राग नहि, पण द्वेष होय छे अद्वेषनी भावनाने शास्त्रोअे योगनी पूर्वभूमिकानो मोटो गुण कह्यो छे मोक्ष पर राग भले न होय, पण द्वेष तो नहि आववो जोईअे, अने तोज मानवी उत्तम कोटिनो बनी जाय, अने योगभूमिकाप्राप्तिनी निकटमा पहोंचे

महाजनोअे मारु नाक काप्यु छे
श्री अर्जुन भगतनु निवेदन

उपर्युक्त प्रवचन बाद श्री अर्जुन भगते पाच मिनीट बोलवानी मांगणी करतां आचार्यश्रीअे तेमने समय आप्यो हतो

श्री अर्जुन भगते गायोनी कतल अटकाववा अने पोते बे उपवास कर्यां हता तेनी अने महाजनोअे तेमने जे बाबवरी आपेने उपवास ~

हवा तेनी याद आपता जणाव्यु हतु के " महाजने मारु नाक काप्यु छे, अने गोवध अटकाववा माटे हु फरी उपवासे उतरवानो छु "

" खोटी धाधलमा अमारो साथ नथी "

श्री अर्जुन भगतना निवेदननो जवाब आपतां महाराजश्रीए जणाव्यु हतु के–महाजनो एटला सबळ नथी के आवती विपत्तिने वेठवा तैयार थाय, अने अमे तो उपदेशमा माननारा छीए उपदेशथी थाय एटलु कराववु ए अमारो धर्म छे आवा लोकशासन युगमा अमारे कशु कहेवु नथी, कारण के मुत्सद्दिओने होठे कई होय छे अने हैये कई होय छे सौए नानामा नाना जीवने तेमां गौमातानो पण समावेश थाय छे बचाववाना उत्तम कार्यमां मदद करवी जोईए, बाकी खोटी धाधलमां अमारो साथ नथी

आचार्यश्रीनो जवाब—

आचार्यश्रीए श्री अर्जुन भगतना प्रवचन उपर खुलासो करता जणाव्यु हतु के आ धमधमाटनी वात छे अमारे तो सर्व जीवरक्षणनु पण छे, अने जगतना नानामां नाना जीव मानने अमारा जेवा मानीए छीए आमां गाय पण आवी जाय छे महाजने गोवध करावी प्रजाने नहि जीवाडवी जोईए, अने श्री अर्जुन भगते पोते उपवास करे त्यारे सौए सर्व प्रकारनो साथ आपवो जोईए एवु जणाव्यु हतु ज्यारे आ देशना लोको आ देशमा राज्य करता होय त्यारे देश जेने जीवदयानो धर्म माने छे, तेनी भावना पोषवी जोईए, पण राजकारण ए भयकर चीज छे आजनु राजकारण ए खटराभेदु राजकारण छे मारे राजकारणने स्पर्शी

કારણ કહ્યું ન હતું, પણ જ્યારે હું અહિં બેઠો છું ને વાત થઇ છે ત્યારે મારે એનું સ્પષ્ટીકરણ કરવું જોઇએ. બધા એક ઘરની ભાવના ભરાયલા નથી, મહાજનો એટલા સબળ નથી કે એઓ આવતી સ્થિતિને વેઠવા તૈયાર થાય. અમે ઉપદેશમાં માનનારા છીએ. ઉપદેશથી વાત ઠસાવું કરાવવું એ અમારો ધર્મ છે. પણ પ્રશ્ન એ છે કે પ્રતિબોધ કરવો કોને! આજે તો લોકશાસનનો યુગ છે. પ્રમુખ મહાપ્રધાન પાસે મોકલશે, તો મહાપ્રધાન કેબિનેટ પાસે મોકલશે, તે વળી કેબિનેટ કહેશે કે પાર્લામેન્ટ પાસે જાઓ! માટે આવા સત્કાર્ય માટે જે કોઇ ઉપવાસ કરવા તૈયાર થાય અને આ યુગમાં ભૂખને વેઠવા પ્રસન્નતા મેળવતાં નહીં જાય, તો શાણો માણસો ઉપવાસ કરે તેમાં કંઇ ખોટું નથી, આવા લોકશાસનના યુગમાં અમારે કશું કહેવું નથી, કારણ કે મુત્સદ્દીઓના હાથે કાંઇ હોય છે અને ઈશ્વર કંઇ હોય છે. હું તો એટલું કહું કે સૌએ આવા ઉત્તમ કામમાં પોતાની મદદ કરવી જોઇએ

"બાકી આવી બાબતમાં અમારો હાથ નથી"

—o—

–[व्याख्यान ४]–

राम सारा हता, माटे रामराज सारुं हतुं ! रामराज माटे राम पेदा करो !

—०००००—

(प्रेमाभाई हॉल, अमदावाद रविवार ता १।९।५१)

मोक्ष अने तेनो मार्ग—

आ आर्यावर्तनी महत्ता थाने लइने छे जे आपणे मानव जीवनमां परमार्थनी स्पष्टता करता महापुरुषोना वचनने अनुसारे स्पष्ट करी आप्युं छे जेमने मन मानवजीवननी किंमत छे तेमने मन परमपदनी साधना सिवाय बीजो कोई परमादर्श न होई शके ते सहेलाईथी समजी शकाय तेवी वात छे, अने ए परमादर्शनी सिद्धी माटे आत्माने परमादर्शनी साथे योजी आपनारो जे योग छे तेनी साधना करवानुं दिल एवा माणसने थया विना न रहे, अने एवा माणसोमां योगनी पूर्व भूमिका तरीके आपणे जे सद्गुणो वर्णव्या ते तेनामां कां तो स्वभावसिद्ध होय अने कां तो ते केळववानी तेने लगनी होय

मोक्ष प्रत्ये अद्वेषभावनावाळो आशीपरूप छे—

योगनी पूर्वभूमिकामां आपणे जे गुणोनुं निरूपण कर्युं, तेमां आर्य देषनो मानवी, भले ते बीजु काई न करे, परतु आमा ओतप्रोत थयेलो होय तो दुस्मन पण तेनी सामे आगळी चिंधी शके तेवुं तेवुं वर्तन होय नहि, वळी भले ते मो ने न समजतो होय छतां पण जो तेने मोक्ष प्रत्ये

अद्वेष भावना होय तो ते मानवी जगतने माटे आशीर्वादरूप छे, ज्ञानीओए तो कह्यु छे के-जेनामां मोक्षनो अद्वेष नथी तेनामां गुणो पण दोषरूप नीवडे छे, अने मोक्ष परनो अद्वेष दोषने पण गुणरूपे उपजावे छे ते माटे जे सदाचारोनुं आपणे वर्णन कर्यु ते स्वार्थी नहीं पण परार्थी आचारवाळा होय तो उत्तम गणाय छे. जोइओ, त्यारे घणीवार वडीलोने वंदन करनार तो आजे पण घणा मळी आवशे, परन्तु पोतानी कृतज्ञता के कर्तव्यपणे जे कोइ वडील मळ्या होय तेमना प्रत्ये पूज्यभाव देवामां बेठो होय तो ते निःस्वार्थ गुण छे

संसार असार छे—

मोक्षनी वात सांभळतां घणाने थाय छे के-स्वर्ग शुं होय छे! जेम भूख्याने खावानु, तरस्याने पाणी अने भोगभूख्याने मोज-शोख याद आवे, तेम आ भोगमां भटकी खानाराओने मोक्षनी वात आवतां तेमां पण भोग सामग्री जोईती होय छे आवी मनोवृत्तिवाळाओने ज्ञानीओए मोक्षना द्वेषी तरीके वर्णव्या छे जेमने मोक्षनी वात गमे छे, ए वात जेमना हैये उतरी छे, तेमने देव मोक्षमार्गना स्थापक होय तेवा, गुरु दर्शक होय तेवा अने धर्म पण मोक्ष नजीक लई जनार होय तेवो जोईए छे रामायणना बधा पात्रो आवा देव, गुरु अने धर्मना उपासक हता हवे प्रश्न ए छे के-आ माटे आर्य देशमा महापुरुषोए मोक्षने आटलु बधु प्राधान्य आप्यु छे! ए माटे ज्ञानीओए कह्यु छे के-संसार ए धार विनानी चीज छे, कारण के तेमां जीवने बेसवु होय तो पण तेने माटे स्थान ज नथी आनु दृष्टांत आपणे पोते ज छीए तमे विचार करो के-आ दुनियामा आव्ये आपणने केटला वर्षो थया? ने हवे केटला वर्षो रहेवाना छीए! जो तमने खरेखर खात्री हाय के पाछा जवानु ज छे, तो तमारी तैयारी पाछा जवा माटेनी होय के आगळ जवा माटेनी! जीव मात्रने सदा जीवता रहेवानी इच्छा छे मरवानी कोईनी इच्छा नथी त्यारे आ संसार एवो छे के जे कोइने सदा जीवता

ज्यां जीवमात्रने सदा जीववानी ज इच्छा छे ते कदी पण फलीभूत थई शके तेम नथी तेमने माटे आ ससार सारभूत के असारभूत ?

सारभूत वस्तु मोक्ष छे—

वळी आपणे तो जेटला बधा स्वार्थी बन्या छीओ के बीजा जीवो आपणी माफक सदा जीववा इच्छता होय ते मानवा पण आपणु निठुर तैयार नथी आपणा देशमा ' आत्मवत् सर्वभूतेषु ' नो जे आदर्श छे शु मिथ्या छे ? नाना जीव करता तो वधु बळवान् छो माटे तमो तेम नाश करो ? सहन करवा माटे पण निर्बळनो के बळवाननो होय ? बळ वाननी शक्तिनो हेतु निर्बळना रक्षणनो होय के भक्षणनो ? मारी मूळ वा अे छे के—जीवमात्र सदा जीववानी इच्छावाळो छे पण तेनी इच्छा कद पूरी थई नथी, थती नथी अने कदापि थवानी पण नथी माटे ससा असार छे जो ससार असार छे तो व जगतमा बीजु सारभूत शु होय मानवी माटे मोक्ष ए सारभूत वस्तु छे, तो असारमाथी छूटीने सौने सारभूत स्थळे पहोंचवानु छे ते वात नक्की छे "सा विद्या या विमुक्तये" मां मुक्ति शी चीज छे ? आजे शाळा, कोलेजमा जे शिक्षण अपाई रह्यु छे, ते मुक्ति माटेनु छे ? ए विमुक्तये शब्दनो सार शो छे ? हु आ शब्दनो अर्थ मुक्ति अेटले आत्मानी मुक्ति–मोक्ष करु छु, मारे सौने मोक्षना अभिलाषी बनाववाना छे

जेनी साधनाथी मांग्यु मळे ते देव नथी—

अेक वार आपणने मोक्षनी अभिलाषा थई जाय पछी आपणने अमुक अपावे ते देव, आपणा माटे अमुक करे ते गुरु, अने आपणी इच्छानुसार बांधे ते धर्म एवु कशु नहि रहे एवा माटे तो एवा देवनी झखना होय के जेना स्वरूप मात्रने जोवाथी तेना आत्मानी उन्नति थाय आपणे तो आ ससारमा फरनारा प्राणी छीओ मानवीनी स्थिति एवी छे के "मेळव्यु

पणु, भोगव्यु थोडु ने एमने एम हाल्या " माटे आ संसारमा दु खनी कई किंमत नथी, पण सदाचारनी घणी मोटी किंमत छे वर्तमान काळनी घणी वातो एवी छे के तेथी माणसने धनेपात थाय धर्मने कठिन कही कहीने आपणे लोकोने धर्मथी विमुख करवा न जोईए आपणने एक बाजु जगतनी साह्यबी मळती होय अने बीजी बाजु धर्म मळतो होय तो, साह्यबी ने लात मारवानी ताकात आपणामा होवी जोईए साह्यबी माटेनी वृत्तिने पोषनारो देव के गुरु आपणने न जोईए, अने धारी वस्तु साथे आपणने अनुकूळ बनावे तेवो धर्म पण न जोईए खरुं कहुं छे के–जेनी पूजनाथी माग्यु मळे ते देव नथी मनमा इच्छा राखीने देवनी भक्ति रखे तो ते भक्ति ज न कहेवाय

महादु.खनु साधन राग—

हवे सुख शेमा छे ते जोईए रागथी सुख मळे खरु ? दरेक जीव सुखी छे खरो ? तो पछी जो रागमा सुख आपवानी शक्ति होय तो जगतनो जीव केम सुखी नथी ? राग ए तो महादु खनु साधन छे आपणे आपणा हैयाने एवु बनाववु जोईए के जे चीज आपणने सुखी बनावे तेनीज वाछना थाय राग सुखनु साधन नथी, माटे दुनिया दु खी छे कोईनु पण काई लेवानी इच्छा, के ते प्रत्येनो स्वार्थ तेनु नाम राग जगतमा मनुष्यमा जेटला ओछा रागादि होय तेटलो ते ओछा पापनो भागीदार, अने जेटला वधु रागादि होय तेटलो ते वधु पापनो भागीदार थाय, आपणे सुदेव, [illegible] सुधर्मने जेटला माटे शोधवा छे के–संसारनी आ बधी [illegible] ! आपणे जगरीने मोक्षना मार्गे जई शकीए [illegible] छे, अने जीवना माटे केटलाक साधनो जरूरी बनाववाना छे, [illegible] जीवना आधार पूरताज होवा जोईए राखी तो आ [illegible] आत्माने ऊंचो चडावे तेवा धर्मनी छे

जन्ममरणनो रोग—

तमे बधा रोगी छो, ए रोग शो छे ? ए रोग छे जन्मवानो
मरवानो आ रोगमांथी तमारे उगरवानु छे सुखदुःखने अनुभवनारी
जड एवा शरीरमां नहीं, परतु आत्मामा होय छे जे आत्मा परमपदे
छे तेने मरवानु के जन्मवानु नथी होतु, पण अदरना बधनमा
आत्मा ज्यां त्यां भटकी रह्यो छे, ते जन्मे छे, मरे छे, ने सुखदुःखनु
करे छे ते पापना योगे दुःखी थाय छे शरीरमा सुखदुःख वेद
शक्ति नथी पण आत्मामां ए शक्ति छे, अने तेथी जन्ममरणना रोगमा
आत्माने मुक्त करवानो छे रामराज्यनी वातो करनाराओए जाणी
जोईओ के राम सारा हता माटे रामराज्य सारु हतु तमे सारा
तो बधु सारु थशे तमारे कोने लाववो छे ? रामने के रामराज्यने
अने आ राम तो तमारामाज बेठा छे, तेने पेदा करो ! कर्मना बधन
योगे आपणे जन्ममरणना फेरामां फर्या करीओ छीओ, अने जीव
दरम्यान अनेक उपाधिन वेठिओ छीओ हवे आपणे जन्मवु पण नथी
अने मरवु पण नथी अेवाना माटे मोक्ष छे तेने माटे सुदेव अे
मोक्षमार्गना स्थापक छे, सुगुरु ए मोक्षमार्गना प्रचारक छे, अने सुधर्म ए
मोक्षमार्गनी निकट लई जनारो मार्ग छे योगनी प्रथम भूमिका उपर
साधुओ होय छे, अने बीजी तथा त्रीजी भूमिकाअे गृहस्थो होय छे

प्रश्नोथी कटाळशो नहि—

सभामां पूछाता प्रश्नोथी कटाळशो नहि जुदाजुदा मतव्योना श्रोता
जनोमाथी जुदा जुदा प्रश्नो उभा थाय ते स्वाभाविक छे, परतु तने खूब
शांतिथी अने सहानुभूतिपूर्वक साभळवा जोईअे, अने विश्वासपात्र वर्तन सभाजे
राखवु जोईअे

—

—[व्याख्यान ५]—

ससारना समग्र दु:खनु कारण एकमात्र
—— राग छे ——

देवतत्त्व, धर्मतत्त्वने शुद्धस्वरूपे बतावनार गुरुतत्त्व छे.

(प्रेमाभाई हॉल, अमदावाद रविवार ता १६।९।५१)

परम आदर्श मोक्ष——

अनत हितकारी महापुरुषोअे जगतना जीवोना कल्याण काजे जे वातो फरमावी छे, तेमा सौथी प्रथम वात ए छे के, आ ससारमा मनुष्य जन्मनी प्राप्ति थवी दुर्लभ छे ए मानव जीवननी प्राप्ति पछी मानव जीवनना परम आदर्शने समजावनारी सामग्री सहु जीवने मळती नथी, पण जेने मळे छे ते जीवने परम आदर्श मोक्ष ज होई शके ए समजाववु कठिन छे जेने ए मोक्षनी वात समजाय छे अेने परम आदर्शने साधी आपे अेवो जे योग अने ए मार्गे चालवु ए दुष्कर छे, एटले आ जीवन द्वारा परम आदर्शने योजी आपे ते योगने पामवानी लायकातवाळा गुणोने पूर्व भूमिका कही छे आ गुणो जेनामा स्वभावसिद्ध होय ते परम भाग्य शाळी छे, पण जेने ए स्वभावसिद्ध न होय ते आ गुणो सांभळी एने मेळववानी इच्छा अने प्रयत्न करे छे, अने मेळवे छेए आत्मस्वरूपनो शोधक बने छे आ स्वरूप शु होई शके ते जाणवानी ईंतेजारी जागे छे अने आ ससार एवा जीवोने असार लागे छे जे बधनमा ए पड्यो छे तेना प्रतापे अेने ससारमाथी छूटवानो कोई उपाय जडतो नथी जे डाह्या माणसोने आ गुणोनो अभ्यास छे, ने वडाओनी आज्ञा, सदाचार, नाना प्रकारना तपनु सेवन अने मोक्षना चहानारो छे, तने ससारनी असारता

वधी पडती नथी" आ ससारमा ते केम, केवी रीते अने क्यायी आव्यो ते जाणतो नथी आपणो जन्म समय पण मा-बापना कहेवाथी जाणीओ छीओ, जन्म्या पछी केम उछर्या ओनी खबर नथी समज आव्या पछी जे ससार चलाव्यो छे एना घणु मेळव्या पछी घर, पेढी अने मुलनी सामग्री जे सर्जी छे ते गुं जवानी इच्छाथी सर्जी छे? आ बधु परोपकार माटे मूकीने जवाना छो एवी इच्छा छे? जे मेळववा जिदगीभर मेहेनत करी, ते आदिन मळे ए इच्छा छता जवु पडे क्या जवानु छे तेनी खबर नहि एवी स्थिति जीवने खटके के नहि? खरा आत्माने ए खटके अने परिणाम ससारनी असारता समजाई जाय

ससारनी असारता—

तमने ससारनी असारता समजाई छे खरी? समजाती होय तो ओनाथी छूटवानी इच्छा छे? इच्छा होय तो ओनाथी छूटाय ओवी शोध करी छे? जो आज रीते जन्मवु मरवु ओम चाल्या करवानु होय तो ते अज्ञान जीवने शोभे, ज्ञानीने नहि. आमाथी छूटवा देवाधिदेव, सद्गुरु, अने सद्धर्मनी जरर छ

एवा देवनी जरूर छे—

आपणे देवतत्वमा मानीओ छीओ ने? हु जगतमा क्रीडा करता देवोनी वात करतो नथी हाथ जोडवे खुशी थनारा देवोनी पण आ वात नथी, आपणी भक्तिथी तोपाय ओवा देवनी पण आ वात नथी, पण जे देवो रागद्वेषथी पर छे, सपूर्ण ज्ञानना स्वामी छे, जगतमा मोक्ष मार्ग मूकी मुक्तिपदे गयेला छे, कदी अहीं पाछा आववाना नथी अने सदाकाळ पोताना स्वरूपमा लीन छे एवा देवाधिदेवनी वात छे

'आपणा देहनु भलु थाय'के 'माग माग जे मागे ते आपु ' ओवा ने ए देव जोइओ, के आत्माना तोष माटे देव जोईओ? मोक्ष माटे देव

जोईओ तो मोक्ष [illegible] राते बताव्यो होय तया देवने चोंधी ने
ए देव आगळी चींधीने बतावाय ओवा नथी, पण ओनु स्वरूप बतावी शकाय

दुःखनु मूळ राग—

दुःख आपनारो राग छे, कदाच तमने लागतु हशे के सुखनु साधन राग छे, पण ओम नथी राग होय त्या द्वेष आवे अने ए बे बेठा होय त्या अज्ञान, क्रोध, लोभ विगेरे कषायो आव्या विना न रहे राग दुःखदायक लागे वीतराग देव गमे, राग सुखदायक लागे देव गमे राग खराब छे ओम ज्या सुधी न लागे त्या सुधी ओने सात्विक नहि बनावी शकाय पण रागने सात्विक बनावी शु रागी मूकवो छे? शु रागना रोगथी बचवा के जीतवा ओने सात्विक करवो छे? आपणे कोना तरफ ममता राखीओ छीओ, वीतराग भावना पर के रागी भावना पर? आपणे एवी वस्तुथी राग करीने टीने के सारो माणस आपणे न चढवा दे जे रागे मानवाने हेरान बनाव्यो छे जगत् आजे जे धाधलमा पडयु छे ते ए रागनु परिणाम छे, रागमाथी लोभ, मोह, मद, हिंसा, असत्य, चोरी, बदमाशी, लूटारुवृत्ति जन्मे छे अत्रा ओग नाटको नच्या छे के कोई जाइ न जाय तोज आवरू रहे ए रागने योगे बेटो बापनो, 'मा'नो अने वडीलनो न रहे, मित्रनो साथी न रहे, अने सगी स्त्रीनाय न रहे आ अटला माटे कहु छु के वर्तमान काळमा तमारु बहु प्रियपात्र स्त्री छे ज्या सुधी राग ए भयकर शत्रु छे ओम न लागे, अने ए रागथी बचावना देव अने गुरु न मळे त्या सुधी ते वीतराग बनाव ओवी भावना न जागे, अने ए भावना न जागे त्या सुधी नथी वाता हैयामा मानवानी छे जो आ वात समजाय तो रामायणना पात्रो मीठा लागे, हु अहि कथा करतो नथी पण तमारा जीवनना परिवर्तन माटे प्रयास करु छु मात्र लोकरंजन माटे कथाओ शास्त्र मनाइ करी छे शास्त्रो कहने छे

के सात्विक राग विना योगनी पहेली भूमिका न आवे सात्विक रागने हु मोक्षमार्गे लई जवानो छु एवा रागनो निषेध छे जे आत्माने बधनरूप छे जेणे आत्माने शरीरमा पूर्यो छे तेने सूक्ष्म शरीर कहीओ छीओ तेना सर्व नहार रागनो विरोध करीने छीओ आवा रागथी न रीझातो होय एवा भाग्यशाळी लोक हशे त्या सुधी ससारमा राग खराब छे एम न लागे, जे रागे घणाने भयकर स्थितिमा मूक्या छे अने ए छूट्या विना ससारमा साचु सुख शक्य नथी एम न लागे त्या सुधी वीतरागनी भावना न जागे एटले आ भावना जगाडवा वीतराग देव जोईए आ छे देवाधिदेव, जेने रागद्वेष पीडता नथी रागद्वेष जता सपूर्ण ज्ञान पेदा थाय छे परिणामे क्रोध लोभादि दुर्गुणो आवता नथी आवा मार्गनी स्थापना करनारा देवाधिदेवनी कोटिमा मूकाय छे बधा राग आपणामाथी काढी ए देवाधि देवमा स्थापिओ तो रागरोग नाश पामे आवा देव जोईजे ने ! तमे शु भण्या अने बाळकोने शु भणावो छो ! मानव जीवनमा आवेला आत्मा देवाधिदेव अने सद्गुरुने ओळखे एटलु भणावो छो ने ! एवु शिक्षण न आपता हो तो रामायणना पात्रो कई रीते समजाशे ! राम ए छे जेना पिताने ओरमान माने वचन आप्यु अने रामे ए आनदपूर्वक स्वीकार्यु ! तमे एवा राम छो ने ! आ बधा पात्रो देवाधिदेवना उपासक हता, योगनी पहेली भूमिका पर जीवता जानो हता एमने समजावता आपने सद्गुरुनी स मुख थईने, रागनी मारे रहेवा छता तेनी जेके सलाह न मानीजे उदाहरणपूर्वक विरागथी जानीने तोज ए पात्रो समजी शकाशे राग पर विजय मेळवाय तो बधा दोषो जाय, रागना योगे सगा बापने मूकनारा आ सभामा हशे खरा के नहि ! रागद्वेष पर अधिकार मेळवी जीवे ए विरागी, पण ए तो वीतराग करी शके जे ताप पामे ए वीतराग नहि अने भक्तिथी सोप पामे तेने देवाधिदेव अने नही कहेता देवाधिदेव तो कही गया छे के–जे छे ते मूको ! अने जे मूकवानु कही गया ए आपे तो ए देवाधिदेव नहि आपणे मोक्ष मार्गे आगळी चींधनारा सद्गुरु अने सद्धर्मनी

सन्मुख थईए तो जग जीती जईए जे देव, गुरु, धर्मपर राग करे छे, तेमनु घर सारु नहि चाले अेवो भय छे ने ! पण रागी जेनु घर चलावे अेथी सारु घर निरागी चलावी शके छे आर्यावर्त तो अनासक्त योगीओनी भूमि छे आ देशमा जन्मेला जीवोनी महत्ता ए छे के गमे तेवु साम्राज्य जेनी आगळ आवे तोय कहे के इच्छा नथी, अने ए साम्राज्य सजोगोवशात् हाथमा आवे तो एवु चलावी बतावे के जगत् ताजुब थाय, राम वीतरागना सेवक हता अेटले राज्य सारु चलाव्यु वीतरागा अेटले ससारना, पदार्थना के मायाना विरागी

सुखी क्या सुधी ?

तमे तमारी जातने अनुकूळता मळे त्या सुधी सुखी मानो छो, अने अेथी उलटु बने ता दु खी मानो छो ने ! आ स्थिति कादवानी छे अने अेथी रहित बनेला महावीरने अमे देव मान्या छे केम के ए अरिहत हता ए अरिहत न होय तो अमे कहीअे के ए महावीर बीजा जेनामा भक्त उपर तुष्ट थवानो पण राग नहि अेवा ए देव भक्तिथी तुष्टमान थनारा पण देव छे पण तेओ पुण्य उपर तुष्टमान थाय छे आरिसो स्वच्छ हशे तो अेमा होय तेवु देखाय डाघो होय तो य ए बतावे, जेज रीते वीत राग देव छे, ए हीराना हार चढाव्याथी तुष्टमान न थाय पण मने मळेला हार राख्या ए भूड कर्यु अेम थाय अने जेनो सदुपयोग अमने चत्मायवा माटे थाय ए भावनाथी के ए हीरा भूलाइ जाय, पण अेक चडावी चार हार मागवा जेनो अर्थ काई नथी जो प्रभुने खुश करवा भक्ति करो तो ते निष्काम भक्ति न होय मा बाप तमने राजी करवाना छे माटे तेम करे, पण राजी के नाराजी न थाय ए मात्र अेक वीतराग छे माटे जग तना अने तमारामाना अेके दोष जेमनामा न होय ते देव, अेटले तमने दु दु खीओ छु अेम कहेशो नहि-मारा पापे हु दु खी छु अेम कहेवु होय तो कहेजो जेन आरसो माटे अने ए डाघ कादवानी



मेळववा माटे छे, तेज प्रमाणे वीतराग देवनी जरुर छे अेमनु स्वरूप अेवु छे के तेमां आपणा दोषो देखाय छे तमे वीतरागनी प्रार्थना करो छो केम के तेमनामा जातने जोई शको छो ज्या सुधी ससारमां लोभ, हिंसा, अनाचार वगेरे छे त्या सुधी वीतरागनो कोईने खप पडतो नथी रागादि जशे तो ज वीतरागता आवशे दुनियाना पदार्थो उपरनो राग इच्छा पेदा करे, इच्छा पूरी न थता दु ख थाय, बधानी इच्छा काइ फळे नहि, अने जे चीज आपणी न होय, ते माटे इच्छा अने महेनत कर्या छता न मळे मळे तोय सुख आपे नहि, साचव्या छता रहे नहि, जेने मूकाने जवानु होय ए चीज शु कामनी ? वीतरागे राग खराब कह्यो छे अने तेथीज अमे पण राग खराब छे अेम कहीअे छीअे जेने पाळे वीतराग नहि तेने वीतरागना सेवकोनी कथा पण केम गमे ? अेने दुनियाना भोग गमे आजे जगत् राचा थया करता वधु रोइ रह्यु छे जगत् कोई दिवस सुखी हतु नहि, अने होवानु नथी जगतमा तेज सुखी हता जे विरागी हता वीतरागना उपासक हता

ए रागमां रमवु सारु नथी—

आजे टुकडा रोटलाथी रीझे नहि रुपाळी रगीली मळी जाय तो मोज करनारी जात पोतान सुखी माने छे, पण पुण्य होय तो स्त्री, संपत्ति के बगलो मळ्या होय एमा राजी शु थवानु ? ए रागमा रमवु के रीझवु सारु नथी, पण रागने सुखनु कारण माननारा आ जगतमा वेहोळा घणा छे वीतरागे कह्यु छे के राग जेवो भयकर काइ शत्रु नथी रागद्वेष भेगा थता काम, क्रोध लोभ, असत्य, चोरी जन्मे छे, हिंसा ज मे छे, आ बधा दोषो देवमा न होय देवना दर्शनथी राजी थवानु, देवना वाणी वरवाना नहि सद्गुरुनी जरुर आत्मानी तपास माटे छे, शरीरनी नहि देव मो क्ष मार्गे स्थापी मोक्षे गया तेन गुरु ए रस्ता बतावनारा छे ते कहे छे भयानक [illegible]

गुरुतत्त्व—

वीतरागे हवे गुरुतत्त्व जेतु निरूप्यु छे के जेथी योगनी पहेली भूमिका पर आववु पडे जन्म-मरणनी इच्छा न होय अने जेवो उपदेश आपनारा नामे शास्त्र कहे छे के देवतत्त्व, धर्मतत्त्वने शुद्ध स्वरूपे बतावनार अने मलीन न थवा देनार एतु गुरुतत्त्व छे गुरुतत्त्व खामीभर्यु बने तो देवतत्त्व अने धर्मतत्त्वमा गरबड चाले, जेटले गुरुतत्त्व निर्मळ जोईजे आवा गुरु ए के संसारमा जेतु कोई नहि, ए कोईना नहि माने तो बधाना ए बोले तो धर्मतत्त्व डोले एतु गुरुतत्त्व चोख्यु राखवा वीतराग साधुधर्म बताव्यो छे, पण ए बतावेलो साधुधर्म आचरनारा ओछा मळे छे जेम देवमा रागादि दोष न जोईजे तेम गुरु ए रागादि उपर काबू राखनारा बनवा जोईजे, गुरुनु लक्षण ए के ते महाव्रतधारी होय, जे पांच महापाप त्याग करे, करावे महाव्रतने प्राणांत न तजे एवा धीर जोईजे एना पालन माटे ए भिक्षाथी चलावे, ए माटे भिक्षाने माधुकरी कही छे, गोचरी कही छे, साधुने माटेज कोई वस्तु बनी होय तो ते तेने न खपे, गाय चरे त्यां घास फरी ऊगे गधो चरे त्यां साफ थई जाय लोक जमे जेमा ए साधु जीवी शके साधु भिक्षा लेवा ने मारवा जाय छे एक संयमपुष्टी अने बीजु तपोपुष्टी खरी साधुता ए कहेवाय के जे जगत् मात्रना जीव पर प्रेम केळवे षड्जीवनिकायना हिंसात्यागनी प्रतिज्ञा करे, जीव मात्रने हानि न पहोंचे एम वर्ते साधुनो बीजो गुण "सामायिकस्थ" जेटले शत्रु-मित्र समान जेवी प्रवृत्ति आत्माना गुणोने खीलववा माटे होय ए ममत्व ने माया मूकाय ए रीते जीवे ए छे गुरुतत्त्व, वीतराग सिवाय देव नहि, महाव्रतधारी सिवाय गुरु नहि, मोक्षनो उपदेश आपे ते सिवाय धर्म नहि पैसो छूटी शकतो नथी माटे दान धर्मनो उपदेश कह्यो छे, ज्यां दान होय त्यां कोई दीन होय नहि जे शीलधर्मवाळा होय, संयमकेवी तपस्वी बने, अने वीतराग दशा पामवानी इच्छावाळा होय, आ ध्येयवाळा रामायणना

पात्रोने समजी शके, एना पात्रो देव, धर्म ने, गुरुतत्त्वने समर्पित हता. यागनी पहेली भूमिका पर आवी शके नहि, पण त्रीजी भूमिकावाळा बधा बीजी भूमिका पर जीववानी इच्छा राखे ते एवु उन्नत जीवन जीवे छे ते रामायणना पात्रो परथी समजाशे आ देश तो मोक्ष साधनानो छे अहिं जन्मलाने मोक्ष साधना सिवाय बीजी साधना गमे नहि एवु मानव होवु जोइए देव, गुरु, धर्मतत्व समजवु होय ते त्रीजी भूमिकामाथी बीजी भूमिकामा आवे पण तेमनी नजर तो पहेली भूमिका पर ज होय

-[व्याख्यान ६]-

साचा गुरुओज आत्मानु ज्ञान आपी शके

प्राचीन समयमा गर्भमा बाळकोने सस्कार सींचाता हता



(प्रेमाभाई हॉल, अमदावाद रविवार ता २३।९।५१)

आत्मानो सबध—

अनत उपकारी महापुरुषोए मानवज म शासामा सारी रीते जीवाय के मानव जीवन पामेला आत्मानु ने साध्य छे तने सिद्ध करे एवु जे कह्यु तेनी वातो कहवाइ गइ छे रामायणमा आ आत्माना सबधनी वात कइ रीते ठासी ठासीने भरी छे एना विचार दशरथ राजाथी माडीने जे ज महत्त्वना पात्रो आवे छे तेने लक्ष्य करवो छे, अने एटला माटे आ बधा विचारो गोठवी लीधा के आत्मानी मुक्ति मानव जीवनमा साधी शकाय छे ए माटे मानव जीवनमा परम आदर्श तरीके आत्मानी

मोक्षने–परमपदने निश्चित कर्यो अने आत्माने मोक्ष साथे योजी आपे एवी योगनी पहेली, बीजी अने त्रीजा भूमिका बनावी योगनी लायकात आपनारी पूर्व भूमिकानो विचार करी जे आत्मा योगनी पूर्व भूमिका तरीके जावे छे ते आत्मा स्वरूपनो शोधक बने छे आ रीते ज मनु, जीववु, मरवु एना करता आत्मानी सदा स्थायी स्थिति होवी जोईए एवु पुरेपुरु हैये ऊगे अने आत्मानु स्थान ससार नहि पण मोक्ष छे ए वात जेने रुचे छे तेने मोक्षमार्गना स्थापक सुदेव जेना प्रचारक सुगुरु अने मोक्ष ए त्रो चीज छे ते जाणवानी इच्छा जागे दशरथ राजाथी मांडी रामायणना बधा पात्रो योगना त्रीजा भूमिका पर छे योगनी पहेली भूमिका परना मानवो जगतने आशीर्वादरूप होय छे अने सुगुरु सुधर्म अने सुदेवमा निश्चित बनेला मानवो जगत् माटे आशी वादरूप रहे एमा कांइ नवाइ छे ?

शब्दव्यभिचार—

आजे जगतमा केवी वातो चाले छे ते बधाना समजमा छे, एटले मारी वाता तेमा देखती नथी सेवा नु, ए कोने कहेवाय, सेवा कोनी थाय ए पण समजवानु छे आजे शब्दव्यभिचार घणो चाले छे केवो शब्द क्या योजवो एनी समज नथी हु मातापितानो सेवक छु एम कहो तो ठीक पण हु धर्मपत्नीनो सेवक छु एम कहीए तो ए शब्द अस्थाने वपरायो कहेवाय मानव जीवन माटे महापुरुषोए जे वात महत्वनी लागी छे, एना परोपकार बुद्धिथी शास्त्रो रच्या छे आजे जगत् दुःखी छे जे क्षुद्र जतुओ जीवे छे, मरे छे ए जो आपणी दृष्टि समक्ष आवे तो ते आगळ मानव सख्या नजीवी छे महापुरुषो ने लाभकारी वातो ते कदाच हैये न रुचे तोय तेने हैये स्थिर करवाना प्रयासो करवा जोइए मानव गमे ते स्थितिमा होय पण सारु जीवन जीववा कयु ध्येय होवु जोईए ते तेणे विचारवु घटे मोक्ष जु जे छे ससारना कोइ पण–

=

पदार्थनो अर्थी नहि एवा पदार्थनी जरूर पडे तो एम ते पामरता छे अने कदाच ए पदार्थ मेळववो पड तो, ए माटे एने लागे के हजी शक्तिनो विकास थयो नथी तेथी आ पराधीनता छे, अने आवु जेने लागे ते मानव दुःखमा निमित्त थाय ? ए तो बीजाना सुखमा निमित्त थया विना न रहे मोक्ष परनी दृष्टि राखेलो तो मानवनु कयु ध्येय रहे छे ? शु बधामा उपकारबुद्धि छे खरी ? ए पेदा त्यारे ज थाय ज्यारे पोतानी जातने भूले जात त्यारे भूलाय ज्यारे एम लागे के आत्माने काइ जोईतु नथी जे जोईए छे ते शरीरने जोइए छे, आ आत्मा शरीरमा बेठो छे, माटे भिखारी छे बधा शरीरधारी जीवो शरीर विनाना थाय तो ज साची रीते सुखी थाय शरीर छूटी जाय अटले शरीर विनाना थई जईए छीए खरा ? मरवा पडीशु त्यारे जगतनी कोइ चाह अहर नहि करी शकेने ? तमने प्रेमभाव के ममत्व जगतना जीवो प्रत्ये छे ने ? जगतना सौ जीवो प्रत्ये प्रेम छे एम बोली शकवानी स्थितिमा तमे छो खरा ? तमने शेना पर प्रेम छे ? शु जवाब आपो ?

सेवानी वात—

आपणे सेवानी वात लोको कहे छे एम नथी करवी, पण अनत ज्ञानी-ओए करी छे ए रीते करवी छे, अने रामायणना पात्रो ए राते जीव्या छे, माटे आपणे अहिं तेमने लीधा छे त्यागीओनी वातो तो बीजी घणी छे पण ए भारे पडे एवी छे सुदेव–सुगुरु अने सुधर्मना सेवक बनी चूकेला आ तमारा करता पण वधु सुखी एवा जीवा मोक्षना आदर्शने आगर सामे राखी कई रीते जीव्या अने तमनामा केवो मैत्रीभाव–समाधवधी साथे कवो सबध, केवो भाव हतो तेवा पात्रो तमारी समक्ष रामायणमाथी मूक्या छे मोक्ष सिवाय बीजो एवो एके आदर्श नथी जेने मानवीना आदर्श तरीके स्वाकारी शकाय, कोई पण पदार्थनी इच्छा दु ख पेदा करे छे अने ए दु ख पेदा न थाय ए माटे मोक्ष ज एक आदर्श छे आ

आदर्श हैये स्थाय अने कोई चीजनी इच्छा थाय त्यारे हैयेथी अवाज आवे के ए इच्छा ज्यानथी नथी मोक्ष सिवाय बीजी चीज नथी आवी आत्माने सहाइ आपनारा नरा भोगनी पूर्व भूमिका पामेला जीव छे ए भूमिका मेळववा तरफडता जावने ससारनी असारता समजाय छे ए असारता समजाया विना सदाचार न आवे जे कोई दु ख अनुभवता होय तो ते रूप, रस, गंध, स्पर्श अने शब्द ए पचनोपने कारणे छ आ पाचे उपरनो रग जेने न ऊडी जाय, आ उपरनो प्रेम जन ऊनी नाय तेमन इच्छा मात्र पापरूप लागे, अने जेम थाय ता पाप करता जेवु न रहे मानव मात्र पाप छाडे तो जगतनी अशान्ति जाय रूप, रस गध, स्पर्श अने शब्दनी इच्छान भोगना आदरवाळो पाप मान छे परिणामे मोक्षना स्थापक देव, मोक्षना प्रचारक गुरु अने ए मार्ग लइ जनार धमन ज सुदेव, सुगुरु अने सुधर्म माने छे जे कारण पांचना इच्छान पाप मानता होय ए हिंसा करवामां रस न ले आवा बधा थाय तो ते अगणमती वात छे, पण आवा बधा थया नथी, थाय नहि अन थवाना पण नथा कदाच थाय जेवी समारना करीजे तो हैयान शाति थाय के अशाति ! आपणे भले जगतनी जवाबदारी न लइजे पण जातनी जवाबदारी तो लइ शकीजे ने ! अने जो लइजे तो रूपादि पाच जे उपर कह्या, ते माटे मरीजे तो मानवु के आपणे मूला छीजे

गुण कइ भीख मागी मेळववाना नथी—

ज्यां सुधी मो त आदर्श न बने अने ए थया पछी हैयामा मोक्ष मागना स्थापकने, जेना प्रचारकने अने जेना धर्मने अनुसरवानी तालावेली न लागे त्यां सुधी रूपादि दोषो तमने छोडवो नहि मोटा राजाना मालिक छता, रूपादि भागवता दोषो ऊडा जणाने मलते जेमने छाडवा माई असर न थई जेना आदर्श पु दशरथ, राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न छे साम्राज्य इच्छे तेवु रूप, रस, गध शब्द

स्पर्शनो भोगवटो करी शकता हता, उता आ पांचे तेमनी आगळ पाप कराववामां निष्फळ नीवड्या अवा महापुरुषोने आपणे नहिं लाववा छे आ रूपादि पांचमां भान भूलाय तेवी शक्ति नथी तेम कहेनार छे कोइ ! जे आ पांचमा लोभाय तेने जगतमां अेवुं अेके पाप नथी जे करता हत लागे रामायणनी कथाना पात्रो साथे तमारी सरखामणी करवानी छे येम के तमने राम बनाववानी पणी इच्छा छे भले तमे राम न बनी शको पण तेमना आदर्शने पण जो अनुसरी न शको तो आ कथाना काई अर्थ नहि महापुरुषोनी कथा अेटला माटे के तेमना गुण गावानी तक मळे अे गावाथी गुण आवे अने गुण आवता दोष जाय, अे माटे तमारा हैयानी भूमिने मारे प्रसवी पडे छे अेमां निमळता आवे तो गुण झट बेसे गुण काइ भीख मागी मेळववानो नथी रूपादि पांच माटे भीख मागवी पडे पण गुण माटे नहि केम के अे तो आपणा आत्मामां बेठा छे आपणे गुणना मालिक छीअे, पण ए प्रगट अेटला माटे थता नथी के आपणी आंखे पडळ आव्या छे तमे हैया अेवा निमळ अने चोकखा करो के रामायणना पात्रोना गुणो तेमां प्रतिबिम्बित थाय

ए पांच रहेवाना छे—

रूप, रस, गंध, शब्द, स्पर्श जगतमां रहेवाना छे जगत् अनादि काळथी छे अने रहेवानुं छे भले अेमां परिवर्तन थाय, पण रूपादि पांचनो समूह रहेवानो ज, तेमां तमारा पर आवरण करे अेवी शक्ति छ, पण ज्यारे अेनाथी खेंचाइने त्यारे शोक धातुना पदार्थमां पडवा जीअे अेम लागवु जोईअे पाप करनारने पूछजो के पाप शा माटे कर्युं ? अने आ रूपादि पांच शिवाय छट्ठा माटे कर्युं होय तो मने कहेजो ! तमे पाप करनार उपर नहि, पण पाप उपर तिरस्कार लावजो ! पाप करनार दयापात्र छ, पाप तिरस्कार-पात्र छे पाप भूंडु तो ज लागे के ज्यारे हैयुं चोकखुं हशे भणेला गणेला जो पाप करता होय तो अभण अथवा सारी स्थितिमां होय ते पाप करे तेमां

मबाई शी ? आपणे स्मादिमा सुख मानी बेठा छीअे अेटले स्थिति बद-लाई छे रामायणना पात्रोने वीतरागे कई रीते नीरूप्या छे तेनी वात कहेवानी छे, अमणे जे दोषो तज्या अने गुणो मेळव्या ए रीते आपणे दोषो तजीअे ने गुणो मेळवाज मा-बापे जे आप्यु नथी ते आ वातो आपी शके छे

तो अमेरिकामा जन्मतने ?

दशरथ राजा साम्राज्यना मालिक होवा छता, स्मादि पाच सामग्री ऊची कोटिना होरा छता तेमनो मोक्षनो आदर्श हतो, अने योगनी नीजी भूमिका पर हता, तेथी साम्राज्य तेमने पोतानु बनावा शक्यु न हतु, पण तेओ साम्राज्यने पोतानु बनावी शक्या हता घणाने जगतमा झूपडामा जन्मवु पडे छे, तमे पुण्य थाने बगलामा जन्म्या, पण पसदगी करीने जन्मवानु होत तो अमेरिकाने पसद करतने ? दशरथ राजा साम्राज्य चलावता होवा छता जेमा आसक्त न्होता कळा बधी शीख्या हता पण ते कळा धर्महीन नहोती ६४ के ७२ कळा शीखे पण धर्म, रम न शीखे त्या सुधी बधु नकामु अेम प्राचीन काळमा मनातु पुत्रने पण पेढी त्यारे सोंपाती ज्यारे अेने परलोकनी पीछाण थती, पापनो डर लागतो तमे पेढी कोने सोंपो ? तमाराथा थमणो उठाउगीर थाय तने ने ? के कळा बधी शीखे पण ते धर्महीन न होय तने ! पण आने तो घणा अेम माने छे के हु करु ते न्यायजी, बीजा करे ते गेरव्याजबी ज्ञानी जेने जेने ज्ञानीओअे पाप कह्या छे तने तेने नोइ पण काळमा, कोइ पण सरकारे गुन्हा ज कह्या छे जेन जगतमा मुले जीवतु होय तने जेनो गुन्हो काइ पेता प्रत्ये न करे अवी इच्छा होय छे

भणतर पाछळनो हेतु शो ?

तमे सताननै भणावो छो ते डिग्री लइने आवे त्यारे पूछो छो के आ

भणतर पाछळ कया जीवननो निणय लीधो छे ! नथी पुछ्यु, ने मा-बाप ब या छो ! जेना करता तो गाडीया रहा होत तो सारु तमे छोकरा छोकरीने भणाव्या पण विवाह नथी तमने जेवो विवाह होवो जोईए के भणावेला सतान व्यादि पाछळ गुलाम नहि बने तमे आतु शीखव्यु छे ! न शीखवता हो तो ते आर्यदेशना मा बाप माटे लाछनरूप छे दशरथ राजाने पोताना सतान अन दुख प्रत्य विवाह हतो राज पर बेठा हावा छता पण राइ नाह आय जेनी खात्री हती तमने तो घर राइ जशे एवा धारती रहे छे घरनी एक ईट जेरी नाइ होय जेना पर तमने ममता न होय, ममता नथी जम वही शकशो ? मरण भले काल आवनु होय त आजे आवे, मन मारी पासे छे, जे कोइ वस्तुमा नथी जेनु रक्षण य जेमनामा होय तमनो आदर्श मोक्ष छे

धर्मकळा—

धमकळा स्वादिमा लाभावा जेवु नथी अम कहे छे, जेमा जलकमळ वत रहेवु जाइअे कमळ जेम कादवमा जन्मवा छता देखन अने राजाने चढे छे, तम तमे कादवमा जन्म्या छो, भोगरूपी पाणीमा वध्या छो, छता शु खरा बनेथी आधा ?

दशरथ राजामा महाशास्त्रायनी खुमारी न हती ते जेमा टेपाया न हता, परिणामे जेमना सतान राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न जे लगारे चिंता करवा जेवा न्होता, केम के जेमने धर्मकळा शीखवी हता

सेवानी रात कई रीते करो छो ?

तमे सेवानी रात कइ रीते करो छो ! हाथमा ते मामा ने बाकीनु तिजोरीमा आवी सेवानी रातो मोरना पूठ जेवी लागे दशरथना समयमा केळवणीनी प्रथा हती के केम जेम प्रश्न पूछो छोने ? ते वखते तो उत्तम गुणो जेज केळवणी हती शाळा, महाशाळा तो अक्षरज्ञान माटे छे आपणे त्या तो बाळक गर्भमां होय त्यारथी सस्कार सींचाता माताअे केम

वस्तु अेना विधान छे, केम के बधा संस्कार गर्भमांथी पडे छे जेम जेम बाळकने संस्कार सारा पडे तेम तेम ते गर्भनु दु ख भूले छे ए ज मे त्यार संस्कारयुक्त होय जन्म्या पछी बाळकने रमाडवाना पण नियमो घडेला छे रमाडती वखते सारा शब्दो बोलाय तो तना संस्कार सारा पडे तम बाळक रमाडवा शु बोलो छो ? बाळकने खोटा संस्कार पाड्या होय अने ते मरे तो अेनी दुर्गति थाय अेटले आगळ मा बाप शिक्षक थमाल्लेहो संस्कारी हता, अने बाळकमा संस्कार रडता आजनी शिक्षणसंस्थाओमा भाडूती शिक्षको आत्मामा संस्कार नाखता ख्ररा ? प्रसंगे, शिक्षको कहे छे कोस वध्यो छ कन्याके कलाके नवा शिक्षक, अने शिक्षक हाले चोचो हाय तो अेनो दुर्यो पण बोलावे, कायदो पण अवो के शिक्षक शिक्षा न करी शके, मॅट्रिकवाळाने पूछो क नाम्रु आवड छे ? शान काढता आवड छे ? तो कहशे ना पहेला शिक्षकनु मान जळवातु, विनय जळवातो अने शिक्षक पुर्व ज्ञान आपता आने तो शिक्षक कनाक आवीने बोली जाय, भणे तो भणे नहि तो भाइ नहि बेठायाना छाकरा हाय तो उपर चलावे, मास्तर कहेशे पाच मळता होय तो मारे शु ? आम अनीतिनी शरुआत मूळ ना थइ छे हवे काइक भान थायु छे अने कहे छे आवा माणसो छे, पण अेवान होय ने ? पहेला कुळशिक्षण हतु, माता भले भणेली गणेली नहि, पण संस्कारी अने बाळाध्यमनी कळा जाणनारी होवाथी परलोकनु अने पापथी बचवानु शिक्षण आपती अने भणली ता नास्तिक बनी जाय छे ईश्वर क्या छे अेम कहे छे, पण मा-बाप कोण छे ए पण मा बाप कहे छे त्यारे तमे मानो छो ना। अनंत परिश्रम पछी अनंत ज्ञानीओने ईश्वरनु नाम कहेलु छे, हव तो चोपडाओमा ईश्वरनु नाम नहि आव, ए नाम नास्तानी पेरनी थइ छ

नास्तिकोने ईश्वरनु नाम लीधु हतु—

मोटी मु ...कोरना नास्तिको हिटलर, मुसोलीनी ...
ईश्वरनु ... ! ...नु छे तो तवारा देशना तो ...

जेवा संस्कार हशे वेवा संतान पाकशे आजे आ देश खराब नथी ईश्वरनु नाम लेनारा अहिं अनेक छे शिक्षको पण समजे के पगार ल्इने पण बाळकोने केळववानी अेमने तक मळी छे तो तेओ छोकराना मा बाप बनी जाय, तेओ नीतिपाठ भणावे शिक्षण कोई ठगी न जाय अने कोइने ठगीने नहि अे माटे छे कायदानु ज्ञान गुन्हो करतां बचाव माटे छे, पण वकीलो तो कहेशे गुन्हाथी गभराता नहि, कम्ममां रहीने करजो ! आजे तो अेवो जमानो आव्यो छे के शिक्षण धंधे ने वेपार धंधे, वकील धंधे ने कमाया धंधे, डॉक्टर धंधे ने दर्दी धंधे आजे शिक्षण केरी मव्यु छ भणावनाराओअे भणावती वखते शिक्षण शा माटे उपाय छे ते कयु नथी वर्षोथी आ माटे विमासण चाले छे, पण निकाल आव्यो नथी साचु शिक्षण मा बाप अने शिक्षक आपे अेवी शिक्षण-संस्थाओ आपणे त्या हती

वीतरागनी चोकी—

दशरथ राजाअे राग सामे वीतरागनी चोकी मूकी हती तेओने राग रोळी शक नहि, द्वेष दझाडे नहि, लोभ ललचावे नहि, क्रोध अकळावे नहि, मान मुझवे नहि, माया ठगे नहि आ स्थिति आव ता क ग ऊंची आवे दशरथ राजा ए स्थितिमां हता ए वीतरागमां रक्त हता रामायणना पात्रोए अने दशरथ राजना कुन्बे बत रत्न वर्तनमां यन्त दशरथ राजाने पाळे जाय छे अेमना गुणनी छाया बधामां पडेली छे कुदरतीनो वडो केवो होवो जोइअे अेनो अेमां बोधपाठ छे दशरथ राजा अनासक्त योगी हता, रोज वीतरागनी भक्ति करता हता

-[व्याख्यान ७]-

आर्य रमणीओमां धर्म जीवत बेठो छे

रामायणमां संस्कृतिनो आदर्श



(प्रेमाभाई हॉल, अमदावाद रविवार ता १०।६।५१)

महापुरुषोअे आर्यदेशनी जे उच्चामां ऊंची कोटिनी आर्यसंस्कृति घडी छे तेनाथी साहित्य सर्वोत्कृष्ट थयुं छे, अने तेमांय श्री रामनुं नाम जगतमां अेटलुं बधुं सुप्रसिद्ध छे के जे नामने लगभग सो क्रोड जाणे छे, आज कारणे आपणे आ रामायणनो विषय लीधो छे

"रामायणमां संस्कृतिनो आदर्श" ए विषय द्वारा रामायणना पात्रोना विषय लीधो छे के जेथी तेना पात्रोने समजवामां आवे, ते ए दृष्टिओ के मानव जीवन केटलुं महत्वनुं छे, तेनो परम आदर्श शुं होई शके ? आ रीते परमादर्शथी मुक्ति मेळवीअे अने बंधनोमां पडवुं पडे नहि मानव जीवननो आ मोक्षनो परमादर्श छे मानव जीवननो परमार्थ छे अने योगना ज्ञान विकासे पहोंचेला महाराजा दशरथना पात्रनी वात गया रविवारे थई गई छे रामना पिता दशरथ महाराजा योगनी प्रथम भूमिका पर हता तेथी तेओ अनासक्त योगी तरीके ओळखाता छे, तेओ तो परमार्थे तेमना देशमां ध्येय तरीके रहीने बेठा हता, सुवर्णना परम उपासक हता सुखोपभोगनी विपुल सामग्री होवा छतां तेओ परम भक्तना भाव नीरखता हता आ उपरथी आपणे आपणी जातने थोडा समजी लेवानी इच्छा करीअे के लाखो नहि जेनी, थोडा समय पछी नाश थई जनारी सामग्रीना उपभोगने आधीन बनी जीवन बरबाद न

राजा दशरथनु दृष्टांत बोधपाठरूप बनशे महाराजा दशरथने गादी, द्रव्य, अने बीजी सामग्री होवा छतां तेओ तेनाथी वंचित अने भक्तिभावे रहेता आ स्थितिना अनुभव तो ते स्थितिमा रहेता होय तेने खबर पडे ज्यारे स्थितिमा उपभोगना आसक्तिथी रहेता होईअे त्यां सुधी दशरथ बनी शकाता नथी अने रामचंद्रजी थवी शकाता नथी रामचंद्रजी तो दशरथना पुत्र छे साम्राज्यना मालिक तो दशरथ राजा छे

महान् महोत्सव—

आ दशरथ राजाअे अेकवार उच्चकोटिना भक्तिभावे अेक मोटो महोत्सव कर्या अने तेमा शांतिस्नात्र ते महाभोगे कर्युं, अने तेनु जळ माथे चढाववानु महात्म्य समजता अेवा दशरथे ते जळ पटराणी माटे कंचुकी साथे अने बीजा माटे दासीओ साथे मोकल्युं, परंतु योगनी प्रथम भूमिकामा पहोंचवा जाग्रत थाय छे, तेवा महाराजा दशरथ पोताने जळ मोकलवानु भूली गया होय तेवी बुद्धि पटराणीमां केवी रीते पेदा थाय छे, तमाथी मरु रामायण जन्मे छे रामराज्य कर्युं ए पटली महत्त्वनी चीज नथी, वीतरागमा तेने महत्त्व नथी, परंतु रामना राज्य पहेला बनेली वात वधु महत्त्वना छे महाराजा दशरथे स्नानजळ मोकल्यु तेमा दासीओ जुवान होई ते तो जल्दी पहोंचाडी आवी, परंतु पटराणीने तो जे कंचुकी साथे मोकल्यु हतु ते कंचुकी वृद्ध हता, अेटले तेने जळ मोडु मळ्यु अने जळ मळे ते पहेला तो पटराणीना हैयामा ए वात जमा के, महाराजाअे आवी वस्तु मोकलवामा पण मने केम भूल्या ! आम तेना हैयामा मोहे स्थान लीधु समजदारने पण भूलवे तेवो मोह छे मोहथी माणसाई रहती नथी, दुर्गंज मे छे आज तो सारा गणाता माणसोमाथी पण माणसाईना नाश थयो छे, तो भणेलामा मोह जणाय आने कइ न नथी मोहने तमे ओळख्यो छो ! तमे तेमाथी सावध छो ? के पछी गाफेलगिरीथी वर्तो छो ? पटराणीनो प्रसंग तो अेक नजारो नजार छे, जे दशरथ माटे बहु लाभदायी

हवो, छता योगनी परम भूमिकामा बेठेला धणाने माटे लूख्या छे. ए हकीकत होवा छता मोहने लूखारा तरीके अळगो रासवो ते तेमे उत्तम दर्शन नहि करी शको मोहने कायम नजर समक्ष राखी, तेनाथी सावध रही आ बधी वातो सामळवी जोईए. महाराजा दशरथनी पटराणीने अपमान लागता तेनामा माहे सचार कर्यो, अने व्याकळविकळ थनी, छता पतिना अपमानथी श्रेक आदर्श आर्य स्त्री तरीके तेणे पतिना सामनो न कर्यो के कजीयो न कर्यो तो शु समान हकने नामे लडवा जवाय? तो शु थाय? अतमा आमां प्राण ज जाय, अने ते पण पोतानी जातने मिटाववाना निर्णय पर आवी जो के महाराजा तेने भूले नहि, अने मळशे त्यारे कहेवाशे अेटलेथी तेनामा मोहे जे स्थान लीधु हतु तेनाथी वात न अटकी जो मोहे स्थान न लीधु होत तो वात आटली हदे न जात, के तने अपघातनी तैयारी करवी पडे, छता बीजा उपाय लेवाने बदले पोतानी जातने मिटाववानो मार्ग लीधो ए बतावे छे के, आर्य स्त्रीमा धर्म जिवत बेठो छे, पण घरोमां आजे झगडा जामे छे, पण मर्यादाशील कुटुबो तेनु नाटक भजवता नथी आवेश आवी जाय तो परिस्थिति मोगवी छे के माग करी छे, अने गळे पाछो पण खाय आम पोताना अपमाननी वात बहार कहेवाय नहि, ए स्थितिमा पटराणी गळे फासो खावा जाय छे, त्या महाराजा दशरथ आवे छे अने परिस्थिति जुवे छे, समानतानी वातो ते वखते नहोती अने स्त्रीओ समान हक नहोती मागती, छतां विवेकी पुरुषाने मन स्त्रीओ केटली किंमते हती ते तमने आमाथी जाणवा मळशे राजा तो परिस्थिति जाई आमो बन्यो, अने फासो काढी नखाव्यो तेने "देवी" थी सबोधी खोळामा बेसाडे छे, कारण के ते समजता हता अने पटराणीने ओळखता हता के कोई कारण विना ते आवु पगलु न ल्ये आजे तो अनेक वायडी वातो थाय छे, आर्य सस्कृतिमां जेनु जे स्थान छे, तेने अने जे कई वायडी वातो थाय छे, तेमाथी कई पण मळवानु नथी ते [illegible] अपमान

राजा दशरथनु दशात बोधपाठरूप बनशे महाराजा दशरथने गादी, ... अने बीजी सामग्री होवा छतां तेओ तेनाथी वंचित अने भक्तिभावे रहेता आ स्थितिना अनुभव तो ते स्थितिमां रहेता होय तेने खबर पडे आ स्थितिमां उपभोगना आसक्तिथी रहेता होइशे त्यां सुधी दशरथ ... शकवाना नथी अने रामचंद्रजी आवी शकवाना नथी रामचंद्रजी ... दशरथना पुत्र छे साम्राज्यना मालिक तो दशरथ राजा छे

महान महोत्सव—

आ दशरथ राजाओ अेकवार उच्चकोटिना भक्तिभावे अेक मोटो महोत्सव कर्यो अने तेमां शांतिस्नात्र ते महाभोगे कर्यु, अने तेनु जळ माथे चढाववानु महात्म्य समजता तेना दशरथे ते जळ पटराणी माटे कंचुकी साथे अने बीजा माटे दासीओ साथे मोकल्यु, परंतु योगनी प्रथम भूमिकामां पहोंचवा आग्रत थाय छे, त्यां महाराजा दशरथ पोताने जळ मोकलवानु भूली गया होय तेवी बुद्धि पटराणीमां केवी रीते पेदा थाय छे,तमाथी ... रामायण जन्मे छे रामराज्य करवु ए एटली महत्त्वनी चीज नथी, वीतरागमां तेने महत्त्व नथी, परंतु रामना राज्य पहेलां बनेली वात बहु महत्त्वनी छे महाराजा दशरथे स्नात्रजळ मोकल्यु तेमां दासीओ जुवान हाईने तो जल्दी पहोंचाडी आवी, परंतु पटराणीने तो जे कंचुकी साथे मोकल्यु हतुं ते कंचुकी वृद्ध हतो, जेटले तेने जळ मोडु मळ्यु अने जळ मळे ते पहेलां तो पटराणीना हैयामां ए वात जामी के, महाराजाओ आवी वस्तु मोकलवामां पण मने केम भूल्या ? आम तेना हैयामां मोहे स्थान लीधु. समजदारने पण नचावे तेवा मोह छे मोहथी माणसाई रहेती नथी, दुर्गा जन्मे छे आज तो सारा गणाता माणसोमांथी पण माणसाईनो नाश थयो छे, तो भणेलामां मोह छतांय आवे सहज नथी मोहने तमे ओळखो छो ! तमे तेमाथी सावध छो ! के पछी गाफलगिरीथी वर्तो छो ? पट राणीनो प्रसंग तो अेक मजानो बनाव छे, जे दशरथ माटे बहु लाभदायी

हतो, छवा योगनी परम भूमिकामां बेठेला घणाने माटे" लख्या छे. ए हकीकत होवा छता मोहने ल्यारा तरीके अळगो राखवो तो तेमे उत्तम दर्शन नहि करी शको मोहने कायम नजर समक्ष राखी, तेनाथी सावध रही आ बधी वातो सांभळवी जोईए. महाराजा दशरथनी पटराणीने अपमान लागता तेनामां माटे शृंगार कर्यो, अने आकळविकळ बनी, छता पतिना अपमानथी अेक आदर्श आर्य स्त्री तरीके तेण पतिनो सामनो न कर्यो के कजीयो न कर्या तो शुं समान हकने नामे लडवा जवाय? तो शुं थाय? अतमां मायां प्राण जाय, अने ते पण पोतानी जातने मिटावराना निर्णय पर थारी. जो के महाराजा तेने भूले नहि, अने मळदे त्यारे कहेवाय भेटलेथी तेनामां माटे जे स्थान लीधु हतु तेनाथी वात न अटकी जो माटे स्थान न लीधु होत तो वात आटली हदे न जात, के तेने अपघातनी तैयारी करवी पडे, छतां स्त्रीमा उपाय लेवाने बदले पोतानी जातने मिटावराना मार्ग लीधो ए बतावे छे के, आर्य स्त्रीमां धर्म जिवत बेठो छे, घणा घरोमां आजे [illegible] थाय छे, पण मर्यादाशील कुटुंबो तेवुं नाटक भजवतां नथी [illegible] थाय तो परिस्थिति भोगवी ले के मार्ग करी ले, अने गळे फांसो पण खाय, आम पोताना अपमाननी वात बहार कहेवाय नहि, ए [illegible] पासो खावा जाय छे, त्यां महाराजा दशरथ [illegible] छे, समानतानी वातो ते घणवे नहोती [illegible] हक नहोती मागती, छवा विवेकी पुरुषाने मन स्त्रीओ [illegible] आमाथी जाणवा मळशे राजा तो [illegible] पासो काढी नखाव्यो तेने "देवी" [illegible] कारण के ते समजता हता अने [illegible] विना ते आयु पगलु न ल्ये [illegible] आर्य संस्कृतिमां जेनु जे स्थान छे, [illegible] तेमाथी कई पण मळवानु नथी, [illegible]

नहिं करता होय तेम मानो छो ! छतां राजाए पटराणीने कोने अपमान कर्यु ? शु थयु ? यतो पूछ्युं आल्ली समानतानी वातो नहोती ते वखते पण पुरुष स्त्रीनु अपमान करतो नहि तमे शु करो छो ?' आमे मारा उपर केटलाक वागळो आवे छे तेमां पूछाय छे के, तमे अहीं जे आज सुधी व्याख्यानोमा कह्युं तेमांथी केटलो अमल थयो छे ? हु कहु छु के, बावाने हिसाब पूछाय नहिं अने गांडाने पूछवामां मजा नहि व्याख्यान समजनारा डाह्या होय तो इच्छवाजोगी छे; के जेम तेओ समजीने जीववा जेवु कार्य करीने जीवे, पण तेने पूछाय केम ?' गांडाने तो पूछीए तो ते सामो थाय माणस कर्मने आधारे ऊंचो नीचो थाय छे तो कर्मनी रचनाने समजनारो नीचे रहेला जावोना तिरस्कार करे ते आर्य देशनी वात नहोतीं बीजा पनी बेठेला आर्योए आजु कई कर्यु होय तो ते आर्य देशनी वात तो नहोती आ दशरथ राजा अने पटराणी बेठा हता अने राजा वात पूछता हता, बोलवा जेवी स्थिति तो रही न हती, छता पोताने जळ नहि पहोंच्यानी वात करी, जेनाथी आल्ली हद पटराणीमां मोढे स्थान लीधु हतु तेनो राजाने ख्याल आव्यो, अने वस्तु बराबर होवानु मान्यु आ दरम्यान कंचुकी जळ लईने आव्यो, ता तेने केम मोडा आव्यो ए पूछता तेने पोतानु शरीर बताव्यु, वृद्धावस्थाथी तेना दात चढीसाल्ना छोलकनी जेम हालता हता, शरीर घडीपोना माळला जेवु हतु अने आखनी भम ना बाळ आरामां आवता हता त कुच नारीरने कारणे ऊ ो ऊभो कपतो हतो शरीर बतावया साथे तेने जणाव्यु क, मोडु थवानु कारण भारी वृद्धावस्था छे कंचुकीए महा राजने शरीर बताव्यु अने पोतानी वात रजु करी ते उपरथी तमे जोशो के त वखते नो.रो पण मोटा राजाओथी केटला निर्भय हता ! आवा महान् अनासक्त योगीओ राज करता त काळमा प्रजाने कोई दुःख नहोतु कारण के प्रजाना दुःखे तेओ पोतानु दुःख मानता कंचुकीना शरीरना हथात उपरथी राजाने ऐ पण दाखलो लेवानो छे के, सारी रीते साचव्या छता आ दुःखाना क्या सुधी रहवानी छे ?' आ कपता कंचुकीने

राजाराणी जोई रह्या अने पटराणी मूझाई, पण महाराजाओ कइ ठपको न आप्यो, के बोल्या पण नहि, कारण के तेमने ससार जीववा आवडतो हतो आजे ज जो तमने पूछ्या के वात कर्या शिवाय तमारी पत्नी गळे फासो खावा जाय तो गुस्सानी वात नथी ! छतां राजा समज्या के जळ मोड पहोंचे तो आम ज बने ते वात खरी छे महाराणी पण समजी जाय छे के, भूल थई, परतु थयेली भूल याद राखवी तेना जेवी कोई मूखता नथी राजाराणी बने कचुकीने तूजे छे अने विचारे छे के, आवु शरीर केवु वृद्ध, अशक्त थई गयु छे ! आवी अवस्था आपणी न आवे त्या सुधी आपणे चोथा पुरुषार्थने अेटले मोक्ष साधवा सज्ज थई जवु जोईअे चार पुरुषार्थमांथी तमारा केटला पुरुषार्थ सधाय छे ! अर्थ अने काम अर्थ अने काममां लीन थयेलाने धर्मनी जरूर पडती नथी, के तेओ मानता नथी, परतु मानवधर्मना परमादर्शरूप चोथो योग आवी जाय तो धर्ममा लीन थई जाय छे अने पापथी छूटे छे, जे पुरुषार्थ जीवनमा पाप करावे अने पाप शिवाय न सधाय ते पुरुषार्थने साचा गणवा के खोटा गणवा ! आवा पुरुषार्थमाथी पण माणस योग माटे तैयार थाय छे परतु ते शाह्यो चांकी घणाने नठोर अने नक्कर बनाव्या छे

शु मोवु जरूरी छे !

आ मानव जीवनमा जे रीते जीवन जीवो छो तेवा सयोग मळे जवाबदारी उठावनार माटे तो पत्नी, धबाधापा उपर अेटलो मोह नथी ने ! महाराजा दशरथ लीलेलु साम्राज्य मूकवा तैयार थया, पर आवी महाराणी, कुटुबिअेने बोलाव्या अने साम्राज्य छोडवानी वात शरू थई मारे पण तमारी पासथी शु छोडी देवानी वात कराववी छ तमारे छोडवु छे ! आनो जवाब तमारी पासथी नहीं मळे कारण के तमे मोहमा आसक्त छो महाराजा गादीतख्तनी वातुथी आसक्त हता, तेमने तेनी असर थई, — तेमने जोइने ... वु सहने करनारा हता त बधाने

अनासक्तभावे बधु हावी गया भरत सामे जोवु तो छुदु ज परिवर्तन लाग्यु पिताना वैराग्य करता पुत्रनो वैराग्य वधी जाय तेम हतो, परतु आधा तो कैकेयीने चिंता पेठी के पति जशे अने पुत्र पण जशे अहिंयी कैकयीना पात्रनो प्रसग शरु थाय छे, महा पुरुषोओ कैकेयीने वखोडी छे, पण ते भूल, छे मोहनी आसक्तिथी भूल थाय ते ते कबूल करे छे पोते कबूल करे ते वात जुदी अने बीजा कही कही कबूल करावे सुधारे ते वळी जुदी आपणे तो बीजानी नानीवी सामान्य भूलने सहन करी शकता नथी बीजी वात ए, छे के भरतने गादी सोंपवानी वात थाय छे त्यारे भरत वैराग्यथी आनद अनुभवे छे, अने दशरथ साथे जवा तैयार थाय छे, रायनी पडापडी करनारा माटे आ वात याद राखवानी छ राजा साम्राज्य छोडे छ, भरतने ते भोगववानु हतु आम भोगववानु भागरे ते त्यागी बने के न भागवे ते त्यागी बने ? जेने जेने महा विराग जन्मे ते बधाय साम्राज्य अने भोग मूके भोगववानी, लेवानी के मूकवानी टेव सारी ? लेवानी टेवमा हवे शु लेवानु बाक्यु छे तमे अडो तो हीरा पण कोलसा थाय छ आजे शु लेवा जेवु लागे छे ? आवी कोई चीज जीवनमा मूकवा के त्यजवा जेवी लागे छे के नहि ? परिस्थिति प्रमाणे आपणे तैयार नहि होइशु तो ज रीते जीववा मागीओ छीअे ते रीते नहि जवाय कैकेयी पोताना पतिने रोकी नथी शकती, अने पुत्र पण जाय छ ते सामे बीजा बोलता नथी, अेटले वचन मागे छ घणा कहे छे के आज सुधी केम नहि माग्यु होय ? पण सारा माणसाने त्या साराने आपेला वचनो मागवानी तक ज मळती नथी कारण के हेतु, सिद्धाळ होय अेटले कजीयाने स्थान ज न होय दशरथ राजानो आवो व्यवहार चालतो हतो के, जेमा कोई दिवस राणीनु अपमान नहि के चीज मागवानी नहि, अने साथे योगी जीवनमा फरज अदा करवानु चूकवानु नहि हवे अनासक्त अने आसक्त योगीनी वात लइअे भोगाने भागववानु छता भाग मूके, नहि तो न स्त्र त्यागी, अने भोग न मळे अने न भोगवे छवाय जेने भोग

गम्या करे ते आसक्त योगी आमा मूळ संस्कार तो अध्यात्मिक केळवणी पर अवलबे छे प्रथम माता, पछी शिक्षक अने पछी धर्मगुरुओ मळे त्यारे साची अध्यात्मिक केळवणीनो प्रवाह चाले आ केळवणी जेवी नथी के जे गमे ते मळे तेने आपे अहीं आत्मा केळववानुं स्थळ 'मा'नु उदर छे परतु आजे तो मूळ वात त्याथी ज बगडी छे माताना उदरमां अध्यात्मिक असर समस्त आजनी केळवणी धुळरूप छे आ वात तो आय देशना बीजमा पडी छे, परतु आ धर्मोपदेश प ता माताना उदरमा अध्यात्मिक असर न मेळवी शकाइ होय अने शिक्षणथी पण न मेळवाइ होय तो सुधरवानी अेक तक छे, अने शाजी बगडी नथी त्या सुधी सुधारी शकाय छे कैकेयीओ वचन तो माग्यु पण राजाअे जणाव्यु के, अेक वस्तुनी बादबाकी करवी पडशे, में जे वखते वचन आप्यु ते वखते हु बधु छोडवाना तैयारीना स्थितिमा नहोतो, अेटले ते माटे तु रोकी शकशे नहि आज तो वधारमा घर माडनारा मोहनी असरमा माडता हय, पण मोहमा विचारेली चीज मोह शिवा बनी स्थितिमां वचनकर्ता न बनी शके अगाउ तो वचन खातर प्राण आपता, राजाअे पण आपेलु ते पाळवा तैयार हतो अने वचन तो पाळवा आप्यु ज हतु

टिकीट पण मफत मेळववानी दानत—

कैकेयीनी मागणी समय राम, तेमनी माता, लक्ष्मण बधा हता गादी आपवानी आडे आववानो कोईने हक नहोतो, पण कैकेयीनी मांगणीनी कोई उपर असर थइ नहि आम वधार केवी रीते चाले ! शातिमा के अशातिमा ! अेक बाजु दशरथ योगनी पहेली भूमिकाअे जवानो निर्णय करी भरतने गादी सोंपे छे, अने आपेलु वचन पाळे छे परतु आ बधी चिंता वचन पाळवु होय तो होयन ! राजाने आ स्थितिमा नरस्त थाय, पण कई ज थतु नथी राजानो राम गयो हतो तेनाथी बधाने चिंता थई पण तेने नहि, राजा राजगादी छोडीने जाय ते तो परपरा छे तमे तमारा पुत्रने पेदा सोंपी जाओ छो !

छु आ रामायणना बधां पात्रोनी चर्चा अेटला माटे करु छु के आर्य संस्कृतिनु दर्शन प्रतिबिंब थाय अने तेनो ख्याल आवे ता पण ते संस्कार प्रमाणमा रेडाय परदेशमा आजे छापा बजारमां खुल्ला मूकाय अने जो पैसा नाखी अेक अेक लई जाय, तने कोई जोनारज नहि केवी प्रामाणिक्ता ! हिंसामां नहि अटकनार जेवा अनार्य देशोमा आ परिस्थिति छे, ज्यारे सत्य अने अहिंसाने मार्ग चालता आर्य प्रदेशमा ता रेल्वेनु भाडु अने तेमां खास करीने तो युरानोज नथी आपता, टिकीट पण मफत मेळववानी दानत मरता मुधा घर छाडतु नहि अे आदर्श केवो ! कोइ आय संस्कृतिमा क्याय अेवो आदर्श छे के मरता मुधी घर न छोडवु !

दशरथना वचनथी कैकेयी खुश थई, पण भरत राजगादी स्वीकारवा तैयार नहोता अेटले राज न लेवानी तकरार थई अहि तो राज लेवानी तकरार चाले छे आ दरम्यान राम आ'या तमने जोई बहु खुश थया

रामराज्यनी वात—

हवे रामराज्यनी वात अहींथी शरु थाय छे राम ता प्रजाप्रिय हता, ते गादी मेळववा धारी सशक्त पिताना अ'याय अने अपरमातानी वैरवृत्तिनो विचार तेमणे कर्यो हात तो आजे रामायण जुदु ज लखात आजे तो तमारु आकर्षण रामराज्यनु छे रामनु नहि, परतु तम रामना आदर्शामां क्या काम आवो छा ? आजे तो रामनु नाम लेनारा पण तेमना आदर्शो पाळवा नथी जो आमज चाले तो गृहसंसार देवाळियो ज होय पछी कांई घासलेट छांटीनेय बळी मरे रामना अेक अेक जवाबमां आर्य संस्कृति भरेली छे दशरथ ता त्यागनी प्रथम पंक्तिअे हता, अेटले तेमनामा आर्य संस्कृति होय ज, अेटले रामनी माता कौशल्या पाछळथी आवेली कैकेयी सामे कड बोल्या नहि बाकी आज तो वातवातमा अभिप्रायो आपी देवाय छ आ तो बने शोको छतां बेनोना जेवु हेत हतु,

अने अेक-बीजाने-नानामोटाने जाळवता अने त्यागी होवा छता तमे शाहे जिवो छो ते जाणवानी इच्छा छे सुख तो सारा सस्कार होय-पछी भले सूको रोटलो मळे तेमा छे मालपुवा पकवानमा-असस्कारितामा सुख नथी. आजे बधा प्रश्नोमा कायदा ने तमारा सधारानु प्रतिबिंब छे, नहि तो कोइनी शु हिंमत छ के, कोईनी मा-बेहन के दिकरी माटे बीजा वात करी शके के विचारा शके, तथा विधवाने बीजे परणाववानी वात करी शके ! अ ता देखना नालायकीनी वात छे विधवानी वात करवानो बीजाने शु अधिकार छ ! कैकेयीने रामे के दशरथे वगोवा नथी, शोकाओ वगोवी नथी, तो पारकी वातो करनाराओन तमने वगोववानो शु हक छे !

—oo—

-[व्याख्यान ८]-

आजे भोगलालसा वधु जागी छे, अने भोगनु पुण्य परवारी गयु छे

——oo⊕oo——

(प्रेमाभाई हॉल, अमदावाद रविवार ता ७।१०।५१)

उपकारी महा पुरुषोअे जेओने मानव जीवननी किंमत समजाइ हुये, अने अे जन्मद्वारा जेओ पोताना परम आदर्शने मेळववाना साध्यने सिद्ध करवा आतुर छे, अेवा जीवोने जे रीते जीववु जोईअे अेवी सस्कृति मळी शके अे हेतुथी जे जे महापुरुषो थया के जेमना जीवन सामे जोई योग्य आत्मा पोताना जीवनने सुधारी शके, अेवा महापुरुषोना जीवन-प्रसगो शास्त्रोमा ठाठी ठाठीने भरेला छ, अने जे प्रसगो आपणे वर्णवी

ट आ रामायणना बधां पात्रोनी चर्चा अेटला माटे करु छु के आर्य संस्कृतिनु दर्शन प्रतिबिंब थाय अने तेनो ख्याल आवे तो पण ते संस्कार तमाराम रेडाय परदेशमा जाजे,छापां बजारमां खुल्ला मूकाय अने को पैसा नाखी अेक अेक लई जाय, तने कोई जोनारज नहि केवी प्रामाणिकता ! हिंसामा नहि अटकनार जेवा अनार्य देशोमा आ परिस्थिति छे, ज्यारे सत्य अने अहिंसाने मार्गे चालता आर्य प्रदेशमा ता रेल्वेनु भाड़ अने तेमां खास करीने तो मुवानोज नथी आपता, टिकीट पण मफत मेळववानी दानत मरता सुधी घर छोडवु नहि अे आदर्श केवो ! कोर आय संस्कृतिमा स्याय अेवो आदर्श छ के मरता सुधी घर न छोडवु !

दशरथना वचनथी कैकेयी खुश थई, पण भरत राजगादी स्वीकारवा तैयार नहाता अेटले राज न लेवानी तकरार थई अहि तो राज लेवानी तकरार चाले छे आ दरम्यान राम आव्या तेमने जोई सहु खुश थया-

रामराज्यनी वात—

हवे रामराज्यनी वात अहींथी शरु थाय छे राम ता प्रजाप्रिय हवा, ते गादी मेळववा खारी समस्त पिताना अन्याय अने अपरमातानी वेरवृत्तिनो विचार तेमणे कर्यो हात तो आजे रामायण जुदु ज लखात.आजे ता तमार आकर्षण रामराज्यनु छे, रामनु नहि, परतु तम रामना आदर्शोमा क्यां काम आवो छा ! आजे तो रामनु नाम लेनारा पण तेमना आदर्शो पाळता नथी जो आमज चाले तो पहसवार देवाळियो ज होय पछी काई पासलेट उठीनेय वळी मरे रामना अेक अेक जवाबमा आर्य संस्कृति भरेली छे दशरथ तो त्यागनी प्रथम कक्षाओ हता, अेटले तेमनामां आर्य संस्कृति होय ज, अेटले रामनी माता कौशल्या पाछळथी आवेनी कैकेयी सामे कइ बोल्या नहि बाकी आज तो वातवातमा अभिप्रायो आपी देवाय छ आ तो बने घोडो छता बेनोना जेवु हेत हतु,

अने अेकबीजाने-नानामोटाने बाळनता अने त्यागी होवा छतां तमे छाई जिवो छो, ते आगवानी इच्छा छे सुख तो सारा संस्कार थाय-पछी मळे सूका रोटला मळे तेमां छे मालपुवा पकवानमां-असंस्कारितामां सुख नथी आजे बधा प्रश्नोमां कायदा ने तमारा संधारनु प्रतिबिंब छे, नहि तो कोइनी शु हिंमत छ के, कोईनी मा-बहेन के दिकरी माटे बीजा भाव करी शके के विचारी शके, तथा विधवाने बीजे परणाववानी वात करी शके! आ तो देशना नालायकीनी वात छे विधवानी वात करवानो बीजाने शु अधिकार छे! कैकेयीने रामे के दशरथे वगोवा नथी, लोकोअे वगोवी नथी, तो पारकी वातो करनाराओने तमने वगोववानो शु हक छे?



-[व्याख्यान ८]-

आजे भोगलालसा वधु जागी छे, अने भोगनु पुण्य परवारी गयु छे



(प्रेमाभाई हॉल, अमदावाद शनिवार ता ७।१०।५१)

उपकारी महा पुरुषोअे जेओने मानव जीवननी किंमत समजाई हवे, अने अे जन्मद्वारा जेओ पोताना परम आदर्शने मेळववाना साध्यने सिद्ध करवा आतुर छे, अेवा जीवोने जे रीते आनदु जोइअे अेवी संस्कृति मळी शके अे हेतुथी जे जे महापुरुषो थया के जेमना जीवन सामे जोइ योग्य आत्मा पोताना जीवनने सुधारी शके, अेवा महापुरुषोना जीवन इतिहास शास्त्रोमां ठासी ठासीने भरेला छ, अने अे प्रसंगो आपणे वगरी

टु था रामायणना बधां पात्रोनी चर्चा अेटला माटे करु छु के आर्य संस्कृतिनुं दर्शन प्रतिबिंब थाय अने तेनो ख्याल आवे तो पण ते संस्कार अमाराना रेडाय परदेशमा आजे छापा बजारमा खुल्ला मूकाय अने छो धा नाखी अेक अेक लई जाय, तेने कोई जोनारज नहि केवी प्रामाणिकता ? हिंसामा नहि अटकनार अेवा अनार्य देशोमां आ परिस्थिति छे, ज्यारे सत्य अने अहिंसाने मार्गे चालता आर्य प्रदेशमां तो रेल्वेनुं भाडुं अने तमां खास करीने तो मुसाफरोज नथी आपता, टिकीट पण मफत मेळववानी दानत मरता सुधी घर छोडवुं नहि अे आदर्श केवो ! कोई आय संस्कृतिमा क्याय अेवो आदर्श छे के मरता सुधी घर न छोडवुं !

दशरथना वचनथी कैकेयी खुश थई, पण भरत राजगादी स्वीकारवा तैयार नहोता अेटले राज न लेवानी तकरार थई अहिं तो राज लेवानी तकरार चाले छे आ दरम्यान राम आव्या तमने जोई सहु खुश थया

रामराज्यनी वात—

हवे रामराज्यनी वात अहींथी शरु थाय छे राम तो प्रजाप्रिय हता, ते गादी मेळववा धारी सशक्त पिताना अन्याय अने अपरमातानी वैरवृत्तिनो विचार तेमणे कर्यो हात तो आजे रामायण जुदु ज लख्यात आजे तो तमारु आचरण रामराज्यनुं छे रामनुं नहि, परतु तमे रामना आदर्शोमा क्या काम आवो छो ? आजे तो रामनुं नाम लेनारा पण तेमना आदर्शो पाळना नथी जो आमज चाले तो गृहसंसार देवाळियो ज होय पछी कोई घाणलेट छाटीनेय बळी मरे रामना अेक अेक जवाबमा आर्य सस्कृति भरेली छे दशरथ तो त्यागनी प्रथम कक्षाओ हता, अेटले तेमनामां आय सस्कृति होय ज, अेटले रामनी माता कौशल्या पाछळथी आवेली कैकेयी सामे कई बोल्या नहि बाकी आज तो वातवातमां अभिप्रायो आपी देवाय छ आ तो बन्ने शोको छतां बेनोना जेवु हेत हतु,

अने ओक बीजाने-नानामोटाने जाळवता अमे त्यागी होवा छता अमे सार्ं जिवो छो ते जाणवानी इच्छा छे मुख तो सारा संस्कार होय-पछी मळे सूको रोट्लो मळे तेना छे माल्पुवा पकवानमा-असंस्कारितामा सुख नथी. आजे बधा प्रश्नोमां कायदा ने तमारा सवालनु प्रतिबिंब छे, नहि तो कोइनी शु हिंमत छ के, काईनी मा-बहन के दिकरी माटे बीजा वात करी शके के विचारी शके, तथा विधवाने बीजे परणाववानी वात करी शके ? अ त्ता देखता नालायकीनी वात छे विधवानी वात करवानो बीजाने शु अधिकार छे ? कैकेयीने रामे के दशरथे वगोवा नथी, लोकोअे वगोवी नथी, तो पारकी वातो करनाराओने तमने वगोववानो शु हक छे ?

—oo—

–[व्याख्यान ८]–

आजे भोगलालसा वधु जागी छे, अने भोगनु पुण्य परवारी गयु छे

——oo⊕oo——

(प्रेमाभाई हॉल, अमदावाद रविवार ता ७।१०।५१)

उपकारी महा पुरुषोओ जेओने मानव जीवननी किंमत समजाइ हशे, अने ओ जन्मद्वारा जेओ पोताना परम आदर्शने मेळववाना साध्यने सिद्ध करवा आतुर छे, अेवा जीवोने जे रीते जीववु जोइअे अेनी संस्कृति मळी शक अे हेतुथी जे जे महापुरुषो थया के अेमना जीवन सामे जोइ योग्य आत्मा पोताना जीवनने सुधारी शके, अेवा महापुरुषोना जीवन इत्यादि शास्त्रोमा ठामी ठामीने भरेला छ, अने जे प्रसंगो आपणे वर्णवी

पछा छीओ योगनी त्रीजी भूमिका पर बेठेला दशरथ राजा साम्राज्यना मालिक होवा छता अेनी असर नाचे आव्या विनाना वीतराग परमा त्माना भक्त हता माटे साम्राज्यने तरणातुल्य लेखता हता तेने तथी योगनी पहेली भूमिका पर आरुढ थई परमपदने नजीक पहोंचवु तेना परथी आखा रामायणनु सर्जन थयु छे.

दशरथ राजाओ बहुने अेकत्र करी पोते निवृत्ति लेवानो निर्णय जाहेर कर्यो वीतराग शासने जे दृष्टिओ दशरथ राजा अने रामने जोया छे ते दृष्टिओ हु मुकु छु आ अगे अनेक दृष्टि चालु छे तेमा आ दृष्टि पण आवे छे दशरथ राजाओ ले व त मूकी, तेनी बीजा करता भरत उपर उच्च कोटिनी असर थइ, अने दशरथ राजा जेवो ज भाव तेमनामा जन्म्यो हतो पहेली अने त्रीजी भूमिका उपर रहेला जीवो उपर मोह कइ रीते स्वारी करे छे ते आपणे केकेयीना पाथ उपरथी जोयु छे भरते दशरथ ओडे जरानी विनति करी हती तेमने लाग्यु हतु के ससारमा रहेता पिताना विरह वेठवो पडशे अने ससारनु तर्पण करवु पडशे तमे ससारनु तर्पण शु छे जाणो छो ? तमे आखी जींदगी ससारना तर्पणमा पसार करी छे, तमे ससारनो भोग आपो छो के महापुरुषोना सिद्धान्तोना केटलाक सिद्धान्तोना भोग आपो छो ? भरते पिता साथे जवानी मागणी करता केकेयीने थयु के पति जशे अने पुत्र पण जशे, अेटले भरतने राखवा माटे तेने दशरथ राजा पासे भरतने राज आपवा वचन माग्यु दशरथ अने केकेयीओ वीतराग भगवानने बीजाओनी जेम पछा नथी जेन परमपदनी इच्छा होय अेवा आत्मा मोहमा आवी न करवानु करे, पण जेमने योग के परमपदनी किंमत नथी तेवाओ परलोक विसर्यो छे, अने आ लोकनी साधनामा सर्वस्व मान्यु छे, तेमना पर मोह जे रीते स्वारी करे छे, तेवी स्वारी आमना पर थती नथी

सदाचारी याद छे के ?

केकेयीओ वचन माग्यु त्यारे दशरथे कह्यु के वचन आपती वखते मे

मारी पासे म्होटु ते शिवाय बहु माग ! पहेला तेमनी पासे पहेली भूमिका पर जवाना उत्साह नहोतो, ते हवे आव्यो हतो, जेटले ए शिवाय तेओ बहु आपवा तैयार हता तमने आ जन्म शा माटे छे ए याद छे ! सदाचारोना नाम बोली जाओ खरा ! ए याद नथी, केम के तमारु साधना विनानु ध्येय छे अनेक मरे तेमा अमारे शु ! बीजा गुन्हो करे, पकडाय, फजेती थाय, पण आपणे पकडावाना नथी अेवी वृत्ति छे जगतमा जे थाय छे तेनी असर तमारा उपर थाय छे खरी, पण "करे ते भोगवे" अेवी वृत्ति होय तो तमे करो अने भोगवो त्यारे जगतनी मान वता परवारी गई छे अम कहेवो नहि !

दृष्टि बदलाय तो—

जो दृष्टि बदलाय तो जीवन बदलाय, शक्तिना प्रमाणमां जीवन बद लाय तोय बस सुख शान्ति भोगवी शकाय अेवो आजनो काळ नथी अने जे सुखे जीवतो नथी, ते सुखे मरतो पण नथी अनेक दु खोमां सुखे जीववु एज खरी मानवता छे ए त्यारेज शीखाय ज्यारे दशरथ जेवा महा पुरुषनु चित्र नजर समक्ष होय महा साम्राज्य जेमणे चलाव्यु अने मूक वानी वेळाअे आटलु मोटु राज्य केम मूकाय अेवो विचार सरखो न आव्यो कैकेयीने वतानेय विना तमने वचन मागवानु कह्यु कैकेयीने विश्वास हतो के पति रोकाशे नहि, तमारा पर तमारा घरनानो आवो विश्वास खरो ! तमारा वचन पर दुनियानो व्यवहार चाले ! कैकेयीअे वचन लेता दशरथ राजा पासे सही नहोती करावी आजे ए चाले ! अने न चाले तोये अेम नथी लागतु के मानवता सडी गई छे ! व्यवहार वचने चाले के दस्तावेजे ! पण आजे तो दस्तावेजेय व्यवहार नथी चालतो दस्तावेज लखती वेळा कायदानी बारीकी जोवाय छे, अने ए कायदानी बारीकीअे ज होळी [illegible] छे कैकेयीअे भरत माटे राजगादी मागी हेतु ए के भरत [illegible] रामे राज आप्यु तमने थशे के

अेटले आप्यु पण न छोड्यु होत ने मागत तो य न आपत ? पोताने मळेली चीज बीजाने उपयोगी होय, अेमाथी बीजाने शांति थता होय तो ते तमे आपो खरा ?

रामनो हक्क हतो, छतां—

राज उपर रामनो हक्क हतो, दशरथ ए समजता हता, छता तेमने विश्वास हतो के हु अेमे तेने राज आपी दउ अने राम हकनो दावो करतो आवे ए असंभवित छे दशरथे संसार चलावेलो हतो अने ए सुंदर जीवननी असर सहु पर हती दशरथे रामने बोलावी विगत कही अने साम्राज्य छोडी संयम लेवानो पोतानो निर्णय जणाव्यो, कैकेयीअे मागेला वचननी हकीकत पण कही भरतने राज आप्यानी वात सांभळ्या पछी तमने लागे छे के शान्ति रहे ? अने आ जमानामा ? न रहे केम, आ जमाना शिक्षित नथी ? वधु शिक्षित छे ने ! ए शान्ति आ जमानामा न रहे, अेनो अर्थ ए के ते काळे जे भणतर हतु ते आज नथी ने ? रामे तो पितानी वात सांभळी आनंद अनुभव्यो, अने कैकेयी माताअे भरत माटे राज माग्यु ए माटे सारु कर्यु अेम कह्यु, आवो प्रसंग आजे बने तो धांधल मच्या विना रहे ! आजना समयमा कैकेयी शु बोले तेनी कल्पना आवे छे ? रामायणमा संस्कृतिनो शु आदर्श हतो ते अेना पाने पाने लाववो छे राव-णने पण लाववो छे ए रावण तमारा करता खराब हतो अेम मानवु भूल भरेलु छे रामायणना पात्रो विषय के कषायना गुलाम नहोता राम पाणी पुत्र हता, राज्यना हक विषे अेमने कदि कल्पना आवी न हती केम के पितानी चरणसेवामा वैभव अने राज्य करता तेमने मन वधु सुख हतु रामनु ध्येय हतु पोताना तरफथी पिताने आनंद मळ्या करे हु पूछु के घर कोनु, तमारु के तमारा मा बापनु ? आर्य संस्कृति शु छे ए समजो ! ज्यारथी लेभागु अने ब्याहोअे आर्य संस्कृतिनी वातो करवा मांडी छे त्यारथी आर्य संस्कृति हीन बना गई आज तो पुत्र कहेशे मा-बापना दोष कहेवामा वांधो शु ? मात्र न कहेनाय दोष अेना अने अनी बायडीना !

घरमा रामनी दखल शी ?

रामनी इच्छा हती के पोताने कारणे मा-बापने दु ख न थाय [illegible] दशरथनु वचन आवकार्यु, अने कैकेयीने घेर लोही चढ्यु, कैकेयी धार- मान माता हती, प । रामने मन अेवो भेद नहोतो दशरथने अनेक [illegible] हती, पण तेमनो परस्परनो वर्ताव, तेमना बाळकोनो एक [illegible] वर्तांव ए अेक जीवन जीववानी कळा हता, [illegible] के आपे मने पूछ्यु ते महेरबानी ! पण मने दु ख थयु [illegible] अविनयी कहेवाइश के दशरथने पण रामने पूछ्यु पड्यु [illegible] पूछ्यु पडे ए पुत्रनो अविनय गणाय

घरनी बधी चाज मा-बापनी हाजरीमा कोनी गणाय ? [illegible] कयो कायदो ! राजनो कायदो छे ! तमारे घरमां राज [illegible] आजे तो कोइ मा-बापने पूछीअे तो कहेशे ' भाई ' [illegible] धारी रीते जीवन जीवे तो राज वचमा न आवी शके, [illegible] वचमा न आवी शके आ दशना सस्कार जी[illegible] दृष्टातो नजर सामे राखवा जोईअे, पिता प्रथम [illegible] पुत्रने मागवानो हक नथी पुत्र समजे के [illegible] कर्यो छे आ रीते घर चालतु होय तो बराबर [illegible]

आजे वडील जेवु काई रह्यु छे खरु ! [illegible] माता पिताना चरणमा सघळा सरचि [illegible] छे पुत्र ज्यारे माता पिता तरफथी [illegible] वात थती तोज विरोध करता [illegible] दीकरा अने वहुनी आज्ञामा रहेवु पडे [illegible] बापने आभारी छे तमे कोई दिवस [illegible] आप्यु छे ! के ते ठगाय [illegible] पत्ना भला माटे छे, अने मूडी [illegible] करवानी होय [illegible] वातो [illegible]

रामायणनो शिक्षापाठ

रामे तो कह्यु के हु अने भरत अेक छीअे, अने आपने मन पण अं
बन्ने सरखा छीअे दशरथ राजानु मन आ जवाबथी प्रसन्न थयु अ
रामायणनो मोटो शिक्षापाठ छे, मोटो आनद छे

श्योक ए शेक —

दशरथना घरमा घणी राणीओ हती, ए शोक हती अने शोक अेटले
शेक हु तो लाबी वात करनारने पूछु के एकथी बीजी नथीने ! तो
बधा ता अेकवाळा ज छाने ? अगाऊ अनेक स्त्रीओ होवा छता घर सखा
आजना अेकवाळा करता सारो चालतो

कैकयीअे भरत माटे राज माग्यु, त्यारे लक्ष्मणनी माता काइ न बोली,
अने रामनी माताअे पण कैकेयी सामे दात न कचकचाव्या आमा त्याग
कोनो वखाणवो, रामनो के बधानो ! पटराणीपदे रामना माता हता,
राजगादीना हक्कदार राम हता, छता कौशल्या काइ बोल्या नहि केम के
तेमना सघारनो पायो मजबूत हतो तमारा ससारनो पायो आवो मजबूत
करो ! कैकेयीए भरत माटे राज माग्यु, तेथी अयोध्या ऊचीनीची थई
गई दशरथना राज्यमा राज लेवानो नहि, पण राज न लेवानो कजीयो ऊभो
थयो हतो तेओ मानता के राज मानव माटे तरणा जेवु हलकु, अने धन
करता मानवजीवन किंमती हतु तमे मानवता माटे बनेना भोग आपी
शको खरा ! आजे तमारा पासे मानवता शु मागे छे ! आजे आखो देश
आपत्तिमा छे, माटे मानवता धन लोभनो त्याग मागे छे, आजे भोगलालसा
वधी छे, पहेला महा पुरुषोनी भोगलालसा मरी हती, अने भोगपुण्य वधु
हतु आजे भोगनु पुण्य ओछु अने भोगनी भूख वधु छे

भरतनो त्याग —

दशरथ भरतनो राज्याभिषेक करवा मागता हता, पण भरतनो ते सामे

वाघो हतो, ते तो दशरथ साथे ज जवा तैयार हता. कैकेयी मोहपरवश हती, पण पुत्र मोहपरवश नहोतो रामे भरतने कह्यु हतु के तने राजगादीनो गव नथी, पण पिताना वचननी सफळता खातर ए लेवी जोईये, पिता-माता-वडीलभाइ बधानी संमति होय तो पछी भरतने राजगादी लेवामा वाघो हतो ! आवी तक तमने मळे तो ! पण भरत तो रामना चरणमां ढळी पड्या हता, अने कह्यु के दु गादी छउ ता आ बापनो दीकरो अने तमारो भाई न गणाउ भरत राज लेवानी ना पाडता हता, तो ए राज शाह होय ! रामने लाग्यु के मारी हाजरी हशे त्यां सुधी भरत गादी नहि ले, एटले रामे जंगलमां जवानो निश्चय कर्यो

अत्रे आचार्यश्रीजे जणाव्यु हतु के रामायणना पात्रोने अमे जे दृष्टिए मानीए छीए ते रीते रजु करीए छीए

आजे मानवी जेटली नीतिनी वात बोले छे, तेटली तेने हैये होय छे खरी ! रामने हैये अने होठे नीतिनी वात हती रामे जंगलमा जवानो निश्चय कर्यो, अने भरत मुक्तकंठे रोयो दशरथने चक्कर आव्या, कैकेयीने आघातनो सचार थयो, पण दशरथने लाग्यु के वनमा राम दु ख केम सही शकशे ! रामने लाग्यु के वचन पाळवु होय तो स्नेहना मोहमा खेंचावु न जोईए ए चाली नीकळ्या, रामे कौशल्या पासे जइ हकीकत कही रामने वनवास, आ सांभळीने ते पण मूछा पाम्या, रामे माताने समजावी के तु मारा पिताना धर्मपत्नी छे तो कायर स्त्रीने उचित आ शु ? वीरनी पत्नी वीर जोईए राम सिंहणनो दीकरो छे अेने वननो भय शो ? रडती धूजती माताए रामने रजा आपी आमा कोने महान् मानवा दशरथने, रामने, कौशल्याने ? बधाज महान् हता

राम आ रीते वनवास जवा तैयार थया त्यारे सीताने पूछ्यु नहोतु मने लागे के तमारो आ सामे विरोध ऊठे खरो ? तमारे राम के दशरथ जेवा थवु छे के ? रामे सीताने पूछयु न हतु तेनो सीताने आघात नहोतो

पण आ समाचारथी तेओ आनंद पाम्या, अने राम पाछळ जवा यया वर्तमानमां आवु होय तो शु बने ! घेरघेर दशरथ जेवा बाप, जेवा पुत्र अने कौशल्या जेवी माता होय तो संसार स्वर्ग बनी जाय

—[व्याख्यान ९]—

पारका मा-बाप पोताना करी शके अेवु शिक्ष दिकरीओने कॉलेजमां मळे छे के ?

——oooooo✿oooooo——

(प्रेमाभाई हॉल, अमदावाद रविवार ता १४।१०।५१)

मानवजीवन किंमती छे—

अनंत उपकारी महापुरुषोना वचनने अनुसरीने अने वचन सांभळवाना, विचारवाना योगे जेमना हैयामां ए वात निश्चित छ के आ संसारमां मानव जन्म ए किंमतीमां किंमती वस्तु छे, ए द्वारा आत्माओ परमपदने साधवु जोइअे अने अेनी साधना माटे आत्मान परमपदनो राह योजी आपे अेवा योगनु आराधन करवु ज जोईअे अने अेवी जेमनी खात्री छे, पण योगनी पहेली–बीजी भूमिका उपर पहोंचवानी शक्ति नथी अेवाओ बीजी के त्रीजी भूमिकामां रहेली योगनी भूमिकामां अगर तो पहेली–बीजी भूमिकामां रही तेओअे जीवन केम जीववु ते माटे आर्य देशना पुरुषोअे पद्धति पूरी पाडी छे अने अेने आपणे संस्कृतिना स्वरूपे जोईअे छीअे

रामायणना पात्रोमां दशरथ, राम अने राणीओ वगेरेने वीतराग भगवानने कई रीते जेया छ अेनुं वर्णन चाले छे जेटले जे चिठ्ठीओमां प्रभो

आवे छे, तेना जवाबो पछीथी आपीशुं. रामायण अने वीतरागे जे दृष्टि करी छे ते अहीं कहेवाय छे

जीवन-जीववानी कळा—

आय तरीके जीववानी सुंदर कळा रामायणना पाने पाने पूरी पाडे छे दशरथ महा साम्राज्यना मालिक हता छतां राज्यनी पकड तेमना पर न हती राज्य जेना पर पकड करे तेवा राजाओने नर्कना अधिकारी कह्या छे अहिं बेठेला जेओ गृहजीवन जावे छे तेओ आर्योने उद्देशीने कहेली संस्कृतीने ओळखे नहि तो आववा जन्मे बधु नुकसान पाम, जेटले ए जीवो बधु नुकसान न पामे ए माटे घरवासमां बेठेला लोकोने आ जीवनानी कळा आर्य संस्कृतिने अनेक कथाओमां आलेखी छे, तेमां आर्य संस्कृतिनु दर्शन कराव्यु छे

राम त्यागी हता—

कैकेयीने जो वचन मांगवानो विचार न सूझ्यो होत तो रामायण रचात खरं! दशरथे वचन आपी शक्या अने पाळी शक्या ए रामना बाप हता, तमारा जेवा बाप होत तो ते न आपी शकत रामे दशरथने जे वचनो कहेला ते न कह्या होत तो रामने आजे याद कोण करत ! रामनी मालिक पणा आव्ये त्यागनी तैयारी करवाना तमे विचार कर्यो छे ! साम्राज्यना मालिक होवा छतां राम त्यागी हता दशरथे अने रामे भरतने राज्य आखु आप्युं ते उदारता, पण न लेवु ए भीलाशीवेडा नथी ! भरते कह्यु, " राज आपो एमां आपनी मोटाइ पण हुं लउं एमां मारी लघुताई " पिताने आ रीते वचन आपवानो अधिकार छे, एवो विचार रामने आवी जाय तो ! पण ए विचार आव्या ज नहि, अने ए वनमां जवा तैयार थया, दशरथ पर जराक मोहनी असर थई, पण बोल्यु न फर बेठेला एमनो मक्कम ... राम जाय छे, भरत रुवे छे,

लेवानी आवा तमे बनो तो घरसंसार पेठो चाले ! सहु आपवा तैयार ना होय, आ आर्य संस्कृति छे तमारा हकनी भौतिक चीजथी बीजानुं भलु थतु होय तो आपवा माटे तमे तैयार रहो ! अने कोई ए रीते आपवा तैयार थाय तो ते लेवानी आतुरता पण रहो-के ! बधाने दिकरा राम जेवा जोईए छे, पण स्वार्थे वरते बधु भूली जाय छे आर्यो घरमां पेठा पण केम जीवे तेनी कळा आ संस्कृतिए बतावी छे

ए रीते जीवो—

सीता दशरथने नमन करी कौशल्या पासे आवी सासु तो वहुनी मा ने ! सामुने मन दीकरी किंमती के वहु ! तमारा घरमां पण कोकनी सासु तो छे ने ! आजे केम चाले छे ते तो जाणो छो ने ! तमे ससारमा ए रीते जीवो के तमारा सपर्कमा आवनारनी दुर्गति न थाय सीता कौशल्याने " तमने शु हक " एम कहेवा न्होती आवी , आजे हकनी वात तो घणी चाले छे, पण आय देशमा सहु सहुना हक हता, पण कोइना पर हक ठोकी बेसाडवानी बेवकूफी न्होती आपणे त्या स्त्रीओनु जे गौरव थतु ते हवे मरी गयु छे तमारा ससारमा थाई मळ्यु नथी एटले पण त्यागनी जरुर छे अने ससारमा छे शु, भोग तमने पूछता नथी छता तेनी केडे पड्या छो आजे ता खावाय नथी, झगडा ऊभा छ पति आवे त्यार पत्नी बारणा आगळ ऊभी रहेती, अने पोते जमाडती आजे तो सामञ्यु छे के घणा शेठीआओने रसोया जमाडे छे आ इसवा जेवी वात नथी पति-पत्नि एक बीजाना साथी एमनी एक बीजा प्रत्ये काई फरज पण खरी रामनो, सीतापर अपार स्नेह हतो पण ए फरज चुकावे एवो न्होतो

अशुभ बने तो वहु पगभागी !

सीताए कौशल्या पासे वनमा जवा रजा मागी कौशल्याए राम वनमा गया एनो आरोप सीता पर न मूक्यो तमारे त्या काई खराब बने तो

वहु कमभागी ज कहेवाय ने ! बाकी बधा धोळापणा शुं ने ! तमे दीक-
रानी वहु लावो छो, तेना उपर तमारा परवार जेवा छे एवी छाप पडे
एम वर्तो छो ! तमारु घर तमारा दीकरानी वहु माटे पारकु के पोतीकु !
वाजां तो खूब वगडावो छो पण एनो कई अर्थ जाणो छो ! कारणे
त्या छोकरो मर्या पछी वहुना खर्चो बाप्पाना बनाव बनेला छे
वहुन बराबर सावची होय तो ते ससराना घरने पोतानु माने, सानु
ससराने साचा मा-बाप माने, घरनी मालिकी पोतानी समज, आ
वातो समजवा जेवी छे ससार समजे नहीं तेमने माफवो नहीं, अने
अगमम्ये माडेलो ससार छोडवामा बाधो नहि वीतराग धर्म, गृहस्थो
अने गुरुने मानमार एवी रीते ससारमा रहे छे के बीजाने वदन करवानु
मन थाय कौशल्याए सीताने दीकरी करी हती. जेम के दीकरी तो पारके
घेर जवानी होय छे त्यारे वहु कायम. पोतानी पासे रहेवानी होय छे कॉले-
जमा भणवा मोकलो छो ते एवु शिक्षण छे छे के पारकाना मा-बाप
पोताना करी शके ! घणी स्त्रीओने तो रसोई करता पण आवडती नथी
कॉलेजमां भणी जेटले रसोई न आवडे, वासण मांजता पण न आवडे कोई
छोकराने बगर क नोकरी करता न आवडे तो ! आ हु एटला माटे कहु
छु के धर्म तमारा सुधी पहोंचतो नथी राणीओ राजाने पीरसती, दीक-
राने मा पीरसती अने सूके रोटले घेर डाहि चढावती मांदगीमा पतिनु
माथु पत्नीना खोळामा रहेतु आ आपत्ति वेळा बनतु, बाकी अपत्तीआनी
आडे न ऊतरे एवी आम या रहेती आजे तो आ न चाले ने ! तो पछी
होटेलमाथी भाणा मगावो ! पश्चिममां एम चाले छे, आजे तो सामान्य
माणसने पण नोकर जोईने न वातवातमां डॉक्टर जोइए भाड घर होय
तो फेमीली डॉक्टर जोईए, पण कोईए फेमीली धर्मगुरु राख्या छे ! गृहु
भले वधु भणेली न होय पण सस्कार जोईने बधा । घर नोकर चाकर-
वाळा घर मळनाना नथी दीकरीने कन्यादान, सधवानु अने विधवानु
जीवता आवडे एवु शीखवानु छे कोईनी खोटी गुलामीमा ए थाय मा।

स्त्री–पुरुषना शरीर अने लागणीमा फेर छे ए समजवु जोईअे स्त्री शक्ति छे बाकी समज्या विना शास्त्रे स्त्रीने अधम कही छे अेवी वातो नकाम छे शास्त्रोअे स्त्रीने ऊडी बुद्धिथी जोई छे अने ऊचा मानथी नीरखी छे

अेवी सासु छे खरी ? —

कौशल्याअे सीताने कह्यु राम पुरुषसिंह छे, अेने वनवासनु दुःख नथी, पण तु देवा छे, सुकोमळ छे, जन्मथी सुखमां उछरी छे वनमां पगे चालवानी पीडा वेठाशे ? वहुनी चिंता करनारी सासु तमे भाळी छे ? अने न होय तो घर छोडवु ए तमारो निर्णय खरो ! सीताजी तो पति पाछळ जवा रजा लेवा आवी हती, पण कौशल्या जगलना कष्टना विचारे रजा आपती न्होती पत्नी सुखी पिताने त्याथी आवी होय ते अेज रीते पतिना घरे जीववा मागे तो ते स्त्री क्हेवाय के डाकण ! सीताने पिताना घरनो सुखनो विचार आव्यो होत तो सीता माटे शु लखात ? सीताअे तो कौशल्याने कह्यु के आपना तरफनी भक्ति वनना सकटोमा पण कल्याण करशे सीता वनमा जवा नीकळ्या पण कोइनेय कैकेयी माटे दुर्विचार आव्यो न हतो सीताने नीरखी रहेली अयोध्यानी नारीओने लाग्यु के सीताअे पतिभक्तिनु अनोखु उदाहरण आप्यु छे सीताअे पोताना उत्तम आचार अने शीलथी उत्तम कुळने उद्धर्यो छे

आजे तो भाई अेटले भागीदार —

राम–सीता वनमा जवाना समाचार लक्ष्मणने मळ्या अने तेमणे क्रोध अनुभव्यो ए माता–पिता बधु अने बधुपत्नीना भक्त हता तमारा घसारमा जामज छे ने ? पण आजे तो भाई अेटले भागीदार, अेमज लागने ? लक्ष्मणने क्रोध आव्यो, अेने लाग्यु पुरुष स्वभावे सारो होय छे, स्त्री स्वभावे वाकी होय छे, केम के कैकेयीने साचवी राखेलु वचन आवे वखते माग्यु छु भरते राज लीधु के नहि अेनी तेमने खबर होती अेमने भरत

आघम लाग्यो तेमने थयु के हु रामनो अभिषेक करुं, पण आसरे तो ए दशरथनो पुत्र हतो विचारी प्रमादी दई राम जोडे जवा निर्णय कर्यो लक्ष्मण दशरथनी अनुमति लई सुमित्रा पासे आव्या, तेमने कह्यु, " राम मर्यादा पुरुषोत्तम छे, तेमने छोडी हु रही नहि शकु " लक्ष्मणना वचनथी सुमित्राने आघात लाग्यो पण अतरमां आनद थयो तेणे हैयु मजबूत बनावी कह्यु खरेखर, तु मारो दिकरो छे, आ स्त्रीए स्वार्थ दाख्यो तेवो स्वार्थ पुरुषने दाखवता आवडशे खरो ? आवडे तो जगतने मोटो आदर्श पूरो पडी जाय, सुमित्राए कह्यु राम हमणा आवीने गया, झट तैयार था, क्याक अतर न पडे।

एवी मा मळवी मुश्केल छे —

बीजा रामायणोमां पण कह्यु छे के सुमित्राए लक्ष्मणने कह्यु हतु के रामने दशरथ मानजे, सीताने मारा जेवी मा मानजे अने वनने अयोध्या मानजे। दु खमा सुख मानवानी स्थिति त्यारे आवे ज्यारे आवी मा होय आवी मा मळवी मुश्केल छे

स्त्री धीर बने छे त्यारे —

लक्ष्मण कौशल्या पासे गया कौशल्याने लाग्यु के लक्ष्मण छे एटले जाणे मारो राम अहीं छे, पण लक्ष्मणे कह्यु ' हु रामनी पाछळ जाउ छु ' पण कौशल्याए कह्यु " रामनी गेरहाजरीमा तने जोई रामना विरहनु दु ख भूलीश एटले तु अहीं रही जा " लक्ष्मणे कह्यु, तु रामनी मा' छे, ताराथी आवी अधीराई न लवाय आपने त्या स्त्रीने क्षुद्र वर्णवी छे, पण ज्यारे ए धीर बने छे त्यारे ए मानवीने बचावी जाय छे

आ पछी राम, सीता, लक्ष्मण वनमा चाल्या पाछळ आखी अयोध्या उलटी हती बधाने लागतु हतु, अयोध्यानु सर्वस्व चाल्यु, कैकेयीना दिलमा तुफान मच्यु अने हैयामा परिवर्तन थवा माड्यु अयोध्या निर्जन बनी

हती रामे समजावी सहुने पाछा वाळ्या, भरतनो निर्णय अचल हतो, एटले मंत्रीओ रामने लेवा गया, पण रामे कह्यु वचन अेकज होय, मंत्रीओ पाछा आव्या आ पछी भरत अने कैकेयी रामने लेवा गया राम, सीता, लक्ष्मण नदी वटावी झाड नीचे बेठा हता भरत अने कैकेयी त्यां आव्या, राम, सीता, लक्ष्मण सर्वे कैकेयीना पगमां पड्या आपणे आवा राम, आवी सीता, आवा लक्ष्मण पेदा करवा छे ने ?

-[व्याख्यान १०]-

अध्यात्मवादमा तमाम वादोनु पृथक्करण समायेलु छे

साम्यवाद आवे त्यारे रडजो !
उत्तम जीवन अे आर्य देशनो शणगार छे

—०००✿०००—

(प्रेमाभाई हॉल, अमदावाद ता २१-१०-५१)

आ आर्यदेशना मानवो के जे आर्यसंस्कृति थी संस्कारिक थयेला होय छे तेओने मन मनुष्य जन्म ए अेवो अेकज जन्म छे के जे द्वारा ते आत्मानी संपूर्ण उन्नति साधी शके छे, जे जन्मद्वारा ए उन्नति साधी शकाय ते जन्मां जेओ योगना पहेली भूमिका उपर आरोहण नथी थई शकता, तेमणे कई भूमिका उपर रहीने जीवबु जोईअे तेना बोधपाठ मळे ते हेतुथी आर्यदेशमा थई गयेला योगी नहि पण अनासक्त योगने पामी अनी दशामा उन्नतिभर्यु जीवन जीवी बतावनाराओना प्रसंगमांथी

आ प्रसग सर्जायो छ भौतिक वस्तुओ माटेनी मारामारी अने तेनो उपयोग करवानु ध्येय ए आर्यदेशने माटे अक मोटामा मोटु कलक छे जे कइ आ दुनियामा छोडीने जवानु छे तेनी पाछळ जिदगी पूरी करवी ए आ देशने कलकित करनाह छे

पात्रो साथे जीवनने सरखावो—

आ बधी वातो हैयामा न बेसे तो नकामु छे रामायणना पात्रोनी वातो एमाटे कहेली छे के जेना दृष्टातोमाथी कहेली वातो हैया सुधी पहोंचे, अने ताज ससारमा ए पात्रो साथे आपणा जीवनने सरखावता चाली उन्नत जीवन आवी शकाय, नहि तो ससारमा भौतिक वस्तुओ तरफ ललचाव नारा अनेक साधनो छे तेमा फसावानु अज्ञानी माटे तो बने कारण के प्रज्ञान माटे आर्य देश ढाल अने बळ नथी परतु केवळ परमपदनी साधना रि जेओ इच्छे छे के मरी जता पहेला केम जीववु जोईअे तेओ नावी भौतिक वस्तुओमा फसाय ए शोचनीय छे आज मरी जता पहेला टु भोगववु अने मेळववु ऐवा विचार होय छे अने ते अेटली हद वीनी भावना होय छे के वारसामा पण अेटलु मूकता जवानी इच्छा होय ; वारसदार पण तेमाथी छूटो थाय नहि, अने तेमा ज मरे आवी भौतिक स्तुओ पाछळ दोडनाराओने मृत्युनी तो याद ज होती नथी नथी ओ ता कलकित बने छे अेटलुज नहि पण आखो देश धवाओनो कल-क्ति थाय छे अने स्वार्थ माटे जे काई करे छे तेनाथी तो शाखा मागणोने गारी आवे

पातनी श्रवण करतां तन्मयता आवे छ

रामायणना पात्रो विषे जे कहेवाय छे तेनु याद तमु अहियो तन्मय घर सुधी लई जाओ छो ! अने ए पात्रोनी स्थानमां तमारा पात्रो करी जुओ छो ! कारण के जे श्रवण कर तेनु चित्र करव

चिंतनमाथी मनन अने पछी तन्मयता आववी जोइअे आ देशना मानवोअे प्रथम तो धार्मिक माणसोना श्रवण गुमाया छे आजे त्यागीओने प्रवचनो सभळाववानो शास्त्र थाय छे, अने अनंत ज्ञानीओनी आज्ञा प्रमाणे अने योग्य श्राता होय तो श्रवण करावीअे छीअे, परंतु पोताने श्रवण करवु अेवो धर्म लागे तो न? ध्यान शिवाय सांभळे अने चिंतन न थाय तो तन्मयता न आवे, ते श्रवण जिवनमा न उतारे तो कयाता गुणो शु तेनु भान न थाय, अने जीवन सुधारवानो उत्साह न जागे

त्यागनी वृत्तिथी सर्जन

वनमा जता राम, लक्ष्मण अने सीताने वळावी सौ पाछा फरे छे, कारण के तेमने पिता पुत्र जेवो संबंध हतो राजदु खे प्रजा दु खी हती, तेओ वनमा जाय छे प्रजा तेमनो सत्कार करे छे तमारे तो हेतु साकडु अने पृथ्वी पण साकडी शास्त्रोमा भूतथी लखाई गयु छे के "वसुधैव कुटुंबकम्" हेतु विशाळ थतु नथी दिव्य ज्ञाननी वातो जीवनमा उतारनारा थोडा होय छे आ बधी वातो हैयामा वसे तेवा प्रयत्नो करशो तो दृष्टि विशाळ बनशे पिताना वचनने खातर राम वनमा गया, गादीनो हक्क न माग्यो आवो हक्क माग्यो होत तो आ काळनो इतिहास लखात, जेमा सौ हक्कनो धापल चलावी रह्या छे झूपडीमा बेठेला पण जाग्या छे, अने सौ हक्कनी वातो करे छे पण कोण कोना हक्क चूकवे ? आमा तो बळ, बुद्धि अने लागवगनु नाटक चाल्यु छे, अने जे परदेशमा चूटणीओनी वातो थती हती ते तमारे अही आवी छे अेक त्यागनी वृत्ति माटे सजायेलो देश आ प्रश्नोथे भादरे छे आथी जो के तमने तो आनंद ज थतो हशे अमारी वातो तो तमने नहि गमती होय, कारण के अम तो व्यवहार गयेला अेटले वदाम्या न चाल्यु अेम तमे मानी बेठेला छो आ मोटी दिवाल तूटे अने अमने अेम लागे के आ अमारो मार्ग छे, तो मार्ग निकळे

जीवता तो शु मरतां पण—

आजे तो जे भौतिक वस्तुओ पाछळ जगत् दोडी रह्यु छे तेने घणा जीवतां ता नथी छोडता पण मरतां पण तेमने छोडवानुं नथी गमतु ओ तो मरता मरीने छोडे छे जेओ भौतिक वस्तुओ छोडनारा छे तेओ आनंदथी मरे छे, अने कुटुंबने हिंमत आपवा साथे वारसोने चेतवणी पण आपता जाय छे के, तेओ तेमा न फसाय

राम तो भरतने गादी सोंपी चाली नीकळ्या हता, तेमने तो संतोष हतो, सारी वस्तु सारा माणसने सोंपाय ओटले सारी चालशे आपणे अहीं तो सारा माणस ज मळता नथी सारो मानीने राज्य चलावे ते सारो के खाव मानीने राज्य पचावी पाडे ते सारो ?

विवेकीओ जोखमदारी न छोडे

रामने पाछा लेवा जाय छे त्या वनमा [illegible] नीचे बेठेला दखाय छे तेओ अयोध्याने याद करी गाढा म्होता [illegible] खेद नहोता अनुभवता कैकेयी वत्स, वत्स ! [illegible] छे राम तेमने पगे पडे छे आ केवो माथ ! [illegible] तो शु पण मरता पण कहेता जाओ के [illegible] अणबनाव छे तो तने घेर न जता ! आ [illegible] छे अने भरत मूर्छित थाय छे त्या [illegible] श्रीक्षणाथी राम मूछा वाळे छे, भरत [illegible] मारी शु अभक्ति थई के [illegible] आव्या आ सांभळीन [illegible] क्ति करो ओम लागे छे

भरते गादीनी [illegible]
वात राम पाछे मूठी [illegible]

स्थिति जाणतु नथी जेटले रामने विनती करी के तमे गादी ल्यो ! जगन्मित्र लक्ष्मण महा अमात्य बने, हु प्रतिहारी बनीश अने शत्रुघ्न छत्र ढाळशे, आम चारे भाईओ शोभीशु

अमने कलंकित न करो—

लक्ष्मणने जगन्मित्र कह्या, कारण के अेमणे जगत् पासेथी कइ लेवानु न हतु ब्रह्मचारी हता तेमने तो जगत्ने सेवा आपवानी हती कैकेयी रामने भरतनी मागणी स्वीकारवा विनवे छे, अने बधो दोषनो टोपलो पोते माथे ले छे, केटलाक दोषो पुरुषो अने स्त्रीओना जातिस्वभावथी होय छ ते परे तेम नथी आ दोषो साथे अमुक उत्तमता पण हाय छे कैकेयी कहे छे के स्त्री जातिमा कुटिलता शिवायना बधा दोषो मारमा आवेला छे आ अनर्थ माराथी थयो छ

स्त्रीअे पुरुष पर साम्राज्य जमाव्यु छे !

स्त्री ज्यारे निर्दय बने छे त्यारे तेनी सामे पुरुष अेटलो निर्दय नहि बनी शके, अेटलुज नहि पण स्त्री–पुरुषने निर्दयतामा आटी जाय कैकेयीथी आटलो अनर्थ थयो त्या सुधी स्वार्थना मोहमा निर्दय रही, आम छता वातवातमा रडी जई ओछु लावनार स्त्री छे आ अेनामा कळा छे ए कळाथी पुरुष उपर अेणे साम्राज्य जमाव्यु छे, तेनी बधु सेवा करवी अेवी पुरुष उपर छाप पाडेली छे अेटले ते बधाने अवगणी शकश, पण स्त्रीने नहि स्त्रीने मर्यादा जेवी मर्यादा नहि जडे अने स्त्री मर्यादा छाडे तो ते जोई पुरुषने शरमातु पडे

सीता जेवी सतिओथी सारी कहेवाई —

कैकेयी अने भरतनी वातो रामने गमती नथी राम कहे आज सुधी तो पिताअे अमने वचन आपेलु जेटले ते वचन पितानु हतु, हवे मारा वनवासनु वचन ते रामनु वचन बने छे, अने ते माराथी ज केम उत्थापाय !

वचन आपनार बंनेय जीवता होय ता वचननो भग न थाय, आ यत्नते सीता भरतने अभिषेक करावानो हतो अेटले पाणी लेवा गया हता तेमने तो राज्ना अवस्था माटे श्रद्धा हती, जेष्ठत्व नहि पण गौरव हतु. ते जाणता हता के, जे पिता नथी करी शक्यो त भरतना मोटा भाई राम भरतने राज्याभिषेक करावशे तमारी माफक सीता राजगादीना स्वार्थी नहोता बाकी स्त्रीओना समवाळ्यायी पुरुषोअे जगतमां घणु घणु उल्कापात मचाव्या छे तेमांथी इतिहास अलिप्त नथी स्त्रीओ सारी कहेवाइ ते आवी सीता जेवी हता तेथी, अने पुरुषो राजा कहेवाया होय तो ते आवा राम जेवा महा पुरुषोने लीधे, तमारी जातने रहेने नहि

आशा फळी पण भारे जुलमथी—

कैकेयीने प्रतीति हती के राम ते राम ज छे राम पाछु पाछे [illegible] वचन माटे अल्प्य तेम भरत मारा वचन माटे अल्प्य छे [illegible] मारा वचनोने उत्थापी शकशे नहि आम भरत रामने वा आव्या हता, [illegible] तेमने तो राज रहेने पाछा जवानु थयु भरत ऊचु नथी [illegible] बोलतो न ही भरतना राज्याभिषेक करावता कैकेयीने पोतानु [illegible] लागु पण साथे साथे अेम पण थयु के भारे अनर्थ थयो [illegible] वानु हतु तेवा तेने आनद नहातो राजा दशरथने अभिषेकनी [illegible] तेमने तो कइज हर्षशोक न थयो, कारण तेओ तो [illegible] भरते सारी रीते लावा वखत राज्य चलाव्यु के जे [illegible] हतो दशरथना त्याग समयनो उत्सव ऊजव्यो [illegible] पाम्यो हता घर न टूटे तोय घर न अेवे, अेटले के [illegible] अलिप्त रहेवानी सस्कृति रामायणमा ठाठी [illegible]

ऊचनीचना मतभेद अगे आचार्यश्रीअे [illegible] जणाव्यु हतु के श्रेणिक राजा पासे नेपाळी [illegible] राजाने खरीदवानु कहेता तेनी किंमत पूछी [illegible]

राजा करकसरीओ हता प्रजानी पीडा हैये हती तेणे कह्यु प्रत्रा लाख पाछळ खर्चुं तो तेनु भलु करी शकाय वेपारीओ निराश थया के ओ आ न खरीदी शके तेनी प्रजा शु खरीदे! उदास थयेला वेपारीओ दया ते वखतना धनपति शालिभद्रनी 'मा' ने आवी अने वने वेपारीओ बोलावी किंमत पूछी, तो १६ रत्नकंबलना २० लाख रुपिया कह्या मोभानी दृष्टिओ आपी कंबल खरीदी रत्नकंबल सोळ हती शालिभ बत्रीश राणीओ हती, अने तेने फाडी बन्ने टुकडा करी वहेंची अ लाग्यु के आ टुकडा शरीर लूछवाना काममा लई फेंका देजो वेपारी आश्चर्य पाम्या, के खरो वट राख्यो

राजाने मोभानी खातर खरीदवा वात करी शालिभद्रनी माओ खरीद्या ज विना बनी ते जणावता सवा लाख रुपिया लई आवेलो कासद पाछो गयो अने वात कही तो राजाने आश्चर्य थयु हु तो तमारी पासे प्रतिज्ञा लेवा मागु छु, के आजथी तमारी पासे अध्यात्मवाद सिवाय कोई बीज वादनी वात करे तो साभळशो नहि साम्यवादमा बुद्धि प्रमाणे स्थान अने बधाने रोटीनो आदर्श छे ओम व्याख्या कहवाय, पण हु कहु छु के अध्या त्मवादमा शु नथी! महा पुरुषोओ तेमा घणु कह्यु छ जेने नेटलु पचे तेटलु खाय तेमा बीजाने शु वाधो! कोईने वधु मळे–मेळवे ते सामे आपणने वाधो केम होई शके!

अध्यात्मवादमा बधा वादोनु पृथक्करण छे—

अगाउना समयमा राजा–प्रजानी स्थिति हती ते जाणवी होय तो आपणे समजी लीधा सिवाय छूटको नथी आध्यात्मवादमा शु नथी! सघळा वादोनु ज्ञान आपी, पृथक्करण करी स्थिति प्रमाणे वधतु ओछु मेळवी जीवन बगडे नहि अने ध्येय उपर पहोंचवानी स्थिति पेदा करवाना ध्येयनो तेमा निर्देश करेलो छे हवे राजने बदले युद्धनो प्रसंग केवी रीते थाय छे अने रावणनु पात्र कयु छे ओ हवे पछी कहेवानु जणावी प्रवचन पूरु कर्युं हतु

-[व्याख्यान ११]-

मानवी संसारमा उच्च जीवन जीवे तो आ मानवलोक देवलोकनी इच्छा न रहे अेवो बने.

वाणीओ वात वातमा चप्पा उडावे ए रुमनशाहीनी वात छ.



(प्रेमाभाई हॉल, अमदावाद ता. २८।१०।११)

जन्मनी सार्थकता—

अनंत उपकारी महापुरुषोओे मानव जन्म जेने मळे ए महाभाग्यशाळी केल्या छे अने ए महाभाग्यनी सफळता, आ जन्ममां जेने पामवा सिवा बीजुं कोई साध्य नथी, जेनु जेना अवसरमां बन्या त्यारे ज थाय, पछी आ आर्य देशमां पण अनेक साध्यविहोणा अनेक आत्माओ अनंत वार जन्म्या अने मटक्या आ आर्य देशमां क्रमशु साधक तो ज थाय जो साध्यना निश्चय कराय, अने मात्र साध्यनो ज विचार करे नहीं चाले, पण परमपदने योजी आपे अेवा योगने साधे तो ज परमपदनी नजीक जई शकाय, आथी ज पहेली, बीजी अने त्रीजी भूमिकामां विवेकपूर्वकना त्याग, सर्वदेशनो त्याग अने विवेकनी प्राप्ति वगेरे मेळववानु कह्यु छे आवी भूमिकानी लायक त पामवा माटेनी चोथी भूमिका कही छे आ भूमिकाने पामेला जो त्या अद्वेषी बने अने विवेक पछी त्याग, ए पछी सर्वत्याग, अने ते बाद त मानवी परमपदनी नजीक पहोंची शके

आ बीजी त्रीजी भूमिकावाळा संसारमां रहेवाना अेमना जीवनमा रना अनेक प्रसंग आववाना अने संसारमां रही योगनी ..

पहेली भूमिकाने नजर समक्ष राखी सावधानतापूर्वक जीवे तेज परमपदनी नजीक पहोंची शके आ सावचेती केवी होय तेनी आ रामायणना पात्रो द्वारा चर्चा करी छे हवे आपणे रावणने जोवानो छे वीतराग शासने रावणने कइ रीते ओळखाव्यो छे ते वात करीअे दशरथ राजा अने तेमनु कुटुंब गृहस्थी हतु तेओ बधा त्यागी नहोता, भोगी हता छता बधा योगनी भूमिका पर जीवनारा हता पहेली भूमिका जेमनो आदर्श छे तेओ कदाच मोहना झपाटामा आवे पण तेमना अतरनो दीवो तो सळगतो ज होय छे ते अवसरे प्रकाश आपे छे रामायणना पात्रोमा पिता–पुत्र, माता–पुत्र, भाई–भाई, शोक विगेरेनु जीवन जोयु आ जो याद राखीअे तो आ ससार जे सग्राम छे तेमा जराय नीचा पड्या विना ऊचु जीवन जीववु अे सहेलु नथी भूलवनारो मोह नानोसूनो नथी योगनी भूमिका पर बेठेलाने पण आ मोह भूलावे तो योगनु स्वप्नु पण अेने न आव्यु होय तेनी शी हालत थाय, ए समजी शकाय अेवु छे आ बधा पात्रोनो ससार आपणे साभळ्योने ? अवसर आवे तो तमारो ससार पण आमज चाले ने ? कैकेयी माफक कोई स्त्री विप्लव ऊभो करे तो, शु थाय ? आ तो दशरथनु कुटुंब हतु अेटले खुनामरकी न थई, पण ए बधा मोहने आधीन होत तो ? भरत गादीपति थात ? अने दशरथ वचन पालन करी शकत ? ए बधा भोगमा खरा, ऋद्धिसिद्धिमा खरा, पण ए ऋद्धि–सिद्धि के भोग तेमने खाइ न जाय त्यारे आ जगतनी चीजो तमे खाओ छो के ते तमने खाई जाय छे ? भोग तमने भोगवे छे के तमे भोगने भोगवो छो ? शास्त्रे तेने भोगपुरुष कह्यो छे ते विवेकी पुरुषनु जीवन भोग छता मजानु होय छे अने अेमनु अंतिम जीवन पण सुदर होय छे

एवा प्रसगे धीरज राखवी घटे—

आपणे कैकेयीने सुधरेली जोई अेना जेवो पल्टो कोइ स्त्रीमा भाग्ये ज जोवा मळे भरतने जेणे राज लेवा कह्यु ए हती मोहनी वाणी, पण

अतरनी वात तो बीजी हती भरत राजगादी लेवानु स्वीकारतो नहोतो, ए वात व्याजबी छे एम ए अतरथी मानती हती, तमारा जीवनमा आवो कोई प्रसग आवे अने कोइ तमारी आज्ञा न माने तो धीरज राखो खरा के ?

महापुरुषो जगलमा मगल करे छे—

राम जगलमा गयॉ महापुरुषो जगलमा जाय तोय मगल होय छे. अने कहेवत पण छे के, राम त्या अयोध्या राम ऐवा पुरुष हता के जेमनी सेवा करवानु देवोनेय मन थाय राम-लक्ष्मण पासे अतुल शरीरशक्ति पण हती आ शरीरबळनो ख्याल आजना विज्ञानना जमानामा तमारा मगजमा घुसाडवो मुश्केल छे आर्य देशोमा जे महापुरुषो थया तेमणे जे वस्तुस्थिति हती ते जगत् समक्ष मूकवा प्रयास कर्यो छे पण खोटा मोहमा के भ्राति जगाववानो प्रयास कर्यो नथी राम, लक्ष्मण, सीता विगेरे पात्रोनु वर्णन ससारमा बेठेला जीवोनु वर्णन छे मरवानु क्यारे छे ए जाणता नथी, जेटले आवा पात्रोनी जीवन शामळीने ए मुजब जीववानु शरू कर्यु छे ? तमे तो जेटलु छे जेटलु भोगव्या विना मराय नहि ऐम चिंतामा जीवो छो ने ? आ पात्रोनी हकीकत साभळवानो हेतु ए के तेओ पहेली भूमिका पर जइ शक्या नथी तेओ ससारमा रहीने पण सुदर जीवन जीवे तो आ मानवलोक देवलोकनी इच्छा न रहे जेवो बनी जाय

शब्देशुद्द न छाय—

आचार्यश्रीजे अत्रे जणाव्यु हतु के आ तो कळिकाळ छे लोको सारा न बनी जाय अेनी घणाने चिंता रहेवानी छ आपणे जे रीते चालता होईअे ते रीते चालिअे आ तो महापुरुषोनी वात छ सभव छ के जेमनी वातो अमलमा न पण मूका शकाअे, पण तेया कइ महापुरुषोना शामळवा अने न विचारवा अेम कहेवु ठीक नथी अमारु व कला-

-कनु प्रवचन छापामां शब्देशब्द नज आवे अधुरुं रहे, पण अमे तो निश्चय कर्यो छे के आपणे तो आगळ वधवु ज गाळो खावी अने आगळ वधवु शब्दोमां आघापाछी थता कोई अनर्थनो सभव थाय, पण वाचनारे तेनी वाचेली राखी लेवी घटे.

तो ससार केवो चाले ?

भरत राज्य चलावता हता, राम वनमां हता, भरत मानता के राम जेवा भाईनो हु भाई छु, अपर माताओ पण अद्भुत हती पोताना दीक रानो हक गया छता जेनी तेमने असर नहोती, आवी असरवाळा बधा बने तो ससार केवो चाले ? वेपार केरो चाले ? वेपार के घराक ठगाय नहि ओरमान मानी आखे ओरमान छोकराना गुण चढे क्यारा ? पण आ भरतनी ओरमान माताने भरत रामथीय सवायो हतो

रावण क्या हतो ?

राम-लक्ष्मण अने सीता दडकारण्यमां आव्या हवे आवे छे रावण रावण जेटले सारी स्त्री जुओ अटले हाथ मारवो प खराब माणस नहोतो रावण राक्षस नहि, पण राक्षसद्वीपमा ज मेलो अटले राक्षस कहेवातो हनु-मान् आदि वानरद्वीपमा ज मला वानर कहेवाता तेम

शस्त्रोना प्रतिकारनी शक्ति हती—

अगाऊ जे शस्त्रो हता तेना प्रतिकारना अने ते शस्त्रो पाछा वाळवाना उपायो पण हता आजना शस्त्रोमा प्रतिकारनी के पाछा वाळवानी शक्ति नथी आजना शस्त्रो मारकणा छे अने वाहनोय मारकणा छे रावण त्रण खडनो मालिक हतो बधा पर अेनी आण वर्तती, अने पोतानु मोत रामना हाथे थशे अेवी खबर हती जनक राजा अने दशरथ राजाना नाश माटे अेणे प्रयत्नो पण करेला, पण ते निष्फळ नीवडला रावणनी प्रतिज्ञा हती के परस्त्री जे

तेने इच्छे नहि, तेनु माणाते सेवन न करवु, रावण सामान्य माणस नहोतो ए पण वीतरागनो उपासक हतो अने सद्गुरुनो सेवक हतो

दडकारण्यमा रावणनी व्हेननो पुत्र सूर्यहास खड्गनी साधना करतो हतो आ साधना बार वर्ष सुधी करवानी कठण हती आ सिद्धिने आडे वण दिवस बाकी हता, त्या राम, सीता, लक्ष्मण दडकारण्यमा पहोंच्या लक्ष्मणजी पेली उपासकनी गुफामा गया, खड्ग ऊतर्यु अने लक्ष्मणे ते हाथमा लीधु ए वासनी जाळ उपर फेरवता पेला साधकनु डोकु कपाई गयु लक्ष्मणने ए माटे आघात थयो राम पासे जई खड्ग बतावी विगत कही रामे कह्यु आ सूर्यहास खड्ग छे, अने कोई साधकनो वध थयो छे लक्ष्मणे अपराध कबूल कर्यो हतो, अेटले रामने गुस्सो न आव्यो कोइ नानो माणस अप राध करे-भूल करे तो तमने क्रोध आवे खरो ? अने भूल करनारा अेनो अेकरार पण करे खरो के ? आजे तो नाना बाळक पासे भूल कबूल करावती मुश्केल पडे छे आज ससारमाना अमारी पासे आवे छे, अने आवी फरियादवाळा पण अमारी पासे आवे, अमारे तेमने समाळवा पडे अने कोइ सारी वात नालायक आत्माने जचे पण नहि हवे पेला साधकनु माथु कपायेलु जेनी माताने जाणु, अेने शोक थयो पडेला पगलेपगले अे राम बेठा हता त्या आवी ए शोक भूला गइ अने अेने काम जाग्यो कन्यानु रूप लई ए राम पासे आवी, बनावटी वात करी पोते राजपुत्री छे अम जणावी पोताने पत्नी तरीके स्वीकारवा रामने कह्यु राम आ बनावट समजी गया जेमन कह्यु क मारे तो स्त्री साथे छे, लक्ष्मणने नथी, ता त्या जाव ! लक्ष्मणे कह्यु के, तें एकवार रामने चिंत्या अेटल हु ता खरो सेवक छु, भोजाइ साथे माराथी एम केम कराय ? आम एनु अपमान थता ए गई पोताना पति पासे पुत्रना मृत्युनी वात करी जेथी अेनो पति मोटु लश्कर लई राम साथे लडवा गया लक्ष्मण अेकला आ लश्कर साथे लडवा गया रामने लक्ष्मणनी

शकिमा विश्वास हतो लक्ष्मणमा अजेय बळ हतु तमारी पासे आटलु बळ होय तो ! जे नथी छताय आजे वाणिआ वातवातमां चप्पा उडावे छे ए केवी शरमनजनी छे ! आजे मानवी वनस्पती करता वधु कमाय छे, छतां आतरडी ककळती नथी वाणिओ वाणिआनु खून करे, वातवातमां गुस्सो करे ए निर्बळतानी निशानी नहि तो बीजु शु ?

सीताहरण–

पेडी स्त्री पछी तो रावण पासे गई अने रावण आगळ सीताना रूपनु वर्णन करी तेन लावा उश्केर्यो रावण सीता हरण माटे आव्यो, पण रामन जोई डर लाग्यो, रामने सीता पासेथी दूर करवा युक्ति करी लक्ष्मणना अवाज जेवो सिंहनाद कर्यो लक्ष्मण विपत्तिमा छे मानी, राम लक्ष्मणनी व्हारे गया अने रावणे सीतानु हरण कर्यु

लक्ष्मणे रामने जोता ज आयाने अकली मूकी केम आव्या ? जेम पूछतां रामे तनो सिंहनाद साभळ्यानु जणा यु, पण लक्ष्मणे सिंहनाद कर्यो नथी जेम जणावता आ कपट थयु छ अेम लाग्यु राम पाछा आव्या तो सीता न हता राम मूर्छित थई गया, मूर्छामाथी जागता जोयु तो अेक पक्षी पाख कपायेलु पड्यु हतु तेणे सीताहरण वेळा रावण पर हुमलो कर्यो हतो, अने रावणे तेनी पाखो कापी नाखी हता पशुपक्षीने तालीम मळे तो ते मानवी करता वधु वफादार रहे छे, पण आपणे तो माणस माणस मटी जई पशुओने पण खराब करी नाख्या छे आ पछी राम–लक्ष्मण, सीतानी शोधमा नीकळ्या रावण सीताने लई जतो हतो त्यारे रावणे सीताने पूछयु के हरने स्थाने विषाद केम ? पन सीताने हाथ न लगाडाय एवा तेनो नियम हतो, ए प्रतिज्ञाबद्ध हतो, जेने सीताने भूमि पर रखडता मानवीनी पत्नी मटी पण लकना राजवीनी पटराणी बनवा कह्यु पण सीता तो ऊची आंख नहोता करता, ते तो पर पुरुषने ऊची आखे जोवामां पाप मानता, पण आ बधी आर्य स्त्रीनी वातो तमने गाडी लागे ने ! रावण

मोहन आधीन हतो, पण नियमभंग करतो नहोतो सीताने उद्यानमां मूकी रावण गयो पण ज्यां राम-लक्ष्मणना समाचार न मळे त्यां सुधी अन्न-पाणी न लेवानी सीतानी प्रतिज्ञा हती रावणनी नगरीमां अनेक भोग सामग्री छतां सीता तो निर्भय रह्यां हतां राम-लक्ष्मणने पाताळलंकाना वानरोना तेमज बीजा वानरोनो साथ मळ्यो हतो, रामे तेओने पाताळ-लंकानु राज्य आप्यु महा पुरुषोनां हाथमां त्रण लोकनु राज्य होय छे अगाउ राजाओनी सेना शोभा माटे रहेती अने भुजबळ एज राज्यबळ गणातु आजे सैन्यबळ ए राज्यबळ गणाय छे

वानरोनी मदद—

अनेक वानरो रामनी मदते आव्या सीता शोधी काढवानु सुग्रीवे पोते माथे लीधु, अने हनुमानने आ शोधनु काम सोंप्यु हनुमान् अपार बळिया हता जन्म्या के तरत विमाननी घुघरी लेवा आकाशमां ऊड्या हता, अने त्यांथी एक शिला पर पडतां शिलाना टुकडा थया हता, पण हनुमानजीने कांई असर थई नहोती रामे पोतानी मुद्रिका हनुमानने आपी अने सीताजी पासेथी मुगट लाववा पण कह्यु हनुमानजी ऊपड्या सीता शोध माटे रस्तामां पोतानी मातानु गाम आव्यु पोतानु पराक्रम मोसाळ-पक्षने पण बताव्यु, अने पोतानी ओळख आपी ते सौने रामनी मदते जवा जणाव्यु

